भगवद्
गीता
में
ईश्वर
के
आदेश

भगवद्गीता
में
ईश्वर के आदेश

लेखक : ॲड. निलेष चंद्रभुषण ओझा
B.E (Electronics & Telecommunication),LL.B
(Author of "How to prosecute the judges.")

क्यू. एस. खान
B.E (Mech)

Printed by
Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
2158-59, M.P Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phone-011-23289786, 23280786, Fax- 011-23279998
E-mail- farid@ndf.vsnl.net.in
Website:- faridexport.com. / faridbook.com

No Copyright

इस पुस्तक की कॉपी-राइट क्यू. एस. खान के पास है। आप इस पुस्तक में कुछ कमी या ज्यादती न करें तो इसकी इजाज़त है कि इस पुस्तक को कोई भी बगैर इजाज़त छाप सकता है।

अगर आप इस किताब में कोई ग़लती पाते हैं तो कृपया हमें सूचित करें ताकि हम उसे अगले संस्करण में दुरूस्त कर सकें ।

भगवद्गीता में ईश्वर के आदेश

ISBN No-978-93-80778-30-3

First Edition : May 2015

Price: **₹ 50/-**

Tanveer Publication
Hydro Electric Machinery Premises
A-13, Ram Rahim Udyog Nagar, Bus stop lane,
L.B.S. Marg, Sonapur, Bhandup (West)
Mumbai- 400078
Phone - 022-25965930 Cell- 9320064026
E-mail- hydelect@vsnl.com, khanqs1961@gmail.com
Website- **www.freeeducation.co.in**

मन की बात

● किसी शब्द का अर्थ अगर हम किसी शब्दकोश (Dictionary) में देखें तो उस एक शब्द के दर्जनों अर्थ मिलेंगे।

लेखक उन दर्जनों अर्थों में से केवल उस अर्थ को चुनता है जो उसकी अपनी सोच श्रद्धा और कल्पना के अनुसार होती है।

इसीलिए भगवद्गीता, पवित्र क़ुरआन, बाईबल इत्यादि यह अपनी मूल भाषा में तो एक है। मगर इनकी जो व्याख्या हुई है उस में बहुत अंतर है। इस का कारण व्याख्या करने वाले की अपनी विचारधारा है, जो दूसरों से कुछ अलग होती है।

● हिन्दू धर्म के अधिक तर विद्वानों की ऐसी आस्था, श्रद्धा, या विश्वास है कि श्री कृष्ण जी ही निराकार ईश्वर हैं। और मनुष्य को अपने पापों का दण्ड बार बार इसी धरती पर जन्म लेकर भोगना होगा। इसलिए ऐसे विद्वान जब भगवद्गीता की व्याख्या करते हैं तो अपने श्रद्धा के अनुसार ही श्लोकों का अर्थ लिखते हैं।

● पवित्र कुरआन की एक आयत इस प्रकार है।

''ईश्वर ने (ऐ मुहम्मद) तुम्हारे लिए धर्म की वही पद्धति नियुक्त की है जिसका आदेश उसने नूह (मनु) को दिया था, और जिसे (ऐ मुहम्मद) अब तुम्हारी ओर हमने प्रकाशना (Revelation) के द्वारा भेजी है, और जिसका आदेश हम इब्राहीम (अबीराम) और मूसा और ईसा को दे चुके हैं, इस ताकीद (Instruction) के साथ कि क़ायम करो इस दीन (धर्म) को और इसमें अलग-अलग न हो जाओ।'' (पवित्र कुरआन सूरह नं. ४२ आयत नं.१३)

● वह विद्वान जो ऐसी आस्था, श्रद्धा या विश्वास रखते है की मुसलमान भाइयों के धर्मगुरु हज़रत मुहम्मद, यहूदी भाइयों के धर्मगुरु हज़रत मूसा, इसाई भाइयों के धर्मगुरु हजरत ईसा, हजरत नूह जिन्हें हिन्दू भाईयों के धर्म ग्रंथों में मनु कहा गया है, इन सबको एक ईश्वर ने मानवजाति के कल्याण के लिए भेजा था। और सबको एक समान शिक्षा के साथ भेजा था। तो ऐसे विद्वान जब भगवद्गीता को पढ़ते हैं तो उनको भगवद्गीता में भी वही शिक्षा नज़र आती है जो शिक्षा ईश्वर ने सभी धर्मगुरुओं को देकर भेजा था।

वह शिक्षा इस प्रकार है।

ईश्वर एक है।
स्वर्ग और नरक का अस्तित्व है।
एक दिन प्रलय होगा।
प्रलय के दिन ईश्वर सबसे कर्मों का हिसाब लेगा।
प्रलय के बाद भी एक अनंत जीवन है।
इत्यादि।

● डा. साजिद भी ऐसे विद्वानों में से एक हैं। और मैंने यह पुस्तक उनकी भगवद्गीता, की व्याख्या को पढ़कर लिखा

है। इसलिए इस पुस्तक में भी आपको ऐसी ही शिक्षा मिलेगी जो ऊपर बतायी गई है।

● इस पुस्तक को मैंने उर्दू और हिन्दी दोनों भाषा में लिखा है ताकि मुसलमान और हिन्दू भाई यह दोनों समुदाय इस उदार व्याख्या और ईश्वरी ज्ञान को पढ़कर यह बात समझ लें की ईश्वर के मूल आदेश तो सारी मानवजाति के लिए एक समान हैं। मगर हर धर्म में और एक ही धर्म में अलग अलग समुदाय के बीच जो मतभेद है वह हमारी अपनी कम समझ (Short-sightedness) के कारण है। और यह मतभेद ईश्वरी धर्मग्रंथों के द्वारा दिए गए ईश्वरी ज्ञान के कारण नहीं है।

● पवित्र क़ुरआन की एक आयत का भावार्थ इस तरह है ''धर्म में कोई जबरदस्ती नहीं, और ग़लत रास्ता सही रास्ते से अलग कर दिया गया है।'' (पवित्र क़ुरआन सूरह नं. २, आयत नं. २५६)

● यानी एक मुसलमान पर भी कुरआन और ईश्वर के आदेश को मानने के लिए जबरदस्ती नहीं है, और न किसी अन्य धर्म के लोगों पर है। जिसका दिल चाहे तो माने और दिल ना चाहे तो न माने। हाँ मगर सही रास्ता और ग़लत रास्ता ईश्वर ने बता दिया है। और सत्य के मार्ग पर चलने के लिए कहा है। इसलिए प्रलय के दिन मानवजाति के लिए स्वर्ग और नरक का फैसला ईश्वर उनकी श्रद्धा और कर्मों के आधार पर ही करेगा।

● यजुर्वेद के एक श्लोक का अर्थ भी ऐसा ही है। वह श्लोक इस प्रकार है;

दृष्ट्वा रुपे व्याकरोत्सत्या नृते प्रजातति: ।
अश्रद्धा मनृतो अदधाच्छ्द्धाँ सत्ये प्रतापति: ।।
(Ùepegj&Jeso 19:77)

परमेश्वर ने सत्य और मिथ्या के रुप को अपनी ज्ञान दृष्टि से अलग अलग कर दिया है, और आदेश दिया है कि सत्य में आस्था रखो और मिथ्या को ठुकरा दो।

● तो धर्म की बात मानने के लिए किसी से कोई आग्रह नहीं है। जिसका दिल चाहे माने, जिसका दिल न चाहे तो न माने। हाँ, इस बात के लिए निवेदन है कि आप सत्य ज्ञान को अवश्य पढ़ें, जान लें और मन में रखें। और ईश्वर से सत्य मार्ग की तरफ मार्गदर्शन के लिए इस तरह प्रार्थना करते रहें कि,

इन्द्र ऋतु न आ भर पिता पुत्रेभ्या यथा ।
शिक्षाणो अस्मिन पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ।। (DeLeJe&Jeso 18:3:67)

''हे परमेश्वर इस (सत्य के) मार्ग में हमें शिक्षा (ज्ञान) दे। हम जीते हुए प्रकाश को पायें।''

● हमारा ईश्वर से सत्य का मार्ग दिखाने के लिए प्रार्थना करना आवश्यक है क्योंकि ऋग्वेद में लिखा है कि;

ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृत:

($e+iJeso 8-73-6)

सत्य के मार्ग को दुष्कर्मी पार नहीं कर पाते।

ऋग्वेद में यह भी लिखा है कि,

उत त्व पश्यन्त ददर्श वाचमृत त्वः श्रृण्वन्न श्रृणोत्ये नाम। ($e+iJeso 10-71-4)

बुद्धिहीन लोग ग्रंथ देखते हुए नहीं देखते, और सुनते हुए नहीं सुनते।

● हम तो अपने आपको सत्कर्मी और बुद्धिमान ही समझते हैं। मगर यह ईश्वर ही जानता है की हम क्या है।

● इसलिए हम धर्म ग्रंथों के सभी प्रकार की व्याख्या पढ़ें, और ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमारा सत्यमार्ग पाने के लिए मार्गदर्शन करे। ताकि सत्य ज्ञान हमारे मन में उतरे। मुझे आशा है कि हमारी प्रार्थना के उत्तर में ईश्वर हमें अवश्य सत्य मार्ग की समझ देगा।

मरने के बाद भी अनन्त जीवन है। और सत्य ज्ञान, सही श्रद्धा और सत्कर्म से ही हमें मुक्ति मिलेगी। इसलिए हमें अपने परलोक के जीवन के प्रति भी गम्भीर रहना चाहिए।

ईश्वर हम सब को मुक्ति दे। हमारे समाज में शांति, प्रेम और सद्भावना का वातावरण कर दे। और हमारे देश को उन्नति दे कि सब सुख से जीवन व्यतीत कर सकें।

● मैंने यह पुस्तक डॉ. साजिद की भगवद्गीता की व्याख्या को पढ़कर लिखा है। डॉ.साजिद खुद भी संस्कृत के विद्वान हैं और उन्होंने भगवद्गीता की व्याख्या स्वामी रामसुखदास महाराज की साधक संजीवनी, (गीता प्रेस, गोरखपुर), ए.सी. भक्ति वेदांत स्वामी प्रभुपाद की श्रीमद्भवद्गीता, यथारुप, और एस. टी.व्ही. अप्पलाचारी की 'नगमए इलाही' (गीता प्रेस गोरखपुर) को पढ़कर लिखा है। और उनकी इस व्याख्या को संस्कृत के विद्वानों ने बहुत पसंद किया है। इसलिए मैं डॉ. साजिद की व्याख्या को सही समझता हूँ। आपकी जानकारी के लिए मैं उन विद्वानों के प्रशंसा पत्र इस प्रस्तावना के बाद आप के सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। मुझे आशा है कि आप भी उन पत्रों को पढ़ कर इस पुस्तक कि व्याख्या को सही (Authentic) समझेंगे, और इसके पवित्र ज्ञान से लाभ उठाएंगे।

● मैं अब्दुल्ला तारिक साहब और डॉ. साजिद सिद्दीकी का आभारी हूँ। उनकी पुस्तकों से मुझे जो मार्गदर्शन मिला उससे यह पुस्तक लिखने में मुझे बहुत मद्द मिली। ईश्वर मानवसेवा की भावना से काम करने वाले सभी लोगों पर कृपा करे और इस जीवन और इसके बाद आने वाले अनंत जीवन में सफल करे और उन्हें सुख शांति प्रदान करें।

धन्यवाद!

Deehekeâe YeeF&

Q.S.Khan

प्रस्तावना

–डॉ. रेखा व्यास

(चारों वेदों की अनुवादक एवं अठारह प्रकाशित पुस्तकों की लेखिका)

आमुख–अद्‌भुत मिसाल और मशाल

''मेरे परिचित अक्सर मुझे कहते हैं हमारी तरह आप भी परिचितों के काम किया कीजिये इससे अच्छा रहता है।'' मैं उनसे कहती हूँ मैं जिनका काम करती हूँ वो परिचित ही हो जाते हैं, काम के माध्यम से हुआ परिचय बेहद पुख्ता, आत्मीय और ठोस होता है। डॉ. साजिद जी से भी परिचय बृहद विशाल कार्य के माध्यम से हुआ और इतना पुख्ता हो गया कि लगता ही नहीं कि यह मेरे वेदों के अनुवाद की प्रशंसा में आये उनके फोन की प्रतिक्रिया का सुपरिणाम है और नया परिचय है।

कर्म प्रधान विश्वरचि राखा

कर्म सृष्टि का मूल है और गीता का मूल यही कर्म है। साजिद जी ने इसी कर्म ग्रन्थ गीता यानी श्रीमद्‌भगवदगीता का अनुवाद करके इसमें कर्मठता का एक और नया अध्याय जोड़ दिया है। इतने ग्रन्थों में से यदि इन्होंने इस ग्रन्थ का चयन किया है तो निश्चित ही इनके मन मस्तिष्क पर उसके दर्शन की छाप होगी ही।

डॉ. श्री. साजिद ने बहुत सरल, आम बोल चाल और आत्मिय में यह अनुवाद किया है। यह इस अनुवाद का सबसे सशक्त तथा प्राणवान पक्ष है। उर्दू का पुट इसे लाखों लोगों तक संचारी बनाएगा। डॉ. साजिद गीता के मर्म तक पहुँचे हैं, यह भी अनुवाद की ताकत है, केवल शब्दानुवाद हो तो वो बात नहीं बनती।

यह अनुवाद महज अनुवाद या तर्जुमा भर नहीं है, किसी ग्रन्थ का भाषान्तरण भर नहीं है। अपितु संस्कृतियों का संगम, राष्ट्रीय एकता की मिसाल है जो हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है। आज भारत पुन: विश्वगुरु और ताकत बन जाए यदि यह पारस्परिक वैमनस्य और खण्डन की भावना खत्म हो जाए।

दुर्भाग्य से हमने महान ग्रन्थों को धर्म के हवाले से देखने की आदत पाल रखी है, जबकि यह आचार शास्त्र हैं इन्हें कोई भी अपना सकता है। ये सबके हैं सब इनके हैं। डॉ साजिद के अनुवाद से समाज के काफी भ्रम टूटेंगे। गीता के बारे में कम जानने वाले इसे युद्ध ग्रंथ समझने की भूल कर लेते हैं, जब कि यह कर्तव्य की ओर केन्द्रित करने वाला ग्रन्थ है। स्व–पर का भेद मिटाने, देह और आत्मा का अन्तर बताने वाला ग्रन्थ है। आज के भटकते, भूलते भोगवाद की ओर उन्मुख होते समाज के लिए डॉ. साजिद का अनुवाद ''अद्‌भुत मिसाल और मशाल'' है।

–डॉ. रेखा व्यास
(दिल्ली)

प्रस्तावना

प्रो. हेमंत दत्तात्रेय खैरनार

एम.ए. संस्कृत तिलक महाराष्ट्र विश्वविद्यालय,

बी.एड. संस्कृत-अंग्रेजी कवि कुलगुरु कालिदास विश्वविद्यालय रामटेक, नागपुर.

एम.एड. संस्कृत मुंबई विश्वविद्यालय

वेद विषय के लिए विश्वविद्यालय में प्रथम क्रमांक (गोल्ड मेडल) प्राप्त करने वाले.

'श्रीमद्‌भगवदगीता' मानव संस्कृति का एक अनमोल उपहार है। गीता केवल एक धार्मिक ग्रंथ ही नहीं बल्कि यह मानव जीवन को सही मार्ग दिखाने वाला पवित्र ग्रंथ भी है। मानव जीवन की सारी समस्याओं का हल इस किताब में मौजूद है। श्री पांडुरंगशास्त्री आठवले जो स्वाध्याय संस्था के विश्वस्थापक हैं, वह कहते हैं कि,

"Geeta is not only Bibles of Hindusim,

but geeta is a Bible of Humanity."

''गीता केवल हिंदुत्व की बाईबल नहीं है बल्कि गीता सारी मानव जाति की बाईबल है।''

जीवन के प्रयास में मनुष्य किस प्रकार का बर्ताव करे यह बतलाते हुए मानव जीवन के श्रेष्ठ उद्देश्यों को गीता दर्शाता है। पुरुषोत्तम योग, भवितयोग, स्थितप्रज्ञदर्शन, कर्म, मीमांसा, इन विषयों पर विस्तार से बहस पवित्र ग्रंथ गीता में है। यानी मानव जीवन के उत्तम विकास के मार्ग को दर्शाता है।

आदरणीय डॉ. साजिद सिद्दीकी साहब ने गीता का अध्ययन करके मुसलमानों के पवित्र ग्रंथ क़ुरआन शरीफ के धार्मिक दृष्टिकोण को एक दूसरे के समान करने का जो प्रयास किया है, उसकी प्रशंसा को शब्दों में बयान करना बहुत कठिन है।

ईश्वर एक ही है और हम सब उसी एक ईश्वर की संतान हैं। इस भावना को दर्शाने के लिए आदरणीय साजिद सिद्दीकी साहब द्वारा लिखे संस्कृत भाग को जांचने का सौभाग्य मुझे मिला, मैं अपने आप को धन्य समझता हूँ।

श्री. डॉ. साजिद सिद्दीकी साहब की किताब का अध्ययन करने के बाद हिन्दू व मुस्लिम समाज में एकता का वातावरण निर्माण करने में जरुर मदद मिलेगी। ईश्वर उनके इस प्रयास को सफल करे, यही मेरी शुभकामनाएँ हैं।

-प्रो. हेमंत दत्तात्रेय खैरनार

(संस्कार संस्कृत क्लासेस, मालेगाँव कैम्प)

अनुक्रमाणिका

१. महाभारत युद्ध की वास्तविकता ०९
२. मानवसेवा का महत्त्व १२
३. ईश्वरी ज्ञान का महत्त्व..१३
४. ईश्वर का प्रिय कौन?...१४
५. ईश्वर का अप्रिय कौन?..१५
६. ईश्वर कितना महान है?..१७
७. ईश्वर कौन है?...१८
८. क्या ईश्वर जन्म लेता है?..२४
९. श्री कृष्ण जी कौन हैं? ३०
१०. श्री रामचन्द्र जी कौन हैं? ३३
११. देवता कौन हैं?...३७
१२. क्या महाप्रलय होगा?..४१
१३. अन्य लोक का महत्त्व...४३
१४. मुक्ति कैसे मिलेगी?...४५
१६. किस का विनाश होगा?..४७
१७. पुण्य करने वाले नरक में क्यों जायेंगे?...................................४९
१८. ईश्वर की प्रार्थना कैसे करें?..५१
१९. पुनर्जन्म क्या है?..५९
२०. सूर्य के उत्तर में होने का क्या अर्थ है?...................................६१
२१. महाभारत में पुनर्जन्म का उल्लेख..६३
२२. छान्दोग्य उपनिषद में पुनर्जन्म का उल्लेख.................................६६
२३. बृहदारण्यक उपनिषद में पुनर्जन्म का उल्लेख.............................७०
२४. क्या भगवद्‌गीता में पुनर्जन्म की शिक्षा है?...............................७३
२५. महाभारत और उपनिषद में हस्तक्षेप किसने किया?........................७६
26. Ssmes ØeMve efpevekeâe hegvepe&vce ceW efJeÕeeme jKeves Jeeues Gòej veneR os mekeâles~........७८
२७. गीता सार...८०

1. ceneYeejle Ùegæ keâer JeemleefJekeâlee

पृथ्वी मनुष्य के रहने योग्य कब हुई?

● इस ब्रह्माण्ड के निर्माण का आरम्भ १३०० करोड़ वर्ष पहले हुआ।

● ४५० करोड़ वर्ष पूर्व हमारी धरती लावा के रुप में थी।

● हमारी धरती रहने योग्य ५० करोड़ वर्ष पहले हुई।

● ६ करोड़ वर्ष पहले एक उल्कापिंड (Comet) धरती से टकराया, जिस के कारण धरती के सारे डायनासोरस मर गए और सारे वन धरती में दफन हो गए।

● १८ लाख वर्ष पूर्व धरती का वातावरण फिर से इस योग्य हुआ की प्राणी इस धरती पर जिंदा रह सकें।

● इस धरती पर मनुष्य का अस्तित्व केवल १२ हजार वर्ष पुराना है। इसके पूर्व मनुष्य धरती पर रहते थे इसका कोई प्रमाण नहीं है।

श्रीकृष्ण जी :-

● श्रीकृष्ण जी ने २८ जुलाई ३३३८ ईसा पूर्व (BC) मथुरा में वासुदेव के यहाँ जन्म लिया। आपकी माता का नाम देवकी था। आप उन दोनों के ८ वें पुत्र थे। आप वर्सनी वंश और यादव परिवार से थे। आपको वासुदेव भी कहा जाता है। आप का मामा राजा कंस बहुत अत्याचारी था। ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की थी कंस का वध कंस का भांजा ही करेगा। तो वह श्री कृष्ण जी के सात भाइयों को जन्म के बाद ही मार डालता था। हजरत मूसा (अ.स) की तरह श्री कृष्ण जी भी दैविक सुरक्षा में जन्म के बाद अपने माता पिता से दूर रह कर बड़े हुए। और जैसे हजरत मूसा (अ.स) के कारण फिरऔन का राज समाप्त हुआ और उसकी मृत्यु हुई, इसी तरह कंस भी मारा गया और उसका राज श्री कृष्ण जी को मिला।

श्री कृष्ण जी का महाभारत के युद्ध में हिस्सा लेने के सिवा कोई चारा न था, और कौरव और पाण्डव दोनों आप के सगे सम्बन्धी थे इसलिए आपने अपनी सेना कौरवों को दे दी और खुद अर्जुन के साथ हो गए। युद्ध में आप ने कभी शस्त्र का उपयोग नहीं किया। मगर पाण्डव की विजय का मुख्य कारण आप की नीति और आदेश ही थे।

● महाभारत युद्ध के बाद आप अपने राज्य मथुरा में ही रहे। जाराह नाम के शिकारी का गलती से आपको तीर लग गया था जिसके कारण आपकी मृत्यु १७ या १८ फरवरी ३१०२ ईसा पूर्व (BC) को हुई।

महाभारत का युद्ध :-

● महाभारत का युद्ध आज से लगभग ८ लाख ४६ हजार वर्ष पहले द्वापर युग में लड़ा गया।

● यह युद्ध २ चचेरे भाइयों के बीच में लड़ा

गया। कौरव १०० सगे भाई और उस समय के राजा धृतराष्ट्र के पुत्र थे। जिन्हें पांडव कहते हैं वह सब धृतराष्ट्र के भाई पांडु के पुत्र थे। कौरव भाई पांडव भाइयों को अपने साम्राज्य में कोई हिस्सा नहीं देना चाहते थे और कौरव खुद भी गलत राह पर थे। इसलिए यह युद्ध लड़ा गया।

● इस युद्ध में कौरव की तरफ से ११ अक्षौहिणी और पांडवों की तरफ ७ अक्षौहिणी की सेना थीं। एक अक्षौहिणी में २१८४० रथ, २१८७० हाथी, ६५६१० घोड़े, १०९३५० पैदल सेना होती है। यानी इस युद्ध में लगभग ४० लाख लोगों ने हिस्सा लिया था।

● धृतराष्ट्र अंधा था। संजय धृतराष्ट्र का मंत्री और रथ चलाने वाला था। और संजय ने ही युद्ध का आखों देखा हाल धृतराष्ट्र को बताया था।

● श्री कृष्ण जी ने इस युद्ध में अपने हाथ में कभी शस्त्र नहीं लिया। मगर वह अर्जुन के रथ चलानेवाले और गुरु थे।

● १८ दिन के युद्ध के बाद जिसमें १ अरब और ६६ करोड़ लोग मारे गए। इस युद्ध में पांडवों को विजय प्राप्त हुई।

भगवद्‌गीता का एक श्लोक इस तरह है।

श्रीकृष्ण जी ने कहा (हे अर्जुन) लेकिन वास्तव (Fact) तो यह है कि कोई भी ऐसा युग नहीं रहा है जब मैं न रहूँ, तुम न रहें हो, और मनुष्यों पर अत्याचार करने वाले वो (दुष्ट लोग) न रहे हों। और (नि:सन्देह) आगे वर्तमान में भी इससे आगे भी ऐसा नहीं होगा जब हम सब न रहें। (२: १२)

● भगवद्‌गीता के २:१२ श्लोक का अर्थ है कि, सत्य और असत्य का युद्ध इस धरती पर हमेशा होता रहेगा। जैसे महाभारत में कौरव भारी संख्या में थे। इसी तरह दुष्ट हमेशा भारी संख्या में होंगे। और जैसे पांडव की संख्या कम थी। इसी प्रकार ईश्वर के आदेश को मानने वाले और सत्य की लड़ाई लड़ने वाले हमेशा कम संख्या में होंगे। मगर जैसे महाभारत के युद्ध में विजय सत्य की हुई। इसी तरह हर युग में विजय केवल सत्य की होगी।

● २० वीं शताब्दी के महाभारत के युद्ध में पांडव और कौरव किस रुप में इस देश में रहे हैं क्या आप यह बता सकते हैं? मैं आपको बताता हूँ। कौरव यह इस देश पर अत्याचार करने वाले अंग्रेज थे। जो संख्या में बहुत ज्यादा थे। पांडव ये देश की स्वंतत्रता के लिए लड़नेवाले क्रांतिकारी थे, जो बहुत कम संख्या में थे। २० वीं शताब्दी का महाभारत का युद्ध १९४७ में देश की स्वतंत्रता और पांडव (क्रांतिकारियों) की विजय पर खत्म हुआ।

● इस काल में भी महाभारत का युद्ध जारी है। कौरव यह इसी स्वतंत्र देश के लुटेरे और साम्प्रदायिक दंगे करवाने वाले राजनेता हैं जो संख्या में ज्यादा और देश को कब्जे में कर रखा है, और उसे लूट रहे हैं। पांडव सेक्युलर, ईमानदार और न्याय पसंद सरकार बनाने के लिए लड़ने वाले आम जनता और एन.जी.ओ हैं। इस युद्ध में भी विजय सत्य और आम जनता की ही होगी।

स्कूल में पढ़ाई जाने वाली एक कहानी :-

● खरगोश और कछुए ने एक बार आपस में दौड़ का मुकाबला किया। खरगोश कुछ पल में बहुत आगे निकल गया। जब उसने पलटकर पीछे देखा तो कछुवे को बहुत पीछे पाया। उसने सोचा कुछ देर आराम कर लूँ फिर दौड़ कर मंजिल तक पहुंच जाऊंगा। खरगोश की आंख लग गई और वह सोता रहा और कछुवा लगातार चलता रहा और जीत गया।

क्या खरगोश और कछवे की ऐसी दौड़ कभी संभव हो सकती है? नहीं। फिर भी इस कहानी को दुनिया के हर देश में पढ़ाया जाता है। इस कहानी से बच्चों को एक बात समझाई जाती है कि आखिर वही जीतता है जो लगातार मेहनत करता है, चाहे उसकी गति कम ही क्यों न हो।

महाभारत युद्ध की कथा का महत्व :-

खरगोश और कछुए की कहानी से ''लगातार मेहनत से सफलता मिलती है'' इस सीख (Moral) को बच्चों के दिमाग में मज़बूती से बैठाया जाता है। अगर सिर्फ सीख दी जाती तो बच्चा जल्द इसे भूल जाता। मगर कहानी के माध्यम से याद रखता है।

इसी तरह महाभारत की कहानी लोगों के दिमाग में इस बात को अच्छी तरह बैठाने के लिए लिखी गई है कि विजय हमेशा ईश्वर को मानने वालों और सत्य का साथ देनेवालों की होगी, चाहे वह कम संख्या में ही क्यू न हों। और यही ज्ञान (Moral) भगवद्गीता है।

● हिन्दू धर्म में सौ (१००) से अधिक पुराण हैं। मगर बहुत कम हिन्दू भाइयों को उनके नाम याद हैं। इसी तरह अगर भगवद्गीता केवल एक सीख वाली पुस्तक की तरह होती, तो जैसे पुराणों का हाल है कि किसी को उनका नाम तक याद नहीं इसी तरह भगवद्गीता का हाल भी होता।

भगवद्गीता को महाभारत के मनोरंजक कहानी के बीच में रखा गया है। इसलिए हर हिन्दू भाई कम से कम इसका नाम तो जानता है।

● अगर विद्यालय के विद्यार्थी सिर्फ खरगोश और कछुऐ की कहानी को याद रखें और इसमें मौजूद सीख (Moral) को भूल जाएं तो क्या होगा?

ऐसा ही भगवद्गीता के साथ हुआ। लोगों ने महाभारत के एक एक पात्र को याद रखा और उन्हें अमर (Immortal) बना दिया। मगर अफसोस भगवद्गीता के ज्ञान से बहुत कम लोग परिचित हैं।

भगवद्गीता के सत्य ज्ञान को आम लोगों तक साधारण शब्दों में पहुंचाने के लिए यह पुस्तक लिख रहा हूं।

****

2. ceeveJemesJee keâe cenòJe

● **श्रीकृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है कि,**
सच तो यह है कि मेरी भक्ति करते हुए, जो प्रचारक मेरे भक्तों को इस सबसे श्रेष्ठ व दिव्य, छुपे हुए ज्ञान को समझाता है, नि:सन्देह वह मेरे सबसे श्रेष्ठ व दिव्य (स्वर्ग के) धाम को प्राप्त करता है। (१८:६८)
(अर्थात सत्य धर्म के प्रचारक को स्वर्ग प्राप्त होगा।)

● इस संसार के मनुष्यों में, इस धर्म के प्रचारक की तुलना में कोई और नहीं है, जिससे मैं प्यार करता हूँ। और (भविष्य में) भी इसकी तुलना में दूसरा कोई मुझे इससे अधिक प्यारा नहीं होगा। (१८:६९)
(अर्थात् सत्य धर्म के प्रचारक ईश्वर के प्रिय हैं।)

● जो मनुष्य इस (ईश्वर के आदेशों व नियमों पर आधारित) धर्म के बारे में किये गए संवाद में सोच विचार करेगा और धीरे धीरे इसके टुकड़े टुकड़े को समझेगा, वह ज्ञान के द्वारा ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करेगा, और मैं उसकी सारी आशाओं को पूरी करुँगा। इस तरह का यह मेरा निर्णय है। (१८:७०)
(अर्थात् सत्य धर्म सीखने और सिखाने वालों की ईश्वर सारी इच्छाएं पूरी करेगा।)

● नि:सन्देह जो मनुष्य **एक ईश्वर पर श्रद्धा रखते हुए** और ईश्वर से ईर्ष्या न रखते हुए, (इस ज्ञान को) सुनेगा, वह संसार में भय व शोक से मुक्त हो जाएगा, और मरने के बाद स्वर्ग में भलाई वाले कर्म करने वालों के पवित्र और अच्छे धाम को भी पाएगा। (१८:७१)

● हे पार्थ! मेरे मित्र सच तो यह है कि मानवजति के कल्याण यानी भलाई वाले कर्मों को पूर्णतया करने वाला कोई भी मनुष्य बुरे धाम (नर्क) में नहीं जाता। नि:सन्देह इस (पूर्णतया भलाई वाले कर्मों को करने वाले मनुष्य) को न ही इस संसार में नाश है और न ही उस (अन्य लोक) में है। (०६:४०)

(अर्थात् मानवसेवा करनेवाले व्यक्ति का न विनाश होगा और न वह नर्क में जलेगा।)

****

(समूद नामक समुदाय के उजड़े हुए घरों के चित्र)

3. F&MJejer %eeve keâe cenòJe

● **श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है कि:**

इस तरह हे पार्थ (अर्जुन)! (वेदों में बताए गए) ईश्वरी प्रकृति के पहिये के साथ जो नहीं आगे बढ़ता है, (अर्थात् जो ईश्वर के आदेशों का पालन नहीं करता है)। उसका यह जीवन पापों से भर जाता है क्योंकि वह इच्छाओं का पालन करने और भोगों में डूबे रहने के लिए जीता है। (३:१६)

(अर्थात् जो ईश्वर की आज्ञा का पालन नहीं करता वह सत्य मार्ग से दूर हो जाता है।)

● यह पापों की ओर अधिक प्रेरित करने वाली इच्छा या भावना यह अपना इच्छा भक्ति का शिर्क (पाप) है। (यह आगे बढ़कर) क्रोध (और हिंसा में परिवर्तित हो जाता है।) यह बुराई वाले गुण से जन्म लेता है। इस संसार में इस इच्छा भक्ति जैसे शिर्क (पाप) को सबसे बड़ा शत्रु समझो, (यही नहीं बल्कि) यह सबसे बड़ा पाप, और सबसे बड़ी हानि व विनाश भी है। (३:३७)

(मनमानी जीवनशैली अपनाना सबसे बड़ा पाप है। ईश्वर के आदेशानुसार जीवन बिताने से ही सफलता मिलेगी।)

● शान्ति व सुख वाले धर्म का यह ज्ञान (१) सारे ज्ञानों का राजा है। (२) गोपनीय ज्ञानों का राजा है और (३) अत्यन्त पवित्र ज्ञान है। यह ज्ञान सबसे श्रेष्ठ और अविनाशी निर्माता (ईश्वर की ओर से) सीधा और बिल्कुल साफ आया हुआ है। (९:२)

● हे अर्जुन! (ईश्वर कहता है) इस शान्ति व सुख वाले धर्म पर श्रद्धा न रखने वाले मनुष्य बार बार मौत वाले संसार यानी नर्क के मार्ग में ही जन्म और मौत के चक्कर (गर्दिश) में फंसे रहते हैं, इस कारण वह मुझे कभी प्राप्त नहीं कर पाते। (९:३)

Summery :-

१) जो मनुष्य ईश्वर की आज्ञा के अनुसार जिंदगी नहीं गुजारता है, वह अपने मनमानी तरीके से जिंदगी गुजारता है, और मनमानी तरीके से जिंदगी गुजारने वाले हमेशा बरबाद होते हैं।

२) सत्य धर्म का ज्ञान इस ब्रह्माण्ड के महान मालिक (ईश्वर) का उतारा हुआ है। जो इस पर विश्वास नहीं रखता। वह हमेशा नर्क में रहेगा। वह कभी ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता।

नोटः-

''शिर्क'' का अर्थ:-

शिर्क ऐसा पाप है जिसमें हम ईश्वर की प्रार्थना की तरह ही किसी दूसरे की प्रार्थना भी करते हैं। शिर्क महापाप है। जब व्यक्ति

(yeekeâer hespe 32 hej)

4. F&MJej keâe efØeÙe keâewve?

ßeer ke=â<Ce peer ves keâne F&MJej keân jne efkeâ:

● नि:सन्देह (१) घृणा और ईर्ष्या के बिना जीने वाला (२) सभी प्राणियों से मित्रता व प्रेम रखने वाला, (३) दया करने वाला और (४) अपेक्षा के बिना रहने वाला, (५) अहंकार से दूर रहने वाला (६) सुख और दु:ख में धैर्य रखने वाला (७) क्षमा करने वाला, इन सब से मैं प्रेम करता हूँ। (१२:१३)

● (८) सन्तुष्ट रहने वाला (९) सदैव भक्ति में लगा रहने वाला (१०) मन को वश में रखने वाला (११) संकल्प पर मज़बूती से जमा रहने वाला (१२) जो मनुष्य अपने मन और बुद्धि को मेरे वश में कर देता है (१३) और जो मेरा भक्त भी है, वह मुझे बहुत प्रिय है। (१२:१४)

● (१) जिससे लोगों को कष्ट नहीं होता और (२) जो लोगों के द्वारा (किसी को) कष्ट देता भी नहीं है और जो खुशी, शोक, भय और चिन्ता से मुक्त है, वह मुझे बहुत ही प्रिय है। (१२:१५)

● जो (१) किसी निर्मित वस्तु से अपेक्षा नहीं रखने वाला (२) पवित्र शरीर, हृदय और बुद्धि वाला (३) जो ईमानदार (४) निर्पक्ष (५) भय व शोक से मुक्त है, (६) सारे (संसार भक्ति के) प्रयत्नों को छोड़ चुका है, वह मेरा सच्चा भक्त है और वह मुझे बहुत प्रिय है। (१२:१६)

● (१) जो न किसी वस्तु के मिलने पर बहुत अधिक खुशी व अहंकार अनुभव करता है, न ही किसी वस्तु के जाने का शोक करता है और न पछतावा करता है (२) जो न कोई इच्छा रखता है (३) और जो शुभ अशुभ (जैसे अंधविश्वासों को) छोड़ देने वाला है, और जो (केवल मुझ एक ईश्वर की) भक्ति में सम्मान अनुभव करता है, वह मुझे बहुत प्रिय है। (१२:१७)

● जो (१) मित्र और शत्रु से समान और न्यायपूर्वक बर्ताव करने वाला है और जो (२) सम्मान, अपमान, सर्दी, गर्मी, सुख और दु:ख में धैर्य यानी सब्र रखने वाला है, (३) ईश्वर के साझीदारों (यानी बहुईश्वरवाद) को छोड़ने वाला है। (वह मुझे बहुत प्रिय है) (१२:१८)

● (जिसके लिए) निन्दा और स्तुति दोनों समान हैं, (४) जो मौन रखने वाला है (५) और जो जिस किसी भी परिस्थिती में हो, सन्तुष्ट और सुखी है, (६) बिना घरबार के होकर भी बुद्धि को एक ईश्वर की श्रद्धा पर मज़बूती से स्थिर रखकर, उसकी भक्ति में लगकर, सम्मान अनुभव करता है, ऐसा मनुष्य मुझे बहुत प्रिय है। (१२:१९)

● लेकिन जो (मुनी या मोमिन) (१) इस संसार और निर्मित वस्तुओं के बारे में (२) धर्म के बारे में (३) वह धाम जहाँ मौत नहीं है उस स्वर्ग के बारे में, ईश्वर ने जिस तरह कहा है, उसी तरह पूर्णतया श्रद्धा रखते हुए मुझ सबसे श्रेष्ठ व दिव्य ईश्वर की भक्ति में लगा हुआ है, वह मुझे सबसे अधिक प्रिय है। (१२:२०)

नोट:- (निर्मित वस्तु का अर्थ है वह सारे जीव-जन्तु धरती, आकाश और सभी चीज़ें जिसका निर्माण ईश्वर ने किया है।)

5. F&MJej keâ DeefØeÙe keâewve?

ßeer ke=â<Ce peer ves keâne F&MJej keân jne nw efkeâ:

● आसुरी गुणों के लोग यह नहीं जानते कि विकास (स्वर्ग में जाने वाले कर्म) क्या है? और पिछड़ापन (नर्क में जाने वाले कर्म) क्या है? और (शरीर व मन की) पवित्रता को भी नहीं जानते और इनमें अच्छा आचरण नहीं होता और उनमें सच्चाई भी नहीं होती। (१६:७)

● (१) वह कहते हैं कि इस संसार की प्रणाली ईश्वर की महिमा या निर्माण के बिना, उद्देश्य के बिना और गलत आधारों पर स्थित है। (२) इस संसार का ईश्वर नहीं है, (३) यह संसार बिना कारण हो गया है, (४) इच्छा शक्ति या यौन इच्छा के अतिरिक्त (इस संसार के जीवन का) और क्या दूसरा लक्ष्य है? (१६:८)

● इस तरह का विनाश वाला दृष्टिकोण अपना कर, यह तुच्छ बुद्धि वाले अपने आपको निर्माता समझकर, अनुपयोगी, अनावश्यक और हानि व कष्ट पहुँचाने वाले कर्मों में लग जाते हैं, जो इस संसार का विनाश करने वाले होते हैं। (१६:९)

● (१) (ईश्वर का सहारा और उसके नियमों व आदेशों के पालन को छोड़कर) कभी पूरी न होने वाली इच्छाओं का पालन करते हुए उन्हीं के सहारे (२) धोखाबाजी (३) लोभ (४) झूठे मान-सम्मान की मस्ती में डूबे हुए, ईश्वरीय ज्ञान, उद्देश्य और योजना के उल्लंघन को अपना लक्ष्य बनाकर अपवित्र संकल्पों को अपनाते हुए, मन को आकर्षित करने वाली भौतिक वस्तुओं को प्राप्त करके संसार के विकास व उन्नति में लगे रहते हैं। (१६:१०)

● (ईश्वर का सहारा छोड़कर) इच्छाओं का सहारा लेकर, भौतिक वस्तुओं के भोग को जीवन का लक्ष्य बनाने वाला मनुष्य, ''अभी तो मेरे पास इतना ही है।'' इस तरह का निश्चय किये रहता है और जीवन के अन्त यानी मरने तक असीम भय, शोक और चिन्ता में घिरा रहता है। (१६:११)

● (आसुरी गुण रखने वाले) सैंकड़ों प्रकार की झूठी अपेक्षाओं के चक्कर में फंसकर, इच्छा भक्ति (जैसा शिर्क) धारण करते हैं (और फिर इच्छाओं का पालन करके) गलत तरीके से यौन सम्बन्ध पूरा करने में और सदैव भौतिक लाभ और भोग वाली वस्तुओं की खोज में लगे रहते हैं (और जब इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं तो) क्रोध या तनाव के जाल में फंसकर, अन्याय के द्वारा गलत तरीकों से सांसारिक लाभों और धन समेटने में लग जाते हैं। (१६:१२)

● (आसुरी गुणों वाले मनुष्य का दृष्टिकोण

यह होता है कि) (१) आज यह जो कुछ भी मुझे प्राप्त है, वह मेरे बलबूते पर है। (२) मेरे इस खोजी मन ने इन सब वस्तुओं को प्राप्त किया है। (३) यह मेरा धन भविष्य में दोबारा और भी (अधिक हो जाएगा।) (१६:१३)

● यह बात सिद्ध हो गई है कि मैं (१) सबसे अधिक भौतिक वस्तुओं का भोग कर रहा हूँ। (२) मैं शक्तिशाली और प्रसन्न हूँ। नि:सन्देह मैं ईश्वर या शासक हूँ, इसलिए वह मेरा शत्रु, मेरी शक्ति से ही मारा गया है दूसरों को भी मैं ही मारुँगा। (१६:१४)

● अज्ञान से भटक कर वह इस तरह विचार करता है कि (१) मैं धनवान सम्बन्धियों से घिरा हूँ। (२) मेरे द्वारा ही (बड़े-बड़े) ईश्वर की प्रसन्नता वाले कार्य किये जाते हैं। (२) मैं बहुत अधिक दान देने वाला हूँ। मैं मौजमस्ती करने वाला हूँ। अब बताओ कि मेरे समान दूसरा कौन है?(१६:१५)

● (ऐसे भटकने वाले लोग) इच्छा भक्ति के कारण (सारा जीवन) भौतिक वस्तुओं के भोग करने में लगे रहते हैं और लोभ के जाल में फंसकर, अनेक उलझनों और परेशानियों के कारण भटक जाते हैं (और फिर मरने के बाद) प्रदूषण से भरे हुए नरक में गिर जाते हैं। (१६:१६)

● ऐसे (भटकने वाले लोग) ईश्वरी आदेशों व नियमों के उल्लघंन का साथ देकर, लोगों को धोखा देने के लिए भलाई वाले कर्म करते हैं। (यह भलाई वाले कर्म) इनके अपने विचार से गढ़ी (बनाई) हुई बातें होती हैं (नया तरीका होता है) जो कि भक्ति के नाम पर इनकी अपनी बड़ाई, सम्मान, धन, दौलत, गर्व और आनंद में बढ़त से जुड़ी हुई होती हैं। (१६:१७)

● (१) अहंकार, (२) बल और हठ (३) जल्दबाजी (४) इच्छा भक्ति और (५) क्रोध, घृणा व हिंसा के सहारे यह लोग मुझ आत्मा और शरीर से परे (ईश्वर) से ईर्ष्या रखते हैं, (इसलिए मुझ पर) दोष दृष्टि रखते हैं। (१६:१८)

● श्री कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि, इन (ईश्वर से) ईर्ष्या रखने वाले, क्रूर और संसार के गिरे हुए नीच मनुष्यों को नि:सन्देह मैं अपवित्र आसुरों की पीढ़ियों में सदैव रहने के लिए (नरक में) नीचे फेंक देता हूँ। (१६:१९)

● मनुष्यों का विनाश करने वाले और नरक के यह तीन दरवाज़े हैं, (१) इच्छा भक्ति (२) क्रोध और (३) लोभ, इसलिए इन तीनों को त्याग देना चाहिए। (१६:२१)

● हे कुन्तीपुत्र (अर्जुन)! इन भटकाने वाले तीनों दरवाजों से मुक्त होनेवाला मनुष्य, ईश्वर का सहारा या उसकी शरण लेकर अपने आचरण को संवारता है, तो फिर वह मरने के बाद स्वर्ग की सबसे श्रेष्ठ व दिव्य

6. F&MJej efkeâlevee ceneve nw?

● प्रकाश की किरणें एक सेकंड में ३ लाख किलोमीटर की यात्रा करती है। यानी एक सेकंड में इस धरती के जिसपर हम रहते हैं ७ बार चक्कर लगा सकती हैं।

● हमारा सूर्य धरती से इतना दूर है कि उससे निकली एक प्रकाश कि किरण को धरती तक पहुंचने के लिए ८ मिनिट लगते हैं।

● सूर्य पृथ्वी से १३ लाख गुना बड़ा है। मगर सूर्य ही इस ब्रह्माण्ड का सबसे बड़ा तारा नहीं है। बल्कि (Etacarinae) **इटाक्रिना** veece keâe leeje metÙe& mes 50 ueeKe iegvee yel[e nw~ (Betel Geuse) **बेटल ज्यूस** नाम का तारा हमारे सूर्य से ३० करोड़ गुना बड़ा है। (V.Y. Canismajoris) **वी.वाय. कॅनीस्मेजोरिस** नाम का तारा सूर्य से १ अरब गुना बड़ा है। हम जिस आकाशगंगा में हैं इसका नाम **मिल्की वे गॅलेक्सी** है। और इस आकाशगंगा में हमारे सूर्य जैसे ३०० अरब सूर्य हैं।

● हमारी यह आकाशगंगा इतनी व्यापक व बड़ी है कि ३ लाख किलोमीटर प्रति सेकंड की गति से यात्रा करने वाली प्रकाश की एक किरण को इस आकाशगंगा के एक सिरे (किनारे) से दूसरे सिरे तक यात्रा करने के लिए १ लाख वर्ष लगेंगे।

● हमारी इस आकाशगंगा से दुगनी बड़ी आकाशगंगा जो हमसे नजदीक है उसका नाम **अँड्रोमिडा** (Andromeda) है। और जो ६० गुणा बड़ी है उसका नाम M-81 और जो ६००गुणा बड़ी है उसका नाम है IC-1011. ऐसे ही बहुत सारी आकाशगंगा मिलकर एक कलश्टर बनाती हैं। हम जिस **कलश्टर** ceW हैं उसका नाम **विरगो कलश्टर** है। इस **कलश्टर** में लगभग ४७ हजार आकाशगंगा हैं।

● बहुत से कलश्टर मिलकर १ सुपर कलश्टर बनाते हैं। हमारी आकाशगंगा जिस सुपर कलश्टर में है उसका नाम लोकल सुपर कलश्टर है। इस **लोकल सुपर कलश्टर** में १०० से ज्यादा कल्शटर हैं। और हमारे ब्रह्माण्ड में ऐसे १ करोड़ से ज्यादा सुपर कलश्टर हैं। और इस सारे ब्रह्माण्ड को एक ईश्वर ने बनाया है जो इन सबसे बड़ा है?

क्या आप अंदाजा लगा सकते हैं कि हमारी यह धरती और हम ईश्वर के महान साम्राज्य में कितने छोटे हैं? हमने जो कुछ कहा वह आप यू-ट्युब की इस लिंक पर देख सकते हैं~ **https://youtu.be/x7QRVP2JGzM**

F&MJej keâer cenevelee kesâ Mueeskeâ

● उसी समय अर्जुन ने ईश्वर के तेज को भी देखा वह ऐसा था कि अगर आकाश में हजारों सूर्य एक साथ निकलें तो भी उनका प्रकाश उस महान ईश्वर के तेज के समान न हो पाए। (११:१२)

अर्जुन ने कहा, हे ईश्वर,

● आपको बिना आरम्भ व जन्म के, बिना मध्य के, बिना अन्त व मौत के देख रहा हूँ। आप असीम प्रकृति वाले हैं। आप की प्रकृति के असीम हाथ हैं। चन्द्रमा और सूर्य आँखें हैं। आपकी प्रकृति के मुख से भड़कती हुई अग्नि निकलते देख रहा हूँ। आपके अपने तेज से इस सारे ब्रह्माण्ड को तपते हुए देख रहा हूँ।

7. F&MJej keâewve nw?

● ईश्वर और श्री कृष्ण जी को हम क्या समझते हैं यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस लिए भगवद्‌गीता में ईश्वर और श्री कृष्ण जी के बारे में जो श्लोक हैं और दूसरे अध्यायों में भी जो श्रद्धा से जुड़े श्लोक हैं उनका हम विस्तार से अध्ययन करेंगे। इसके लिए पहले हम संस्कृत में मूल (Original) श्लोक लिखेंगे। फिर उसको वाक्य रुप (Expanded form) में लिखेंगे जिससे की श्लोक का हर शब्द समझ में आ सके। फिर हर शब्द का अर्थ लिखेंगे। और फिर आखिर में उस श्लोक की व्याख्या लिखेंगे। इस तरह हर श्लोक चार बार लिखा जाएगा। ऐसा करने से श्लोक की व्याख्या समझने में आसानी होगी और आप खुद भी संस्कृत शब्द कोश की सहायता से श्लोक की व्याख्या कर सकते हैं, या कम से कम वह व्याख्या सही या गलत है इसका पता लगा सकते हैं। हम सब सत्य ज्ञान की खोज कर रहे हैं। इसलिए उदारता के साथ हर दृष्टिकोण से भगवद्‌गीता के उपदेश को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

F&MJej Skeâ nw~

● *तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते।*
प्रियो हि ज्ञानिनो ऽत्यर्थमहं स च ममप्रियः।।

तेषाम ज्ञानी नित्य-युक्तः एक भक्तिः विशिष्यते।
प्रियः हि ज्ञानिनः अत्यर्थम् अहम् सः च प्रियः।

(तेषाम) उन (चारों) में, *(ज्ञानी)* जो ज्ञानी, *(नित्य)* धैर्य (सब्र के साथ/ हमेशा) *(एक)* **एक ईश्वर की,** *(भक्ति)* प्रार्थना में, *(युक्त)* लगा रहता है, *(विशिष्यते)* वह सब से श्रेष्ठ है, *(हि)* क्योंकि, *(ज्ञानी)* उस ज्ञानी को, *(अहम)* मैं, *(अत्यर्थम)* सब से अधिक, *(प्रिय)* प्रिय हूँ, *(च)* और, *(स)* वह, *(मम)* मुझे, *(प्रियः)* (सब से अधिक) प्रिय है।

(ßeer ke=â<Ce peer ves keâne F&MJej keân jne nw efkeâ:)

उन (चारों) में जो ज्ञानी धैर्य के साथ एक ईश्वर की प्रार्थना में लगा रहता है, वह सब से श्रेष्ठ है, क्योंकि उस ज्ञानी को मैं सब से अधिक प्रिय हूँ और वह (भी) मुझे (सबसे अधिक) प्रिय है। (७:१७)

● *ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते।*
एकत्वेन पृथत्क्वेन बहुधा विश्वतोमुखम्।।९-१५।

ज्ञान-यज्ञेन च अपि अन्ये यजन्तः माम् उपासते।
एकत्वेन पृथक्त्वैन बहुधा विश्वतः मुखम्।।१५।।

(ज्ञान) ज्ञान के अनुसार *(यज्ञेन)* भक्ति करने वाले *(अपि)* निःसंदेह *(माम्)* मुझको *(एकत्वेन)* एक मानकर *(एक्सवी से)* एकाग्रता से भक्ति करते हैं (च) और (अन्ये) दूसरे, (ज्ञान के अनुसार कर्म न करने वाले) लोग

(विश्वत:) संसार की *(बहुधा)* बहुत सारी (पृथक्त्वेन) अलग अलग *(मुखम्)* रुप रखने वाली निर्मित वस्तुओं की *(यजन्त:)* भक्ति करते हैं।

● ज्ञान के अनुसार भक्ति करने वाले, नि:संदेह मुझको एक मानकर एकाग्रता से भक्ति करते हैं और दूसरे, (ज्ञान के अनुसार कर्म न करने वाले) लोग, संसार की बहुत सारी अलग अलग रुप रखने वाली निर्मित वस्तुओं की, (या मूर्तियों की) भक्ति करते हैं। (९:१५)

ईश्वर ने ही इस ब्रह्माण्ड का निर्माण किया है।

● *मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना।*
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थित:।।

मया ततम् इदम् सर्वम् जगत् अव्यक्त-मूर्तिना।
मत्-स्थानि सर्व-भूतानि न च अहम् तेषु अव्यस्थित:

(मया) मेरी *(अव्यक्त)* न दिखाई देने वालाr *(मूर्तिना)* मूर्ति *(इदम्)* शरीर या रुप के द्वारा *(सर्वम्)* सारे *(जगत्)* संसार *(ततम्)* फैलाव (सर्व) सारी (भूतानि) निर्मित वस्तुएb (मत्) मुझसे (स्थानि) स्थित (अहम्) मैं (तुषु) इनसे (अव्यस्थित:) स्थित (न) नहीं हूँ।

मेरी न दिखाई देने वाली मूर्ति, शरीर या रुप के द्वारा, (इस) सारे संसार (का) फैलाव (निर्माण हुआ है।) सारी निर्मित वस्तुएँ मुझसे स्थित हैं और (मैं) इनसे स्थित नहीं हूँ। (९:४)

● ईश्वर किसी की आत्मा में नहीं है और मरने के बाद कोई आत्मा ईश्वर में नहीं समाएगी।

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्।
भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावन: ।

न च मत् स्थानि भूतानि पश्य मे योगम् ऐश्वरम्।
भूत-भृत् न च भूत-स्थ: मम आत्मा भूत-भावन:।।

(च) और *(भूतस्थ:)* निर्मित *(न)* नहीं हूँ *(च)* और *(भूतानि)* वस्तुएं *(मत)* मुझ मW *(स्थानि)* स्थित *(न)* नहीं हैं *(मे)* मेरी *(एश्वरम)* प्रकृति सS *(योगम्)* जुड़ी हुई *(पश्य)* को देखो *(मम)* मैं *(आत्मा)* अकेला *(भूत)* निर्मित वस्तुओं का *(भावन:)* अकेला निर्माता *(भृत)* को पालने वाला।

और (मैं) निर्मित (वस्तुओं में स्थित) नहीं हूँ और (निर्मित) वस्तुएँ मुझमें स्थित नहीं हैं। (सुबूत के तौर पर) मेरी प्रकृति से जुड़ी हुई (निर्मित वस्तुओं) को देखो (तो जानोगे कि) मैं स्वयं (सारी) निर्मित वस्तुओं का अकेला निर्माता और (सारी निर्मित वस्तुओं) को पालने वाला (हूँ)।

(९:५)

• ईश्वर ने सबको पहली बार पैदा किया। वह प्रलय (कयामत) के दिन सबको मारेगा। फिर उसके बाद दुबारा जिंदा करेगा। (कर्मों का हिसाब लेने के लिए)

• *सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्।*
कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पोदौ विसृजाम्यहम् ।।

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिम् यान्ति मामिकाम्। कल्प-क्षये पुनः तानि कल्प-आदौ विसृजामि अहम् ।।

(कौन्तेय) हे कुन्ती के पुत्र (अर्जुन) *(अहम)* मैंने *(कल्प)* ब्रह्माण्ड के *(आदौ)* आरम्भ में *(तानि)* इन सारे *(विसृजामि)* का निर्माण किया है *(कल्प)* और प्रकृति के *(क्षये)* प्रलय के समय *(मामिकाम्)* मेरी इच्छा सSS *(प्रकृतिम्)* ईश्वरी प्रकृति के द्वारा *(सर्व)* सारे *(भूतानि)* मनुष्य *(पुनः)* दोबारा *(यान्ति)* (उठाए) जाएंगे।

हे कुन्ती के पुत्र (अर्जुन)! मैंने ब्रह्माण्ड के आरम्भ में, इन सारे (मनुष्यों) का निर्माण किया है, और ब्रह्माण्ड के अंत यानी प्रलय के समय मेरी इच्छा से ईश्वरी प्रकृति के द्वारा, सारे मनुष्य दोबारा (उठाए) जाएंगे (जीवित किए जाएंगे)। (९:७)

ईश्वर को शरीर वाला मानना मूर्खता है।

• *अवजानन्ति मां मूढा मानुषी तनुमाश्रितम् परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ।।*
अवजानन्ति माम् मूढाः मानुषीम् तनुम् आश्रितम्। परम् भावम् अजानन्तः मम भूत महा-ईश्वरम् ।।

(मम) मुझको *(भूत)* सारी निर्मित वस्तुओं का *(महा)* सबसे श्रेष्ठ *(ईश्वरम्)* शासक *(परम्)* और सबसे श्रेष्ठ *(भावम्)* निर्माता *(अजानन्तः)* न मानकर *(मूढाः)* मूर्ख लोग *(माम्)* मुझे *(मानुषीम्)* मनुष्यों की तरह *(तनुम्)* शरीर रखने वाली निर्मित वस्तु *(अवजानन्ति)* मानकर *(आश्रितम्)* (मेरी) शरण लेते हैं या भक्ति करते हैं।

• मुझको सारी निर्मित वस्तुओं (ब्रह्माण्ड/सृष्टि) का सबसे श्रेष्ठ शासक और सबसे श्रेष्ठ निर्माता न मानकर मूर्ख लोग मुझे मनुष्यों की तरह शरीर रखने वाली निर्मित वस्तु मानकर (मेरी) शरण लेते हैं या भक्ति करते हैं। (९:११)

• *मोघाशा मोघकर्माणो मोघज़ाना विचेतसः राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनी श्रिताः ।*

मोघ-आशाः मोघ-कर्माणः मोघ-ज़ानाः विचेतसः। राक्षसीम् आसुरीम् च एरां प्रकृतिम्

मोहिनीम् श्रिता: ।

(एव) ईश्वर को (मनुष्य, निर्मित वस्तु, शरीर वाला या मूर्ति समझना) नि:संदेह *(राक्षसीम्)* एक राक्षसाr *(विचेतस:)* सोच या दृष्टिकोण हWW *(च)* और *(मोहिनीम्)* इसी भटकाव व उलझन से *(आसुरीम्)* लोगों ने *(प्रकृतिम्)* शैतानी प्रकृति और शक्ति काr *(श्रिता:)* शरण ले ली है *(मोघ ज्ञाना:)* इसलिए इन लोगों का ज्ञान व्यर्थ हो गया *(मोघ-कर्माण:)* इन के सारे कर्म व्यर्थ हो गए *(मोघ-आशा:)* और इनकी सारी आशाएँ और अपेक्षाएँ व्यर्थ हो गईं।

(ईश्वर को मनुष्य, निर्मित वस्तु, शरीर वाला या मूर्ति समझना) नि:संदेह एक राक्षसी, आसुरी और शैतानी सोच या दृष्टिकोण है, और इसी भटकाव व उलझन से लोगों ने आसुरी यानी शैतानी प्रकृति और शक्ति की शरण ले ली है। (इसलिए इन लोगों का) ज्ञान व्यर्थ हो गया, इनके सारे कर्म व्यर्थ हो गए, और इनकी सारी आशाएँ और अपेक्षाएँ व्यर्थ हो गईं। (९:१२)

- F&MJej ceneve nw~

संजय ने धृतराष्ट्र से कहा,

- *एतत्छुत्वा वचनं केशवस्य*
कृताज्जलिर्वेपमान: किरीटी।
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं
सगद्गदं भीतभीत: प्रणम्य ।।११-३५।।

एतत् श्रुत्वा वचनम् केशवस्य कृत-अञ्जलि: वेपमान: किरीटी।

नमस्कृत्वा भूय: एव आह कृष्णम् सगद्गद्म् भीत-भीत: प्रणम्य ।।३५।।

(एतत) इस तरह *(केशवस्य)* केशव (कृष्ण) के द्वारा, *(वचनम)* (ईश्वर) के आदेश से, *(श्रुत्वा)* सुनकर, *(किरीटी)* किरीटधारी (मुकुटवाला अर्जुन) ने, *(कृत-अन्जलि:)* दोनों हाथों को बाँधकर, *(नमस्कृत्वा)* (ईश्वर को) नमस्कार किया, *(भूय:)* फिर दूसरी बार, *(वेपमान:)* कांपते हुए, *(भीत)* डरते, *(भीत:)* डरते, *(प्रणम्य)* ईश्वर को नमस्कार किया, *(एव)* और फिर, *(कृष्णम)* कृष्ण से, *(स-गन्ददम्)* धीमी आवाज के साथ, *(आह)* कहते हुए (ईश्वर से कहने लगा।)

इस तरह केशव (कृष्ण) के द्वारा (ईश्वर) के आदेश को सुनकर, किरीटधारी अर्जुन ने दोनों हाथों को बाँधकर (ईश्वर को) नमस्कार किया, फिर काँपते हुए, डरते डरते ईश्वर को नमस्कार किया और फिर कृष्ण से धीमी आवाज के साथ कहते हुए, (ईश्वर से कहने लगा।)

संजय ने धृतराष्ट्र से कहा,

- *स्थाने हृषीक-ईश तव प्रकीर्त्या*
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघा: ।।११-३६।।

स्थाने हृषीक-ईश तव प्रकीर्त्या जगत् प्रहृष्यति अनुरज्यते च। रक्षांसि भीतानि दिश: द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्ध-सङ्घा: ।।३६।।

(हृषीकेश) हृषिकेश (कृष्ण) *(स्थाने)* की जगह पर *(इश)* ईश्वर *(तव)* आपका *(प्रक्रीर्त्या)* कीर्ति से *(जगत्)* सारा ब्रम्हाण्ड *(प्रहृष्यति)* खुश हो रहा है *(अनुरज्यते)* प्रेम में डूब गया है *(रक्षांसि)* राक्षस (शैतान) *(भीतानि)* भयभीत होकर *(दिश:)* अलग अलग दिशाओं में *(द्रवन्ति)* भाग रहें हैं *(च)* और *(सर्वे)* सारे *(सिद्ध)* सिद्ध पुरुषों के *(सङ्घा)* समुदाय *(नमस्यन्ति)* नमस्कार कर रहे हैं।

● हृषिकेश (कृष्ण) की जगह पर (अपना तेज दिखाने वाले) हे ईश्वर! आपकी कीर्ति से सारा बह्माण्ड खुश हो रहा है (और) प्रेम में डूब गया है, (और) राक्षस (शैतान लोग) भयभीत होकर अलग अलग दिशाओं में भाग रहें हैं, और सारे सिद्ध पुरुषों के समुदाय नमस्कार कर रहे हैं। (११:३६)

● *कस्माच्च न नमेरन्महात्मन*
गरीयसे ब्रम्हणो ऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास
त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ।।११-३७।।

कस्मात् च ते न नेमरन् महा-आत्मान् गरीयसे ब्रम्हण: अपि आदि-कर्त्रे।
अनन्त देव-ईश जगत् निवास त्वम् अक्षरम् सत-असत् तत्-परम् यत् ।।३७।।

(गरीयसे) हे अपेक्षा से भी महान ईश्वर *(ब्रम्हण:)* (आप निर्माण कार्य की देखरेख करने वाले देवता) ब्रम्हा *(अपि)* से भी *(आदि)* पहले के *(कर्त्रे)* निर्माता हो *(देव)* हे देवताओं के *(ईश)* ईश्वर *(जगत्)* ब्रह्माण्ड काS *(निवास)* सहारा या ठिकाणा देने वाले *(यत्)* क्योंकि *(त्वम्)* आप *(सत्)* स्थित न रहने संसार *(तत्)* और उस *(असत्)* efmLele रहने वाली अन्य लोक से भी *(परम्)* परे जो कुछ है उनके भी *(अक्षरम्)* अविनाशी निर्माता *(कस्मात्)* (तो फिर) क्यों *(महा)* महान *(आत्मन्)* पुरुष (यानी कृष्ण) *(च)* भी *(नमेरन्)* नमस्कार न करे।

● हे अपेक्षा से भी महान, (हे असीम प्रकृति वाले) ईश्वर! (आप निर्माण कार्य की देखरेख करने वाले देवता,) ब्रम्हा से भी पहले के निर्माता हैं। हे देवताओं के ईश्वर! (आप) ब्रह्माण्ड को सहारा या ठिकाना देने वाले हैं, क्योंकि आप स्थित न रहने वाले संसार और उस स्थित रहने वाले अन्य लोक (आखिरत) से भी परे जो कुछ है उनके भी अविनाशी निर्माता हैं, तो फिर क्यों आपको महान पुरुष (यानी कृष्ण) भी नमस्कार न करें?(११:३७)

● *त्वमादिदेव: पुरूष: पुराणस्*
त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ।।११-३८।।

त्वम् आदि-देवः पुरुषः पुराणः त्वम् अस्य विश्वस्य परम् निधानम्। वेत्ता असि वेद्यम् च परम् च धाम त्वया ततम् विश्वम् अनन्त-रूप ।।३८।।

(त्वम्) आप ही *(आदि)* सबसे पहले *(देवः)* ईश्वर हैं *(पुराणः)* सबसे प्राचीन *(पुरुषः)* पुरुष *(त्वम्)* और *(अस्य)* आप ही *(विश्वस्य)* इस ब्रह्माण्ड का *(परम्)* सबसे बड़ा *(निधानाम्)* सहारा हैं *(वेत्ता)* आप सब कुछ जानने वाले *(च)* और *(वेद्यम)* जानने के योग्य *(असी)* हैं *(त्वया)* आपसे ही *(विश्वम)* विश्व की *(अनन्त)* असीम निर्मित *(रूप)* वस्तुओं का *(ततम्)* फैलाव है, *(च)* और, *(परम्)* सबसे श्रेष्ठ (आपसे ही) *(धाम्)* दिव्य स्वर्ग का धाम है।

● आप ही सबसे पहले ईश्वर हैं, (और) सबसे प्राचीन पुरुष हैं। आप ही इस ब्रह्माण्ड का सबसे बड़ा सहारा हैं। आप सब कुछ जानने वाले और जानने के योग्य हैं। आपसे ही विश्व की असीम निर्मित वस्तुओं का फैलाव है और (आप से ही) सबसे श्रेष्ठ व दिव्य (स्वर्ग का) धाम है। (११:३८)

● हे सबसे पहले पैदा होने वाले मनुष्य के शासक! आप वायु, अग्नि, जल और चंद्रमा के रक्षक हैं। सबसे पहले पिता के महान ईश्वर! आपको मैं नमस्कार करता हूँ। आपके आगे सिर झुकाता हूँ। आपको हजार बार नमस्कार करता हूँ और फिर से नमस्कार करता हूँ, फिर से नमस्कार करता हूँ, फिर से और भी सिर झुकाता हूँ। (११:३९)

● आपको सामने से और पीछे से नमस्कार करता हूँ। आपको सब ओर से नमस्कार करता हूँ क्योंकि आप सब कुछ हैं। हे अनन्त प्रकृति वाले ईश्वर! निःसन्देह आपके असीम बल से ही इस संसार को वह सब कुछ प्राप्त हो रहा है और उस परलोक में भी आप की प्रकृति ही से हर वस्तु प्राप्त होगी। (११:४०)

● निःसंदेह आप न दिखाई देने वाले, अचिन्त हैं। आप मूर्ति या रुप के बिना हैं, आपके जैसा कोई नहीं है। ब्रह्माण्ड की जानदार और बेजान वस्तुओं को पैदा करने वाले हैं। सम्मान के योग्य हैं, और गुरु हैं। आपके समान बड़ाई रखने वाला कोई भी नहीं है। तीनों लोकों में आपसे बढ़कर कोई दूसरा कैसे हो सकता है? (११:४३)

● इसलिए हे ईश्वर! मैं अपने शरीर को झुका कर आपको नमस्कार करता हूँ, ताकि आपकी कृपा यानी रहमत पा सकूँ। हे ईश्वर! जिस तरह आदरणीय पिता अपने बेटे के, जिस तरह मित्र अपने मित्र के, प्रेम करने वाले प्रेम करने वालों के अपमान को सहन करते हैं, आपको भी चाहिए कि मेरे दोषों को सहन कर लें। (और मुझे क्षमा कर दें।) (११:४४)

****

8. keäÙee F&MJej pevce ueslee nw?

● क्या हिन्दू धर्म में पैगम्बर (संदेष्ठा) हुए हैं?

● ईश्वर ने सृष्टि की रचना करके जब से पृथ्वी पर मनुष्यों को बसाया तभी से मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिए समय समय पर अपना कोई न कोई प्रतिनिधि भेजता रहा। जिसको मनु, संदेष्ठा या पैगम्बर कहते हैं। मगर लोग उनके जाने के बाद ईश्वर के आदेशों और संदेशों में परिवर्तन कर डालते थे। ईश्वर दयालू है। वह मानवजाति के कल्याण के लिए एक के बाद दूसरे मनु भेजकर बदले हुए आदेशों में सुधार करता रहता। इस प्रकार एक लाख से अधिक मनु या ईश्वर के प्रतिनिधि इस धरती पर इन्सानों के सुधार के लिए आ चुके हैं।

ईश्वर के सच्चे भक्तों का यह कर्तव्य है कि वह जिस वर्तमान युग में हैं उस युग के लिए भेजे गए मनु की सिखाई गई शिक्षा के अनुसार ही ईश्वर की भक्ति करें।

● श्री कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि,

प्राचीन काल के सात बड़े ऋषि और मनु की पीढ़ी से भेजे जाने वाले चौदाह (ऋषि) विचार करते हुए मेरी इच्छा पर चलने वाले थे। इस संसार में यह सारी मानवजाति सबसे पहले निर्माण किये जाने वाले मनुष्य से और उन (ऋषियों की पीढ़ी) से ही पैदा हुए हैं।

(गीता अध्याय १०, श्लोक ६)

● कुछ विद्वानों का ऐसा मानना है की मनु की पीढ़ी से भेजे जाने वाले चौदह ऋषि यह भी मनु की तरह ईश्वर के संदेष्ठा थे। इस युग के और सबसे अन्तिम मनु (संदेष्ठा) महामे ऋषि हैं।

कुछ मनु या ईश्वर के प्रतिनिधि या संदेष्ठा जिन के बारे में पढ़ा है वह निम्नलिखित हैं;

meye mes henues ceveg:-

भगवद्गीता का एक श्लोक इस तरह है;

● हे सबसे पहले पैदा होने वाले मनुष्य के शासक! आप वायु, अग्नि, जल, और चंद्रमा के रक्षक हैं। सबसे पहले पिता के हे महान ईश्वर! आपको मैं नमस्कार करता हूँ। आपके आगे सिर झुकाता हूँ, फिर से और भी सिर झुकाता हूँ। (११:३९)

इस श्लोक में जिसे सबसे पहले पैदा होने वाले मनुष्य और पहले पिता कहा गया है उनको ऋग्वेद में मनु कहा गया है वह श्लोक इस प्रकार है;

जनं मनुजातं। (ऋग्वेद १:४५:१)
सब मनु की सन्तान हैं।

● इस पहले मानव को क़ुरआन में हज़रत आदम और बाईबल में Adam कहा गया है।

● भविष्य पुराण में भी इन पहले मानव को आदम कहा गया है। भविष्य पुराण में आदम का वर्णन इस प्रकार है;

भविष्य पुराण में कहा गया है कि आदम और हव्वावती को विष्णु ने गीली मिट्टी से पैदा किया। प्रदान नगर (स्वर्ग) के पूर्व हिस्से में,

ईश्वर द्वारा बनाया गया ४ कौस का एक बहुत बड़ा जंगल था। (कौस किलोमीटर से बड़ा होता है) अपनी पत्नी (हव्वावती) को देखने की बेताबी से आदम गुनाहवाले वृक्ष के नीचे गए। तभी सांप की शक्ल बनाकर वहाँ कलि (शैतान) प्रकट हुआ। उस चालाक दुश्मन के ज़रिए आदम और हव्वावती ठग लिए गए और उस विषवृक्ष के फल को आदम ने खा लिया और उन्होंने विष्णु के हुक्म को तोड़ डाला। परिणाम स्वरुप उनको पृथ्वी पर भेज दिया गया। उन दोनों को बहुत सी संताने हुईं। आदम की आयु ९३० वर्ष थी। (भविष्य पुराण, ३)

दूसरे मनु का वर्णन ग्रन्थों में इस प्रकार है।

otmejs ceveg :-

● मार्कण्डेय पुराण, भविष्य पुराण, मत्स्य पुराण में है, कि मनु के काल (युग) में एक बहुत बड़ा बाढ़ (Flood) आया था। जिसमें केवल मनु और एक ईश्वर को मानने वाले लोगों को छोड़कर सभी लोग इस बाढ़ में डूबकर मर गए थे।

● मनु ने अपने हाथों से एक नाव बनायी थी और उसमें वह खुद सवार हुए और एक ईश्वर को मानने वालों को सवार कर लिया और हर जाति के प्राणियों के दो-दो जोड़ों को सवार किया। यही लोग जिंदा बचे और सारी दुनिया इस सैलाब में डूब कर मर गई थी। (मत्स्य पुराण, अध्याय १, श्लोक २९-३५)

● यही बात क़ुरआन में भी लिखी है (पवित्र क़ुरआन सूरह नं. ११, आयत २५ से ४८ तक) यही बात बायबल में भी लिखी है। (जेनिसीस ६-८)

● दुनिया के सभी धर्मों के ईश्वरी ग्रंथों में एक ही बाढ़ का वर्णन है, और उस बाढ़ में एक ही नाव का वर्णन है, जिसमें एक ईश्वर को माननेवाले (अनुयायी) अपने एक पैगम्बर के साथ बच गए थे।

● इसलिए संस्कृत के विद्वान डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय कहते हैं कि कुरआन में जिस पैगम्बर को हज़रत नूह कहा गया है। बायबल में जिसको Noah कहा गया है, और भविष्य पुराण में जिसे मनु कहा गया है, वह एक ही इन्सान हैं, और इन्हीं को हिन्दू धर्म के अन्य ग्रंन्थों में न्युह के नाम से भी जाना जाता है। (''वेदों और पुराणों के आधार पर एकता की ज्योति'' लेखक डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय)

● हिन्दू धर्म के ग्रन्थों में अबी राम (हज़रत इब्राहीम) अथर्वा (हज़रत इस्माईल) इत्यादी का वर्णन भी है। और महामे ऋषि (हज़रत मुहम्मद) की भविष्यवाणी ३१ बार है। आप उनके बारे में डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय की पुस्तक ''वेदों और पुराणों के आधार पर एकता की ज्योति'' में पढ़ लीजिए। यह पुस्तक मेरी वेब साईट पर उपलब्ध है।

क्या ईश्वर जन्म लेता हैं?

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अद् भूतथानाय अर्धमस्य तदात्म्यम् सृजानम्यहम् ।(४-७)
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।(४-८)

इस श्लोक का लोग ऐसा अर्थ बताते हैं कि, जब जब पृथ्वी पर अधर्म फैलेगा तो धर्म की स्थापना के लिए मैं (ईश्वर)जन्म लूँगा।

तो क्या इस श्लोक से ईश्वर का जन्म लेना सिद्ध नहीं होता है?

Fme ØeMve kesâ mener Gòej kesâ efueS nce YeieJeodieerlee kesâ Fve oes MueeskeâeW keâer JÙeeKÙee efJemleej mes keâjles nQ~

mJeeceer megKejece cenejepe keâer JÙeeKÙee:-

● स्वामी सुखराम महाराज ने इन दोनों श्लोकों की व्याख्या अपनी पुस्तक साधक संजीवनी में इस प्रकार की है;

● *यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत*
अद् भूतथानाय अर्धमस्य तदात्म्यम् सृजानम्यहम् ।(४-७)

● *यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि भवति भारत। अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदा आत्मानम् सृजामि अहम् ।।७।।*

● *(भारत)* हे भारतवंशी अर्जुन!, *(यदा, यदा)* जब-जब, *(हि)* ही, *(धर्मस्य)* धर्म की, *(ग्लानिः)* हानि (और) *(भवति)* होती है, *(अभ्युत्थानम्)* वृद्धि, *(अधर्मस्य)* अधर्म की *(तदा)* तब-तब, *(आत्मानम्)* अपने आपको *(अहम्)* मैं *(सृजामि)* (साकार रुप से) प्रकट करता हूँ।

हे भरतवंशी (अर्जुन)! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब ही मैं अपने आपको साकार रुप से प्रकट करता हूँ। (४-७)

● *परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।(८)*

परित्राणाय साधुनाम् विनाशाय च दृष्कृताम्। धर्म संस्थापन अर्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

(साधूनाम्) साधुओं (भक्तों) की, *(परित्राणाय)* रक्षा करने के लिये, *(दुष्कताम्)* पापकर्म करनेवालों का, *(विनाशय)* विनाश करने के लिये, *(च)* और *(धर्मसंस्थापनार्थाय)* धर्म की भलीभाँति स्थापना करने के लिये (मैं), *(युग, युगे)* युग-युग में *(सम्भवामी)* प्रगट हुआ करता हूँ।

साधुओं (भक्तों की) रक्षा करने के लिये, पापकर्म करनेवालों का विनाश करने के लिये और धर्म की भलीभाँति स्थापना करने के लिये मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

[e@. meeefpeo keâer JÙeeKÙee:-

● डॉ. साजिद सिद्दीकी ने अपनी पुस्तक में इन श्लोकों की व्याख्या इस प्रकार की है।

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अद् भूतथानाय अर्धमस्य तदात्म्यम् सृजानम्यहम् । (४-७)

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि भवति भारत। अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदा आत्मानम् सृजामि अहम् ।।७।।

(भारत) हे भारतवंशी (अर्जुन)! *(हि)* निःसंदेह *(यदा)* जब *(यदा)* जब *(धर्मस्य)* धर्म

में *(ग्लानि:)* कमी व गिरावट *(भवति)* होने लगती है *(अधर्मस्य)* और अधर्म *(अभ्युत्थानम्)* बढ़ने लगता है *(तदा)* उस समय *(अहम्)* मैं *(आत्मानम्)* स्वय: *(सृजामि)* (अपने उपदेश और अपना ज्ञान) प्रदान करता हूँ।

''हे भारतवंशी (अर्जुन)! नि:संदेह, जब जब धर्म में कमी व गिरावट होने लगती है और अधर्म बढ़ने लगता है, उस समय मैं स्वयं (अपने उपदेश और अपना ज्ञान) प्रदान करता हूँ। (गीता ४-७)

● *परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ।। (८)*

परित्राणाय साधुनाम् विनाशाय च दृष्कृताम्। धर्म संस्थापन-अर्थाय सम्भवामि युगे युगे ।।

(परित्राणाय) सुरक्षा करने के लिए, *(साधूनाम्)* कल्याणकारी कर्मों को करने वाले लोगों की, *(दुष्कताम्)* बिगाड़ करने वाले लोगों से, *(विनाशय)* विनाश करने के लिए, *(धर्म)* धर्म का, *(अर्थाय)* के लिए, *(संस्थापर्न)* धर्म को पुन:स्थापित करने के लिए, *(युगे)* युग, *(युगे)* युग में, *(सम्भवामी)* ऋषियों से वार्तालाप करता हूँ।

कल्याणकारी कर्मों को करने वाले लोगों की सुरक्षा करने के लिए, बिगाड़ वाले बुरे कार्य करने वालों का विनाश करने के लिए, और धर्म को पुन: स्थापित करने के लिए, मैं युग युग में (ऋषियों से) वार्तालाप करता हूँ।

efJeMues<eve (Analysis):-

● श्लोक नं ४:७ में महत्त्वपूर्ण शब्द जो श्लोक के अर्थ को बदल देता है वह है **सृजामि** और श्लोक नं ४:८ में **सम्भवामी**।

● कलकत्ता से छपी ईश्वर चन्द्र की हिन्दी संस्कृत डिक्शनरी में सृजामि के बहुत सारे अर्थ लिखे हुए हैं जैसे; रचना करना, पैदा करना, जाने देना, पहनना, (उत्सर्ज) दान करना (प्रदान करना), फेकना, त्याग करना, छोड़ देना, इत्यादि।

● 'सम्भवामी' का अर्थ है वार्तालाप करना यानी To Communicate यानी कुछ कहना।

● 'सम्भवामी'' से मिलताजुलता एक शब्द है सम्भाव उसके बहुत सारे अर्थ हैं, जैसे मिलाप करना, परिचय देना, संगति, साथ देना, जन्म, उत्पत्ति, उगना, इत्यादि।

● स्वामी सुखरामजी ने सृजामि और सम्भवामी इन दोनों का अर्थ ईश्वर का प्रकट होना ऐसा लिखा है। और डॉ.साजिद ने सृजामि का अर्थ प्रदान करना और सम्भवामी का अर्थ वार्तालाप करना ऐसा लिखा है।

● मैं कुछ तथ्य आप के सामने रखता हूँ, आप स्वयं सोचिए की कौन सी बात आप के दिल में उतरती है।

keäÙee F&MJej Demeheâue nes

mekeâlee nw? :-

● भारत देश की सभ्यता बहुत प्राचीन है। किन्तु भारतीय सभ्यता ही अकेले विश्व की प्राचीन सभ्यता नहीं है। इराक, मिस्र (Egypt) और फिलस्तीन के आस पास की सभ्यता भी बहुत प्राचीन है।

इन सारे जगहों पर लोग प्राचीन काल से आबाद थे और बहुत समृद्ध और खुशहाल थे। जब समाज में समृद्धि बढ़ती है तो बुराई, अन्याय, और अधर्मता भी बढ़ती है।

बाईबल और कुरआन में लिखा है कि जब इन प्रांतों में अधर्म बड़ा तो ईश्वर ने अपने प्रतिनिधि भेजे। उनमें से कोई ईश्वर के लिखित आदेशों के साथ आया और किसी ने केवल अपने मुख से ईश्वर के आदेश को मानवजाति तक पहुँचाया। मगर कुछ ईश्वर के प्रतिनिधि समाज में धर्म को फिर से स्थापित करने में सफल न हुए। किसी समाज ने ईश्वर के आदेश को माना और किसी ने न माना।

हज़रत इसा (Jesus christ) जब धरती से आसमान पर गए उस समय उनके केवल ७२ अनुयायी थे। और उनके समाज ने उनका वध करने का पूरा प्रयास किया था। इसलिए केवल ३३ वर्ष की आयु में ही उन्हें ईश्वर ने धरती से आसमान पर बुला लिया।

लम्बे समय तक ईश्वर के बहुत से प्रतिनिधि मानवजाति को ईश्वर का उपदेश देते रहते थे, और जब किसी समाज के लोग नहीं मानते तो वह थक हार कर ईश्वर से आग्रह करते हैं कि हे ईश्वर! इनको सुधारना मेरे बस की बात नहीं है। इसलिए अब आप खुद ही इनसे निपट लें।

तो ऐसा बहुत बार हुआ की ईश्वर ने उन सारे समुदाय को नष्ट कर दिया जो ईश्वर के प्रतिनिधि और ईश्वर की आज्ञा नहीं मानते थे। हजारों वर्ष पूर्व जो समुदाय ईश्वर के क्रोध से नष्ट हुई उनकी निशानियां आज भी बाकी हैं।

(समूद नाम का समुदाय जो ईश्वरी प्रकोप से नष्ट कर दिया गया, उस समुदाय के घरों के चित्र पेज नं. १२ पर हैं।)

● मनु के युग में जो बाढ़ आयी थी, वह भी ईश्वर का क्रोध था क्योंकि कुछ लोगों को छोड़कर किसी ने मनु की शिक्षा को स्वीकार नहीं किया था। तो ईश्वर ने मनु और मनु के अनुयायियों को छोड़ कर बाकी सभी अधर्मियों को धरती से ही खत्म कर दिया।

अब दो फलसफे (Philosophy) या श्रद्धा या (Belief) आपके सामने है।

श्रद्धा नं. १) जब जब समाज में अधर्म बहुत बड़ जाता है तो ईश्वर अपने प्रतीनिधि को फिर से सत्य धर्म की स्थापना के लिए भेजता है। मगर कभी कभी यह प्रतिनिधि धर्म की स्थापना में समाज की हटधर्मी

और विरोध के कारण असफल भी होता है।

(ऐसा वास्तव में बहुत बार हो चुका है। आद, समूद, लूत और नूह का समुदाय इस का उदाहरण है।)

श्रद्धा नं. २) जब जब समाज में अधर्म बहुत बढ़ जाता है तो ईश्वर स्वयम् मानव रुप में धर्म कि स्थापना के लिए जन्म लेता है। मगर कभी कभी वह समाज की हटधर्मी और विद्रोह के कारण धर्म की स्थापना में विफल भी हो जाता है।

ऊपर वर्णन किए गए दो बातों में से कौन सी बात आपके दिल में उतरती है?

क्या आप पहले और आखरी बुद्ध को पहचानते हों?

● गौतम बुद्ध ने अपने भक्त नंदा से कहा ''हे नंदा! इस दुनिया में मैं पहला बुद्ध नहीं हूँ और न ही मैं आखरी हूँ। आने वाले समय में, इस दुनिया में एक और बुद्ध आएगा, जो सच्चाई और दानता सिखाएगा। शुद्ध और पवित्र शिक्षाएं देगा। उसका दिल निर्मल होगा। वह ज्ञानी होगा। वह लोगों का नेतृत्व करेगा और सभी लोग उससे मार्गदर्शन लेंगे। वह सत्य सिखाएगा। वह दुनिया को जीवन का सही रास्ता देगा, जो शुद्ध और पूर्ण होगा। हे नंदा, उसका नाम मैत्रेय होगा।'' (Gospel of Buddha by carus Page 217)

● अगर गौतम बुद्ध पहले और आखरी बुद्ध नहीं हैं तो क्या आप उनसे पहले और उनके बाद आने वाले एक भी बुद्ध का नाम बता सकते हैं?

नहीं?

क्यों नहीं?

आप इस प्रश्न का उत्तर इसलिए नहीं दे सकते हैं, क्योंकि आप पहले और आखरी बुद्ध को केवल बुद्ध धर्म में ही तलाश करेंगें।

● बुद्ध का भावार्थ है Enlightened Person या वह व्यक्ति जिसे ईश्वर ने मानव कल्याण के लिए अपनी ओर से ज्ञान दिया हो।

अब इस दृष्टिकोण के साथ अगर आप विश्व में पहले या बाद में आने वाले बुद्ध को तलाश करोगे तो आप को कई बुद्ध हर प्रांत और हर धर्म में मिलेंगे।

● ऋग्वेद में लिखा है कि;

अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि
ईश्वर के विधान नहीं बदलते।
(ऋग्वेद ०१-२४-९०)

● अथर्ववेद में लिखा है;

न किरस्य प्रभिनन्ति व्रतानि
ईश्वर के नियम कोई नहीं बदल सकता।
(अथर्ववेद १८-०१-०५)

● तो यह ईश्वर का नियम है कि वह मानवजाति के मार्गदर्शन और धर्म की स्थापना के लिए बार बार बुद्ध (Enlightened Person) को भेजता रहता है। और ईश्वर के नियम नहीं बदलते। ईश्वर ऐसा नहीं करता है कि अन्य धर्म के लोगों के लिए तो बुद्ध और पैगम्बर भेजे और भारतवासियों के लिए कभी मनु भेजे और कभी खुद जन्म लेकर आ जाए।

(yeekeaer hespe 88 hej)

9. ßeer ke=â<Ce peer keâewve nQ?

श्री कृष्ण जी कौन हैं?

१) श्री कृष्ण जी ने अर्जुन से कहा कि;

● अविनाशी विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
विनाशमव्ययस्यास न कश्चित्कर्तुमर्हति।।२-१७।।

● अविनाशी तु तत् विद्धि येन सर्वम् इदम् ततम। विनाशम् अव्ययस्य अस्य न कश्चित कर्तुम अर्हति।।

● (तु) लेकिन, (तत्) (तुम) उसको (ईश्वर को), (अविनाशी) अविनाशी, (विद्धि) समझो, (येन) जिसके द्वारा, (इदम्) इस, (सर्वम) सारे (संसार का), (ततम्) फैलाव है, (अस्य) उस, (अव्ययष्य) अविनाशी (ईश्वर का), (विनाशम्) विनाश, (कर्तुम) करने की, (अर्हति) शक्ति, (कश्चित) किसी में भी, (न) नहीं है।

● लेकिन तुम उस ईश्वर को अविनाशी समझो, जिसके द्वारा इस सारे संसार का फैलाव है। उस अविनाशी ईश्वर का विनाश करने की शक्ति किसी में भी नहीं है। (२:१७)

● यह श्लोक इस वास्तविकता (Fact) को स्पष्ट करता है की ईश्वर एक अलग हस्ताr (Entity) है, और श्री कृष्ण जी एक अलग हस्ती हैं। और श्री कृष्ण जी ईश्वर की महानता का वर्णन कर रहे हैं।

२) अर्जुन ने श्री कृष्ण के द्वारा ईश्वर सs

hetÚe:

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्
गरीयसे ब्रह्मणों ऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास
त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ।।११-३७।।

● कस्मात् च ते न नेमरन् महा-आत्मन् गरीयसे ब्रम्हणः अपि आदि-कर्त्रे।
अनन्त देव-ईश जगत-निवास त्वम् अक्षरम्
सत्-असत् तत्-परम् यत् ।।

● (गरीयसे) ऐ अपेक्षा से भी महान (अनन्त) असीम प्रकृति वाले ईश्वर! (ब्रम्हणः) ब्रम्हा (अपि) से भी (आदि) पहले के (कर्त्रे) निर्माता (देव) ऐ देवताओं के (ईश) ईश्वर (जगत्) ब्रह्माण्ड को (निवास) सहारा या ठिकाना देने वाले हो (यत्) क्योंकि (त्वम्) तुम या आप (सत्) स्थित न रहने वाला संसार (तत्) और उस (असत्) स्थित रहने वाले अन्य लोक (परम) (के) परे जो कुछ है उनके भी (अक्षरम्) अविनाशी निर्माता (कस्मात्) तो फिर (क्यों) (ते) आपको (महा) महान (आत्मन्) पुरुष यानी कृष्ण (च) भी (नमेरन) नमस्कार (न) न करें।

● (१)"हे अपेक्षा से भी महान (२) हे असीम प्रकृति वाले ईश्वर! (३) (आप निर्माण कार्य की देखरेख करने वाले देवता,) ब्रम्हा से भी पहले के निर्माता हैं। हे देवताओं के ईश्वर आप ब्रह्माण्ड को सहारा या ठिकाना देने वाले हैं, क्योंकि आप स्थित

न रहने वाले संसार और उस स्थित रहने वाले अन्य लोक (आखिरत) से भी परे जो कुछ है उनके भी अविनाशी निर्माता हैं, **तो फिर क्यों आपको महान पुरुष (यानी कृष्ण) भी नमस्कार न करें?**'' (११:३७)

● इस श्लोक से प्रमाणित होता है कि अर्जुन भी इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि ईश्वर एक अलग और महान हस्ती (Entity) है। और श्री कृष्ण जी जो कि एक महान पुरुष हैं मगर उनको भी महान ईश्वर को नमन (प्रार्थना) करना चाहिए।

3) बहुना जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते। वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।।७-१९।।

● बहूनाम् जन्मनाम् अन्ते ज्ञान-वान् माम् प्रपद्यते। वासुदेवः सर्वम् इति सः महा-आत्मा सु-दुर्लभः।।

● (इति) इस तरह, (अन्ते) मौत तक, (सर्वम्) सारे कर्मों को, (माम्) (केवल) मेरे, (प्रपघते) सहारे पर करने वाले, (वासुदेव) वासुदेव (श्री कृष्णजी), (सः) के जैसा, (महाआत्मा) महान मनुष्य, (बहुनाम) बहुत सारे, (जन्मनाम) पैदा होने वाले मनुष्यों और, (ज्ञानदान) ज्ञानियों में से, (सु-दुर्लभ) (कोई एक) अत्यंत दुर्लभ है।

● इसी तरह मौत तक, सारे कर्मों को केवल मेरे (ईश्वर के) सहारे पर करने वाले **वासुदेव (यानी कृष्ण) के जैसा महान मनुष्य** बहुत सारे पैदा होने वाले मनुष्यों और ज्ञानियों में से (कोई एक) अत्यंत दुर्लभ है। (७:१९)

● इस श्लोक में ईश्वर ने श्री कृष्ण जी की एक महान मनुष्य की हैसियत से प्रशंसा की है। यानी श्री कृष्ण भी मानव ही हैं। मगर एक महान मानव।

४) संजय ने धृतराष्ट्र से कहा कि;

● *इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः।*
संवादमिममश्रौषमभ्दुतं रोमहर्षणम् ।।१८-७४।।

● *इति अहम् वासुदेवस्य पार्थस्य च महाआत्मनः।*
संवादम् इमम् अश्रौषम् अभ्दुतम् रोम-हर्षणम् ।।

● *(च)* और *(इति)* इस तरह *(अहम्)* मैंने *(महा)* महान *(आत्मनः)* मनुष्य *(वासुदेवस्य)* वासुदेव (कृष्ण की) *(पार्थस्य)* पार्थ (अर्जुन की) *(अभ्दुतम्)* अद्‌भुत *(रोम)* और रोंगटे *(हर्षणम्)* खड़े कर देने वाली *(इमम्)* इस *(संवादम्)* वार्ता *(अश्रौषम्)* सुना।

● और इस तरह मैंने **महान मनुष्य वासुदेव** (यानी कृष्ण) की और पार्थ (यानी अर्जुन) की अद्‌भुत और रोंगटे खड़े कर देने वाली इस वार्ता को सुना। (१८:७४)

5) संजय ने धृतराष्ट्र से कहा कि;

● *यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।*
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।।१८-७८।।

● *यत्र योग-ईश्वरः कृष्णः यत्र पार्थः धनुः धरः।*

तत्र श्रीः विजयः भूतिः ध्रुवा नीतिः मतिः मम।।

● *(यत्र)* जहाँ (ईश्वरः) ईश्वर से *(योग)* सम्पर्क रखने वाले *(कृष्णः)* कृष्ण है *(यत्र)* और जहाँ *(धनुः)* धनुष *(धरः)* रखने वाले *(पार्थः)* अर्जुन *(तत्र)* वहाँ *(श्रीः)* पूर्णतया सुख और शान्ति *(विजयः)* विजय *(भूतिः)* अच्छा भाग्य *(नीतिः)* सही नीति *(ध्रुवा)* और सब्र *(मम)* ऐसा मेरा *(मति)* मानना है।

● जहाँ **ईश्वर से सम्पर्क रखने वाले कृष्ण** हैं और जहाँ धनुष रखने वाले पार्थ (अर्जुन) हैं, वहाँ पूर्णतया सुख और शान्ति, विजय, अच्छा भाग्य, सही नीति, और धैर्य यानी सब्र है, ऐसा मेरा मानना है। (१८:७८)

● ऊपर बताए गए दोनों श्लोंकों में से एक श्लोक में खुद संजय जिसने पूरी महाभारत को अपनी आंखों से देखा है, श्री कृष्ण जी को महान मानव और दूसरे श्लोक में ईश्वर से सम्पर्क रखने वाले कह रहे हैं।

● श्री कृष्ण जी ने श्री विष्णु पुराण में कहा है;

नाह देवो न गन्धर्वो न यक्षो न च दानवः।
अहं वो बान्धवों जाती
नैताच्चिन्त्यमितोहन्यथ।

(श्री विष्णु पुराण ५/२३/१२)

अनुवाद : मैं न देव हूँ न गन्धर्व हूँ, न यक्ष हूँ और न दानव हूँ। मैं तो आपके बन्धू (दोस्त) स्वरुप से ही उत्पन्न हुआ हूँ। आप लोगों को इस विषय में और कुछ विचार न करना चाहिए।

सारांश :-

● ऊपर लिखे हुए सभी श्लोकों को पढ़कर जो बात स्पष्ट होती है वह इस तरह है;

१. श्लोक नं २:१७, ११:३७ के अनुसार ईश्वर महान है। जिस ने ब्रह्माण्ड का निर्माण किया है।

२. श्लोक नं ७:११ के अनुसार

३. श्री कृष्ण जी ऐसे महान पुरुष थे की ईश्वर ने उनकी प्रशंसा की है।

४. श्लोक नं १८:७८ के अनुसार श्री कृष्ण जी ईश्वर से सम्पर्क रखने वाले थें। श्लोक नं ७:११ और १८:७८ के अनुसार श्री कृष्ण जी ईश्वर के आदेश के अनुसार कर्म करने वाले और समाज में धर्म और शांति स्थापित करने वाले थें।

****

(hespe 13 mes F&MJejer %eeve keâe cenòJe)

मनमानी जीवनशैली अपनाता है। तब वह व्यक्ति जैसे ईश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिए वैसे वह अपने मन की आज्ञा का पालन करता है। इसलिए मनमानी जीवनशैली अपनाने को शिर्क जैसा पाप करने इतना बुरा कहा गया है।

''इच्छा भक्ति'' का अर्थ है कि व्यक्ति का जो मन चाहे वही वह करे। चाहे वह काम गलत ही क्यों न हो।

****

10. ßeer jeceÛebõ peer keâewve nQ?

● भगवद्‌गीता का एक श्लोक इस प्रकार है;

श्रीकृष्ण जी ने कहा (हे अर्जुन) लेकिन वास्तविकता (Fact) तो यह है कि कोई भी ऐसा युग नहीं रहा है जब मैं न रहा हूँ, तुम न रहे हो, और मनुष्यों पर अत्याचार करने वाले वो (दुष्ट लोग) न रहे हों। और (नि:सन्देह) आगे वर्तमान में भी इससे आगे भी ऐसा नहीं होगा जब हम सब न रहें। (२: १२)

● श्री कृष्ण जी ने द्वापर युग में जन्म लिया। आपने उस युग में दुष्ट शक्तियों से युद्ध किया और उन्हें पराजित किया। और समाज में धर्म और शांति की स्थापना की।

● श्री कृष्ण जी से पहले श्री रामचंद्र जी ने त्रेता युग में जन्म लिया है। द्वापर युग में श्री कृष्ण जी ने जिस स्थिति में थे और समाज के लिए जो जिम्मेदारी आप पर थी, उसी स्थिति में श्री रामचंद्र जी त्रेता युग में थे और वही मानवता के मार्गदर्शन की जिम्मेदारी आप पर थी।

● श्री कृष्ण जी के युग में दुर्योधन अधर्म का प्रतीक था, तो श्री रामचंद्र जी के युग में रावण अधर्म का प्रतीक था। और जैसे सदैव सत्य की विजय होती है उसी तरह सैनिक बल कम होने के बावजूद रामचंद्र जी विजयी रहे।

● मैंने रामायण देखी है, इसलिए उनके जीवन से तो परिचित हूँ। मगर जैसे भगवद्‌गीता से श्री कृष्ण जी के उपदेश का ज्ञान होता है। ऐसे मैंने श्री रामचंद्र जी की कोई उपदेशों की पुस्तक नहीं पढ़ी है। और श्री रामचंद्र जी के बारे में वेदों में कुछ नहीं लिखा है, इसलिए जो कुछ मैं जानता हूँ वह इस तरह है। श्री रामचंद्र जी राजा दशरथ के आदर्श पुत्र थे। आपने अपने माता-पिता का कहना हमेशा माना। आप एक आदर्श भाई भी थे। आपने अपने भाइयों का अपने आप से ज्यादा ख्याल रखा। श्री रामचंद्र जी एक आदर्श पति और एक आदर्श राजा भी थे। इसलिए आपको आदर्श पुरुष कहा जाता है। मेरा ऐसा अनुमान है कि जो कुछ हमने श्री कृष्ण जी के बारे में पिछले अध्याय में पढ़ा वही बातें श्री रामचंद्र जी के लिए भी होंगी।

● श्री रामचंद्र जी के दो उपदेशों को मैं जानता हूँ। जिससे यह मालुम होता है कि भले ही सारे हिन्दू भाई श्री रामचंद्र जी को ईश्वर मानते हैं। मगर स्वयम श्री रामचंद्र जी ने खुद को ईश्वर नहीं कहा, बल्कि आप ने भी एक निराकार ईश्वर की प्रार्थना करने की शिक्षा दी थी। वह दो उपदेश इस प्रकार हैं;

१) १४ साल के वनवास में हनुमान जी ने श्री रामचंद्र जी से पूछा कि में ईश्वर की

प्रार्थना कैसे करुं? तो श्री रामचंद्र जी ने कहा;

● *प्रथम: ताराक: चयवादितिय दंड मुच्यते तीतय कुंडला कारमचतुर्थ अर्धे चन्द्रक: पंच बिल्दु संयुक्त ओउ्म मित्यज्योती रुपका।*

(श्री रामतत्वामृत)

● **अर्थात्:-** पहले सीधे खड़े हो जाओ। फिर दंडवत (सजदा) करो, फिर सीधे बैठ जाओ। फिर आधे चांद की तरह सामने झुक जाओ। फिर सीधे बैठ जाओ और ईश्वर के स्मरण में ध्यान लगाओ। (यानी एक निराकार ईश्वर की प्रार्थना करो।)

● इस श्लोक पर ध्यान दीजिए। चौदह साल के वनवास में जब हनुमान जी ने श्री रामचंद्र जी से पूछा कि मैं ईश्वर की प्रार्थना कैसे करुं? तो श्री रामचंद्र जी ने ऐसा उत्तर नहीं दिया कि तुम खुद ईश्वर हो। क्योंकि आने वाले ज़माने में लोग तुम को पूजेंगे। न उन्होंने कहा कि तुम मेरी प्रार्थना करो क्योंकि मैं भी ईश्वर हूँ। बल्कि श्री रामचंद्र जी ने एक निराकार ईश्वर की प्रार्थना का तरीका सिखाया।

२) श्री रामचंद्र जी ने अपने अनुयायियों को एक मन्त्र कहा था, जिसे श्री रामचंद्र जी का पार लगाने वाला मन्त्र, या मुक्ति दिलाने वाला मन्त्र, या ''तारक मन्त्र'' कहते हैं। वह मन्त्र इस तरह है।

''रां रामयनम'' ''तारक मन्त्र'' (नालन्दा विशाल सागर पं. ११७५)

''रां'' को राम पढ़ते है। क्योंकि ऊपर लगाया हुआ बिन्दु मां के स्वर में पढ़ा जाता है। इस मन्त्र का अर्थ है कि राम (श्री रामचंद्र जी) के राम (ईश्वर) की प्रार्थना करो।

● इस राम तारक मन्त्र में श्री रामचंद्र जी के साथ ईश्वर को भी राम कहा गया है। इसी तरह ऋग्वेद के श्लोक में एक पैगम्बर या ऋषि को भी राम कहा गया है। नालन्दा विशाल शब्द सागर (शब्दकोश) में राम का अर्थ ईश्वर भी है। इस लिए मुझे ऐसा लगता है कि राम शब्द यह ईश्वर का उसके स्वभाव के अनुसार नाम है।

● ऋग्वेद का वह श्लोक जिसमें एक पैगम्बर या ऋषि को राम कहा गया है इस प्रकार है;

प्र तद् दुशीमें पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवत्सु। (ऋग्वेद १४-९३-१०)

संस्कृत शब्दों के अर्थ इस प्रकार हैं।

प्रतद्: वह, उस (३)
दुशीमे: जिसे पराजित नहीं किया जा सकता (३)
पृथवाने: पृथ्वी का वन
वेन: धरती का नाभ, केन्द्र (Center of earth) (२)
प्र राम: परदेसी राम या प्रलोक का राम, दैविक राम
प्रवोचम: वर्णन करु, कहूँ (३)
सुर: ऋषि (१)

मघ: एक टापू का नाम जहाँ गैर आर्या (मलिच्छ) रहते थे। (१) (मख) मक्का

वत्सु: बेटा, सपूत (१)

इस मन्त्र की व्याख्या इस प्रकार है;

(मैं) उस अपराजित ऋषि, धरती के नाभ, मक्का के सपूत (दैविक या) परदेसी राम का वर्णन करुँ।

(इस मन्त्र की व्याख्या में तीन शब्द कोश की सहायता से ली गई है। उनके नम्बर शब्द के अर्थ के सामने लिखे हुए हैं।

(१) नालन्दा विशाल शब्द सागर (२) सर मोनियर संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी (३) वेदों का आर्य समाज की व्याख्या।)

ऋग्वेद के निम्नलिखित श्लोक में धरती के केन्द्र पर मख कहा गया है। इसलिए इस श्लोक में धरती के केन्द्र को मक्का ही समझा है।

● श्री रामचन्द्र जी कभी अरब देश नहीं गए इसलिए इस मन्त्र में आप का वर्णन नहीं है। और न यह राम शब्द ईश्वर के लिए है। इसलिए यहाँ राम नाम से किसी ऋषि या पैगम्बर को सम्बोधित किया गया है।

● अयोद्धा के राजा, राजा दशरथ इस राम नाम के अर्थ को जानते थे। इसलिए उन्होंने अपने बड़े बेटे का नाम राम नहीं रखा, बल्कि रामचंद्र रखा अर्थात् राम का चंद्रमा (या राम का प्रिय या ईश्वर का प्रिय।) (अपने प्रिय को लोग आदर से चांद कहते हैं।)

तो श्री रामचंद्र जी का नाम केवल राम नहीं बल्कि श्री रामचंद्र जी था। और तारक मन्त्र में श्री रामचंद्र जी ने उसी राम की (ईश्वर की) प्रार्थना करने के लिए कहा है, जिस के आप प्रिय थे।

● मंदिरों में सुबह सब से पहले जो मन्त्र पढ़ा जाता है उसे सुप्रभात मन्त्र कहते है। वह निम्नलिखित है।

कौसल्यासुप्रजा राम पूरवा संध् या प्रवर्तते।
उत्तष्ठि नरशार् दूल कर्त्तव्यं दैवमाह्नकिम् ॥

(वाल्मिकी रामायण अध्याय नं २४, बाला कन्द १-२३-२)

भावार्थ:- हे राम! कौशल्या के पवित्र पुत्र। पूर्व आकाश में सुबह का उजाला फैल रहा है। हे पुरुषोत्तम जागो। ईश्वर की प्रार्थना के लिए।

तो श्री रामचंद्र जी को बच्चपन में जिस ईश्वर की प्रार्थना के लिए सुबह जगाया जाता था। हर दिन उसी ईश्वर की हम को भी प्रार्थना करनी चाहिए।

नाम का रहस्यः-

● ऋग्वेद का एक श्लोक इस प्रकार है;

● *एकं सद्विपा बहुधा वदन्त्यग्नि यमं मातरिश्वानमाहु: ।* (ऋग्वेद ११:१६४:४६)

● वही अग्नि, यम और मातरिश्वा है, उस एक ब्रम्ह को विद्वान अनेक नामों से पुकारते हैं।

● तो एक ईश्वर के बहुत से नाम हैं। इनमें कुछ नाम ईश्वर के विशेष हैं जो उसके निर्माता, पालनेवाला, इत्यादि जैसे गुणों से

सम्बंधित है। ऐसे नाम ईश्वर के अलावा और किसी के नहीं हो सकते हैं।

मगर ईश्वर के कुछ नाम उसके स्वभाव के अनुसार है। जैसे कृपालु, दयालु इत्यादि। अपने स्वाभाविक नाम से ईश्वर कभी कभी महापुरुषों को भी सम्बोधित करता है। जिन में वह स्वभाव या गुण हों।

- 'अग्नि' यह ईश्वर का नाम है।

ऋग्वेद का पहला श्लोक है।

''सारी प्रशंसा और प्रार्थना अग्नि के लिए है।''(ऋग्वेद १:१:१)

- ईश्वर ने ऋग्वेद में अनेक बार एक महापुरुष को भी अग्नि नाम से सम्बोधित किया है, जैसे;

- ''हमने अग्नि को दूत चुना है।''
(ऋग्वेद १-१२-१)

- अग्नि वह इन्सान हैं जो ईश्वर की प्रार्थना करने वालों से प्रसन्न होते हैं।
(ऋग्वेद १-३१-१५)

- इसी तरह ब्रम्हा यह ईश्वर का नाम है। मगर ईश्वर ने इस नाम से 'अबी राम' (हज़रत इब्राहीम) को भी सम्बोधित किया है। अथर्ववेद में पुरुषमेधा के आठ मन्त्रों में 'अबी राम' को ब्रम्हा कहा गया है।
(अथर्ववेद १०-२-२६ से ३३ तक)

- मुसलमानों के धर्मगुरु का नाम हज़रत मुहम्मद (स.) है यह सब जानते हैं।

ईश्वर ने भी इस नाम से कुरआन में उनको सम्बोधित किया है। (उदा. सूरह नं ४७ आयत नं २।)

मगर इसी कुरआन में ईश्वर ने अपने नाम से भी हज़रत मुहम्मद (स.) को सम्बोधित किया है। सूरह नं ९ की आयत नं १२८ में ईश्वर ने हज़रत मुहम्मद (स.) को 'रऊफ़' और 'रहीम' कहा है। मगर यह दोनों हज़रत मुहम्मद (स.) के नाम नहीं हैं। और न कभी आप के जीवन में किसी ने आपको इन नामों से पुकारा है। मगर कुरआन में ईश्वर ने अपने इन नामों से आप को याद किया है। क्योंकि हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत दया करने वाले और क्षमा करने वाले थे।

तो यह बात याद रखें कि धार्मिक ग्रन्थों में ईश्वर के नाम ऋषि महापुरुष और पैगम्बरों के लिए भी इस्तेमाल होते हैं। और यह पढ़ने वाले को याद रखना और समझना है कि कहां उस नाम का अर्थ ईश्वर है और कहां महापुरुष या कोई पैगम्बर है।

ऋग्वेद के श्लोक नं १४-९३-१० में राम नाम किसी पैगम्बर के लिए इस्तेमाल हुआ है। और तारक मन्त्र में एक राम नाम श्री रामचन्द्र जी के लिए इस्तेमाल हुआ है और दूसरा राम नाम 'ईश्वर' के लिए उपयोग किया गया है।

(yeekeâer hespe 65 hej)

11. osJelee keâewve nQ?

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है कि:

● *कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञाना: प्रपद्यन्ते ऽन्यदेवता: । तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियता: स्वया ।।७-२०।।*

● *कामै: तै: तै: हृत ज्ञाना: प्रपद्यन्ते अन्य देवता: । तम् तम् नियमम् आस्थाय प्रकृत्या नियता: स्वया ।।२०।।*

(कामै:) इच्छा भक्ति के कारण *(ज्ञाना:)* (बहुत सारे लोग) ईश्वरी ज्ञान से, *(हृत)* भटक जाते है, *(प्रकृत्या)* और फिर ईश्वरी प्रकृति (को), *(नियता:)* वश में करके या अपने हाथ में लेकर, *(अन्य)* (अपनी अलग अलग इच्छाओं को पूरी करने के लिए एक ईश्वर को छोड़कर) दूसरे, *(तै:)* जिन, *(तै:)* जिन *(देवता:)* देवताओं का, *(प्रपद्यन्ते)* सहारा लेते हैं, *(तम्)* उन, *(तम्)* उन (देवताओं के), *(स्वया)* अपने आप, *(नियमम्)* नियमों को बनाकर, *(आस्थाय)* (इनका) पालन करने लगते हैं। (७:२०)

१. इच्छा भक्ति (मनमानी जीवन शैली अपनाने) के कारण (बहुत सारे लोग) ईश्वरी ज्ञान से भटक जाते हैं, और फिर ईश्वरी प्रकृति को वश में करके या अपने हाथ में लेकर, (अपनी अलग अलग इच्छाओं को पूरी करने के लिए एक ईश्वर को छोड़कर) दूसरे जिन जिन देवताओं का सहारा लेते हैं, उन उन (देवताओं के) अपने आप नियमों को बनाकर, उनका पालन करने लगते हैं। (७:२०)

● *यो यो यां तनुं भक्त: श्रद्धया अर्चितुम् इच्छति । तस्य तस्य अचलाम् श्रद्धाम् ताम् एव विदधामि अहम् ।।७-२१।।*

● *य: य: याम् याम् तनुम् भक्त: श्रद्धया अर्चितुम् इच्छति । तस्य तस्य अचलाम् श्रद्धाम् ताम् एव विदधामि अहम् ।।२१।।*

(य:) जो *(य:)* जो, *(भक्त:)* भक्त, *(याम्)* जिस, *(याम्)* जिस, *(तनुम्)* निर्मित वस्तु या देवता पर, *(श्रद्धया)* श्रद्धा रखकर, *(अर्चितुम)* उसकी भक्ति की *(इच्छति)* इच्छा करता है, *(अहम्)* मैं, *(ताम्)* उसकी, *(तस्य)* उस, *(तस्य)* उस (इच्छा के अनुसार, *(एवं)* (उस निर्मित वस्तु या देवता पर) ही, *(श्रद्धाम्)* उसकी श्रद्धा को, *(अचलाम्)* और मजबूती से स्थित *(विद्धामी)* कर देता हूँ। (७:२१)

२. जो भक्त जिस निर्मित वस्तु (ईश्वर की बनाई हुई प्रकृति या जीव या देवता) पर श्रद्धा रखकर उसकी भक्ति की इच्छा करता है, मैं उसकी उस (इच्छा के अनुसार) उस (निर्मित वस्तु या देवता पर) ही उसकी श्रद्धा को और मजबूती से स्थित कर देता हूँ। (७:२१)

● *स तया श्रद्धया युक्तस्तस्या राधनमीहते । लभते च तत: कामान्मयैव विहितान्हि*

तान् ।।७-२२।।

● *सः तया श्रद्धया युक्तः तस्य आराधनम् ईहते। लभते च ततः कामान् मया एव विहितान् हि तान् ।।२२।।*

(सः) वह *(तस्य)* उस (निर्मित वस्तु) पर, *(श्रद्धया)* श्रद्धा रखकर, *(तया)* उसमें, *(युक्तः)* अपनी सोच और समझ को लगाकर, *(आराधनम्)* (उस निर्मित वस्तु की) भक्ति आरम्भ करके, *(ईहते)* उससे (अपनी इच्छाओं को पूरा करने की) अपेक्षा करता है, *(हि)* तो निःसंदेह *(लभते)* (निर्मित वस्तु या देवता से माँगी हुई मुराद) प्राप्त कर लेता है, *(च)* जबकि, *(एवं)* सच यह है कि, *(ततः)* उस (निर्मित वस्तु या देवता) से, *(कामान्)* इच्छा की गई मुरादें, *(मया)* मेरे द्वारा ही, *(तान्)* Gmekeâes, *(विहितान्)* दी जाती हैं। (७:२२)

३. वह उस (निर्मित वस्तु) पर श्रद्धा रखकर उसमें अपनी सोच और समझ को लगाकर (उस निर्मित वस्तु की) भक्ति आरम्भ करके, उससे (अपनी इच्छाओं को पूरा करने की) अपेक्षा करता है, तो निःसंदेह (निर्मित वस्तु या देवता से माँगी हुई मुराद) प्राप्त कर लेता है, (जबकि) सच यह है कि उस (निर्मित वस्तु या देवता) से इच्छा की गई मुरादें, मेरे द्वारा ही उसको दी जाती हैं। (७:२२)

● *अन्तवत्तु फलं तेषां तभ्दवत्यल्पमेधसाम्। देवान्देवयजो यान्ति मभ्दक्त । यान्ति मामपि।।७-२३।।*

● *अन्त-वत् तु फलम् तेषाम् तत् भवति अल्प-मेधसाम्। देवान् देव-यजः यान्ति मत् भक्ताः यान्ति माम् अपि ।।२३।।*

(तु) लेकिन *(अपि)* यह भी सच है कि, *(देव-यजः)* देवताओं की प्रसन्नता के कर्म करके उनकी भक्ति करने वाले, *(देवान्)* (मरने के बाद) देवताओं के पास, *(यान्ति)* जाएंगे और, *(तत्)* इन, *(अल्प)* कम, *(मेधसाम्)* बुद्धि वाले लोगों का *(फलम्)* फल, *(तेषाम्)* उनका, *(अन्त-वत)* विनाश, *(भवति)* होगा, *(मत)* (और) मेरी, *(भक्ताः)* भक्ति करने वाले, *(माम्)* (मरने के बाद) मेरे पास, *(अपि)* ही, *(यान्ति)* आएंगे। (७:२३)

४. लेकिन, यह भी सच है कि देवताओं की प्रसन्नता के कर्म करके उनकी भक्ति करने वाले, (मरने के बाद) देवताओं के पास जाएंगे और इन कम बुद्धि वाले लोगों का फल उनका विनाश होगा और मेरी भक्ति करने वाले (मरने के बाद) मेरे पास ही आएंगे। (७:२३)

● *त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा*
यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकम्
अश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्।।९-२०।।

● *त्रै विद्याः माम् सोम-पाः पूत पापाः यज्ञैः इष्ट्वा स्व-गतिम् प्रार्थयन्ते।*

पुण्यम् आसाद्य सुर-इन्द्र लोकम् अश्नन्ति दिव्यान् दिवि देव-भोगान् ।।२०।।

(त्रै) (जो लोग) तीनों *(विद्याः)* वेदों में (बताए गए), *(सोम)* स्वर्ग (में मिलने) वाले सोम पान (जामे कौसर) को, *(पाः)*

पीने के लिए, *(स्वः)* और स्वर्ग की, *(गतिम)* मंजिल को पाने के लिए, *(प्रार्थयन्ते)* प्रार्थना करते हैं, *(पापः)* वह लोग (संसार में) पापों से *(पूत)* पवित्र हो कर, *(यज्ञैः)* भलाई वाले कर्म करते हुए, *(माम्)* (केवल) मेरी, *(इष्ट्वा)* भक्ति करते हुए, *(पुण्यम्)* और फिर कर्मों के फल के, *(आसाद्य)* फल के तौर पर, *(दिवि)* स्वर्ग में, *(सुर)* देवताओं (फरिश्तों) के, *(लोकम्)* लोक में, *(इन्द्र)* राजाओं की तरह, *(देव)* देवताओं के द्वारा, *(भोगान्)* दिए गए भोगों से, *(दिव्यान)* दिव्य, *(अश्नान्ति)* आनन्द लेते हैं। (९:२०)

५. (जो लोग) तीनों वेदों में (बताए गए) स्वर्ग (में मिलने) वाले सोम पान (जामे कौसर, पवित्र पेय) को पीने के लिए और स्वर्ग की मंजिल को पाने के लिए प्रार्थना करते हैं, वह लोग (संसार में) पापों से पवित्र हो कर भलाई वाले कर्म करते हुए, (केवल) मेरी भक्ति करते हैं, और फिर कर्मों के फल के तौर पर स्वर्ग में देवताओं के लोक में राजाओं की तरह, देवताओं के द्वारा दिए गए भोगों से, दिव्य आनन्द लेते हैं। (९:२०)

● *देवान्भवयतानेन ते देवा भावयन्तु वः। परस्परँ भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।।३-११।।*

● *देवान् भावयता अनेन ते देवाः भावयन्तु वः। परस्परम् भावयन्तः श्रेयः परम् अवाप्स्यथ।।११।।*

● *(अनेन)* इन (आदेशों) के अनुसार, *(देवान्)* देवता, *(भावयता)* (एक ईश्वर की) भक्ति करते हैं, *(ते)* तो *(देवाः)* देवताओं (की तरह), *(वः)* तुम भी, *(भावयन्तु)* भक्ति करो, *(परस्परम्)* (मानवजाति और देवताओं के) मिलकर, *(भावयन्तः)* भक्ति करने से *(परम्)* (ईश्वर की) उत्तम और दिव्य, *(श्रेय)* शरण, *(अवाप्स्यथ्)* प्राप्त होगी।

६. इन आदेशों के अनुसार देवता एक ईश्वर की भक्ति करते हैं, तो देवताओं की तरह तुम भी भक्ति करो। (मानवजाति और देवताओं के) मिलकर भक्ति करने से ईश्वर की उत्तम और दिव्य शरण प्राप्त होगी। (३:११)

● *इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः। तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्के स्तेनः एव सः।।३-१२।।*

● *इष्टान भोगान हि वः देवाः दास्यन्ते यज्ञ-भाविताः। तैः दत्तान् अप्रदाय एभ्यः जो भुङ्के स्तेनः एव सः।।१२।।*

● *(यज्ञ)* ईश्वर के आदेशों के अनुसार *(भविताः)* भक्ति करने से, *(हि)* निःसंदेह, *(देवा)* देवता, *(वः)* तुम्हें, *(इष्टान्)* जीवन की आवश्यक, *(भोगान्)* सारी वस्तुएँ, *(दास्यन्ते)* देंगे, *(तैः)* इनके द्वारा, *(दत्तान्)* दी गई वस्तुओं को, *(अप्रदाय)* दूसरों को दिए बिना अथवा दूसरों के कल्याण में लगाए बिना, *(यः)* जो, *(एभ्यः)* इनका, *(भुङ्क्ते)* उपभोग करता है, *(सः)* वह, *(एव)* सच में, *(स्तेनः)* Ûeesj nw। (३:१२)

७. ईश्वर के आदेशों के अनुसार भक्ति करने से

नि:संदेह, देवता तुम्हें जीवन की आवश्यक सारी वस्तुएँ देंगे। इनके द्वारा दी गई वस्तुओं को दूसरों को दिए बिना अथवा दूसरों के कल्याण में लगाए बिना, जो इनका उपभोग करता है, वह सच में चोर है। (३:१२)

● *न मां दुष्कृतिनो मूढो: प्रपद्यन्ते नराधमा: ।*
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिता: ।।

● *न माम् दुष्कृतिन: मूढा प्रपद्यन्ते नर-अधमा: मायया अपहृत ज्ञाना: आसुरम् भावम् आश्रिता: ।।७-१५ ।।*

● *(मामया)* इस परीक्षा ईश्वरी योजना (से पार कराने) वाले *(ज्ञाना:)* धर्म ज्ञान को, *(आसुरम्)* आसुरी (यानी शैतानी), *(भावम्)* प्रकृति की, *(आश्रिता:)* शरण लेने वालों से, *(अपहृत)* असुर यानी (शैतान ने) चुरा लिया है, *(मुढा:)* (क्योंकि) यह मूर्ख, *(दुष्कृतिन:)* पाप कर्म करने वाले, *(अधमा:)* और (नरक में) गिरने वाले, *(नर)* मनुष्य, *(माम्)* मेरी, *(प्रपद्यन्ते)* (भक्ति करते हुए मेरी) शरण या सहारा, *(न)* नहीं लेते। (७:१५)

८. इस परीक्षा या ईश्वरी योजना (से पार कराने) वाले धर्म ज्ञान को, आसुरी यानी शैतानी प्रकृति की शरण लेने वालों से, (असुर यानी शैतान) ने चुरा लिया है, (क्योंकि) यह मूर्ख, पाप कर्म करने वाले और (नरक में) गिरने वाले मनुष्य, मेरी (भक्ति करते हुए मेरी) शरण या सहारा नहीं लेते। (७:१५)

सारांश :

ऊपर बताए श्लोकों को पढ़कर जो बात समझ में आती है वह इस तरह है;

● श्लोक नं ३:१२ में कहा गया है की ईश्वर के आदेशों के अनुसार भक्ति करने से नि:संदेह देवता तुम्हें जीवन की आवश्यक सारी वस्तुएं देंगे। इस श्लोक से यह बात समझ में आती है कि ईश्वर और देवता यह अलग अलग है। और देवता ईश्वर का आदेश मानते हैं।

● श्लोक नं. ९:२० में कहा गया है कि कर्मों के फल के तौर पर स्वर्ग में देवताओं के लोक में राजाओं की तरह, देवताओं के द्वारा दिए गए भोगों से दिव्य आनन्द लेते हैं।

बाइबल और कुरआन में ईश्वर के ऐसे जीव को जो स्वर्ग में मृतक की सेवा करते हैं उनको फरिश्ते (Angels) कहा गया है। इसलिए भगवद्गीता में जिसे देवता कहा गया है वह फरिश्ते है।

● श्लोक नं ७:२३ में कहा गया है कि, ''देवताओं को पूजने वाले बर्बाद होंगे।''

● ईश्वर के आदेश और ईश्वरी ज्ञान को मनुष्यों को बताने वाले मनुष्य की भगवद्गीता में नाम लेकर चर्चा की गई है। जैसे श्री रामचंद्र जी, श्री कृष्ण जी वगैरह। भगवद्गीता में इनको देवता नहीं कहा गया है। लोग खुद से उनको देवता कहते हैं। ऐसे नाम लेकर संबोधित करने वाले श्लोक का एक उदाहरण निम्नलिखित है;

● इसी तरह मौत तक, सारे कर्मों को केवल मेरे सहारे पर करने वाले वासुदेव (यानी कृष्ण) के जैसा महान मनुष्य बहुत सारे पैदा होने वाले मनुष्यों और ज्ञानियों में से (कोई एक) अत्यंत दुर्लभ है। (भगवद्गीता ७:१९)

****

12. keäÙee ceneØeueÙe nesiee?

● **श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है किः**

● *एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणित्युपधारथ। अहंकृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।।७-६।।*

● *एतत् योनिनि भूतानि सर्वाणि इति उपधारय। अहम् कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयः तथा ।।६।।*

(इति) Fmeer Iejn, *(एतत्)* Fve oesveeW DeLee&led Ùen mebmeej Deewj DevÙe ueeskeâ hej, *(सर्वाणि)* meeejer, *(भूतानि)* ceeveJepeeeefle keâer, *(योनीनि)* heerefÌ{ÙeeW (keâer meheâuelee Deewj efJeheâuelee), *(उपाध्याय)* keâe DeeOeej Yeer nw, *(च)* Deewj, *(अहम्)* ceQ (Dekesâuee), *(जगतः)* mebmeej keâe, *(प्रभवः)* DeejcYe keâe, *(तथा)* Deewj, *(प्रलय)* Deble (DeLee&led ØeueÙe Ùee keâÙeecele), *(कृत्स्नस्य)* keâjves Jeeuee ntB~

● इसी तरह दोनों यानी संसार और अन्य लोक पर सारी मानवजाति की पीढ़ियों की सफलता और विफलता का आधार भी है और मैं अकेला संसार का आरम्भ और इसका अंत (यानी प्रलय) करने वाला हूँ। (७:६)

● इस श्लोक में स्पष्ट रुप से कहा गया है कि एक दिन प्रलय (कयामत) होगा। कुछ और श्लोक जिसमें प्रलय का वर्णन है निम्नलिखित हैं।

● *पुरुषः स परः पार्थ भक्त या लभ्यस्त्वनन्यया। यस्यान्तःस्थानि भूतानिन येन सर्वमिदं ततम् ।।८-२२।।*

● *पुरुषः सः परः पार्थ भक्त्या लभ्यः तु अनन्यया। यस्य अन्तः-स्थानि भूतानि येन सर्वम् इदम् ततम्।।२२।।*

(पार्थ) हे पार्थ!(अर्जुन) *(सः)* वह *(पुरुषः)* मनुष्य होने से *(परः)* परे है *(तु)* लेकिन *(अननन्या)* किसी और निर्मित वस्तु या देवता की *(भक्त्या)* भक्ति न करने से ही *(लभ्यः)* उसे प्राप्त किया जा सकता है *(येन)* (यह वह ईश्वर है) जिसके द्वारा *(सर्वम्)* सारी निर्मित वस्तुओं का *(इदम्)* यह *(ततम्)* फैलाव है *(यस्य)* और जिसके द्वारा *(भूतानि)* निर्मित वस्तुओं का *(अन्तः)* अंत यानी प्रलय का *(स्थानि)* स्थित होना है।

● हे पार्थ!(अर्जुन) वह मनुष्य होने से

परे है, लेकिन किसी और निर्मित वस्तु या देवता की भक्ति न करने से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। यह वह ईश्वर है जिसके द्वारा सारी निर्मित वस्तुओं का यह फैलाव है और जिसके द्वारा निर्मित वस्तुओं का अंत यानी प्रलय का स्थित होना है। (८:२२)

(वह सभी वस्तुएँ जिसका ईश्वर ने निर्माण किया है उन्हें इस श्लोक में निर्मित वस्तु कहा गया है। उदाहरण धरती, आकाश, प्राणी या सारा ब्रह्माण्ड इत्यादि)

● *सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्।*

कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्।।

● *सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिम् यान्ति मामिकाम् कल्प-क्षये पुन: तानि कल्प-आदौ विसृजामि अहम् ।।९-७।।*

● *(कौन्तेय)* ऐ कुन्ती के पुत्र (अर्जुन)! *(अहम)* मैंने *(कल्प)* ब्रह्माण्ड के *(आदौ)* आरम्भ में *(तानि)* इन सारे (मनुष्यों) का *(विसृजामि)* निर्माण किया है *(कल्प)* और ब्रह्माण्ड के *(क्षये)* अंत यानी प्रलय के समय *(मामिकाम्)* मेरी इच्छा से *(प्रकृतिम्)* ईश्वरी प्रकृति के द्वारा *(सर्व)* सारे *(भूतानि)* मनुष्य *(पुन:)* दुबारा, *(यान्ति)* उठाए जाएंगे (जीवित किए जाएंगे)।

● हे कुन्ती के पुत्र (अर्जुन)(ईश्वर कह रहा है) मैंने ब्रह्माण्ड के आरम्भ में, इन सारे (मनुष्यों) का निर्माण किया है, और ब्रह्माण्ड के अंत यानी प्रलय के समय, मरने के बाद मेरी इच्छा से ईश्वरी प्रकृति के द्वारा, सारे मनुष्य दुबारा उठाए जाएँगे (जीवित किए जाएंगे)। (९:७)

● (ईश्वर कह रहा है)अगर मैं (ब्रह्माण्ड को सही रखने का) कर्म न करुँ तो इस ब्रह्माण्ड में बिगाड़ और अव्यवस्था हो जाएगी। (जब कि प्रलय यानी कयामत के समय मैं ब्रह्माण्ड की सारी वस्तुओं को) कूड़ा करकट की तरह टकरा कर मिला दूंगा और फिर सब से पहले निर्मित किये जाने वाले मानव की इस सारी (नस्ल/मानवजाति) का विनाश करने वाला हो जाऊंगा। (३:२४)

● ईश्वर जो निर्मित वस्तुओं से पूरे तौर पर अलग है, वह किसी के अच्छे कर्मों और बुरे कर्मों का हिसाब लेने का जिम्मेदार नहीं है। अज्ञानता के कारण मनुष्य ऐसा कहता है। क्योंकि उसके (अज्ञानता ने) ज्ञान पर पर्दा डाल कर उसको छुपा दिया है। (५:१५)

सारांश :

पूरी भगवद्‌गीता पढ़ने के बाद प्रलय और प्रलय के बाद के जीवन के बारे में जो बात समझ में आती है वह यह है कि,

१. ईश्वर ने इस ब्रह्माण्ड का निर्माण किया है।

२. एक दिन वह इस ब्रह्माण्ड का अंत भी कर देगा।

३. उसके बाद वह सारे मानवजाति को फिर जीवित करेगा और कर्मों का हिसाब

13. DevÙe ueeskeâ keâe cenòJe

● आखिरत (परलोक) किसे कहते हैं?

मरने के बाद हम प्रलय (कयामत) के दिन तक पितृलोक में रहेंगे। जब ईश्वर आकाश और धरती सबको नष्ट कर देगा। उस दिन को प्रलय (कयामत) कहते है। उस दिन हर मनुष्य को अपने कर्मों का ईश्वर के सामने हिसाब किताब देना होगा। कर्म के अनुसार ईश्वर हर व्यक्ति के बारे में स्वर्ग या नरक का निर्णय करेगा। इसके बाद की जो जिंदगी होगी वह अनंत (हमेशा के लिए) होगी। स्वर्ग वाले हमेशा ईश्वर की कृपा में और नरक वाले हमेशा ईश्वर के प्रकोप में रहेंगे। इसको आखिरत (परलोक) कहते हैं।

● भगवद्गीता में अन्य लोक (आखिरत) के बारे में जो श्लोक है उनमें कुछ निम्नलिखित हैं।

● *अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धी मे पराम् ।जीवभूतां महाबाहो ययेदं घार्यते जगत् ।।७-५।।*

● *अपरा इयम् इतः तु अन्याम् प्रकृतिम् विद्धि मे पराम्। जीव-भूताम् महा-बाहो यया इदम् धार्यते जगत् ।।५।।*

(तु) uesefkeâve, *(महाबाहो)* nw MeefòeâMeeueer yeeneW Jeeues (Depeg&ve), *(इयम)* Fme, *(अपरा)* Deßes‰ (mebmeej), *(इत)* (kesâ) DeueeJeeb, *(प्रकृतिम)* cesjer Øeke=âefle keâer efveMeeveer, *(अन्याम)* DevÙe ueeskeâ (DeeefKejle), *(विद्धि)* peeveves keâe ØeÙelve keâjes, *(में)* pees cesjer, *(पराम)* meyemes ße‰ (Øeke=âefle keâer efveMeeveer), *(यया)* efpeme hej, *(जगत)* Fme mebmeej keâe, *(इदम)* Deewj Fme (mebmeej) keâer, *(जीव भूताम्)* meeejer efveefce&le JemlegDeeW (keâer meheâuelee Deewj efJeheâuelee), *(धार्यत)* keâe DeeOeej nw~

● लेकिन हे अर्जुन! (ईश्वर कह रहा है) इस अश्रेष्ठ (Insignificant) संसार के अलावा मेरी प्रकृति की निशानी, अन्य लोक (यानी आखिरत (hereafter)) को भी जानने का प्रयत्न करो, जो मेरी सबसे श्रेष्ठ प्रकृति की निशानी है। जिस पर इस संसार का और इस संसार की सारी निर्मित वस्तुओं की सफलता और विफलता का

आधार है। (७:५)

● *ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गाता न निवर्तन्ति भूयः।*
तमेव चाद्यं पुरूषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ।।१५-४।।

● *तत् परिमार्गितव्यम् यस्मिन् गताः न निवर्तन्ति भूयः तम् एव च आद्यम पुरूषम् प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी।।४।।*

● *(ततः)* फिर *(तत्)* उस अन्य (आखिरत के) *(पदम्)* धाम को *(परिमार्गितव्यम्)* खोजना चाहिए *(यस्मिन)* जहाँ *(गता)* जाकर *(भूयः)* (कोई भी) पुनः *(निर्वतन्ति)* (इस संसार में) वापस नहीं आता *(च)* और *(एव)* (जहाँ जाकर) निःसन्देह *(तम्)* उसे *(आद्यम)* (उस) सबसे पहले *(पुरूषमः)* पुरुष (ईश्वर) की *(प्रपद्ये)* शरण मिल जाती है *(यत)* (यह अन्य धाम वह है) जिसके कारण, *(पुराणी)* (इस)प्राचीन (संसार का), *(प्रवृत्तिः)* आरम्भ, *(प्रसृता)* और फैलाव है।

● फिर उस अन्य धाम (यानी परलोक) को खोजना चाहिए, जहाँ जाकर कोई भी पुनः (इस संसार में) वापस नहीं आता और (जहाँ जाकर) निःसन्देह उसे उस सबसे पहले पुरुष (ईश्वर) की शरण मिल जाती है। (यह अन्य धाम वह है) जिसके कारण इस प्राचीन संसार का आरम्भ और फैलाव है। (१५:४)

● लेकिन इस लोक से परे दूसरे लोक यानी अन्य लोक (आखिरत) का निर्माण है, जो न दिखाई देने वालों से भी अधिक न दिखाई देने वाला है। वह सदैव स्थित रहने वाला भी है। इसलिए (इस अन्य लोक) को ईश्वर ने ऐसा निर्माण किया है जो सारी निर्मित वस्तुओं का नाश होने पर भी नष्ट नहीं होगा। (८:२०)

● *अव्यक्तो ऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्।*
यं प्राप्य न निर्वर्तन्ते तद्धाम परमं मम ।।८-२१।।

● *अव्यक्तः अक्षरः इति उक्तः तम् आहुः परमाम् गतिम्। यम् प्राप्य न निवर्तन्ते तत् धाम परमम् मम।।२१।।*

● *(तम्)* इस अन्य लोक को (ईश्वर) *(अव्यक्तः)* न दिखाई देने वाला *(अक्षरः)* और अविनाशी *(उक्तः)* कह रहा है। *(इति)* इस तरह (ईश्वर) *(परमाम)* (इसे) सब से *(गतिम्)* श्रेष्ठ धाम *(आहुः)* (भी) कह रहा है *(यम्)* जिसे *(प्राप्य)* प्राप्त कर लेने के बाद *(निवर्तन्ते)* (मनुष्य संसार में) वापस *(न)* नहीं आते *(तत्)* (ईश्वर यह भी कह रहा है) वह (अन्य लोक का) *(परमम्)* सबसे श्रेष्ठ धाम ही *(मम)* मेरे, *(धाम)* रहने की जगह है।

● इस अन्य लोक को ईश्वर, न दिखाई देने वाला और अविनाशी कह रहा है। इस तरह ईश्वर इसे सबसे श्रेष्ठ धाम भी कह रहा है। जिसे प्राप्त कर लेने के बाद मनुष्य संसार में वापस नहीं आते। ईश्वर यह भी कह रहा है कि वह अन्य लोक का सबसे श्रेष्ठ धाम ही मेरे रहने की जगह है। (८:२१)

14. cegefòeâ kewâmes efceuesieer?

ßाी कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि;

● *अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्क। साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः।।*

● *अपि चेत् सु-दुराचार भजते माम् अनन्यभाक। साधुः एवं सः मन्तव्यः सम्यक व्यसिसतः हि सः ।।*

● *(चेतु)* अगर, *(सु दुराचार)* कोई अत्यंत पापी मनुष्य, *(अपिः)* भी, *(भाक)* किसी और (निर्मित वस्तु या देवता) की भक्ति किए बिना, *(माम्)* मुझ पर, *(भजते)* श्रद्धा रखता है (तो), *(एव)* निःसंदेह, *(सः)* उसे, (साधु) साधु पुरुष, *(मन्तेव्यः)* मानना चाहिए, *(हि)* क्योंकि, *(स)* वह, *(सम्यक)* पूर्ण (और सच्ची), *(व्यवसितः)* श्रद्धा वाला है।

● अगर कोई अत्यंत पापी मनुष्य भी किसी और (निर्मित वस्तु या देवता) की भक्ति किये बिना मुझ पर श्रद्धा रखता है तो निःसंदेह उसे साधु पुरुष मानना चाहिए, क्योंकि वह पूर्ण और सच्ची श्रद्धा वाला है। (९:३०)
(निर्मित वस्तु यानी वह सभी चीज़े जिसका ईश्वर ने निर्माण किया है। जैसे धरती, आकाश, जीव, जन्तु, देवी-देवता, महापुरुष इत्यादि)

● *क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं। निगच्छति । कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।।९-३१।।*

● *क्षिप्रम् भवतित धर्म-आत्म शश्व्त निगच्छति। कौन्तेय प्रतिजानीहि न में भक्तः प्रणश्यति।।३१।।*

(क्षिप्रम) (सही और सच्ची श्रद्धा रखने के कारण वह) बहुत जल्द, *(धर्म)* ईश्वर के धर्म (नियमों और कर्तव्यों) के अनुसार कर्म करने वाला, *(आत्मा)* मनुष्य (भी), *(भवति)* बन जाएगा, *(शश्वत)* और उसे (मरने के बाद स्वर्ग की) सदैव रहने वाली, *(शान्तिम)* शांति, *(निगच्छति)* प्राप्त होगी, *(कौन्तेयः)* (इसलिए) हे कुन्तीपुत्र (अर्जुन), *(प्रतिजानीहि)* खूब अच्छी तरह जान लो की, *(मेंः)* मेरी, *(भक्तः)* भक्ति करने वाले भक्त, *(प्रणश्यति)* कभी भी अशांति, विनाश और तनाव का शिकार, *(न)* नहीं होते।

ßाी कृष्ण जी ने कहा कि;

● सही और सच्ची श्रद्धा होने के कारण वह बहुत जल्द ईश्वर के धर्म नियमों और कर्तव्यों के अनुसार कर्म करने वाला मनुष्य भी बन जाएगा और उसे मरने के बाद स्वर्ग की सदैव रहने वाली शांति प्राप्त होगी। इसलिए हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! (ईश्वर कह रहा है) खूब अच्छी तरह जान लो कि, मेरी भक्ति करने वाले भक्त, कभी भी अशांति, विनाश और तनाव का शिकार नहीं होते। (९:३१)

● हे पार्थ (अर्जुन)! (ईश्वर कह रहा है) मेरी (भक्ति करके) मेरी शरण लेने वाले जो भी (मनुष्य) हैं, चाहे वह (१) पापियों की पीढ़ी से हों, (२) स्त्रियां हों (३) खेती या व्यापार करने वाले हों अथवा (४) सेवा करने वाले मज़दूर हों। नि:संदेह यह सभी (स्वर्ग की) सबसे श्रेष्ठ मंजिल को पाएंगे। (९:३२)

● फिर (१) ईश्वर का ज्ञान रखने वाले ब्राम्हणों, (२) भलाई के कर्म करने वालों, (३) भक्तों और (४) वह ऋषि जो राजा हुए, इन लोगों का क्या कहना? (इसलिए) इस सदैव न रहने वाले, सुख न देने वाले संसार को प्राप्त करके (क्या होगा? सदैव सुख देने वाले स्वर्ग को पाने के लिए) मेरी भक्ति में लग जाओ। (९:३३)

(श्लोक नं. ९:३२ और ९:३३ पढ़कर यह भी एहसास होता है कि जाति भेदभाव यह मनुष्य का अपना बनाया हुआ है। ईश्वर तो उन सबसे प्रेम करता है जो उसमें श्रद्धा रखते हैं। और जो भी स्वर्ग के योग्य होगा तो ईश्वर उन सबको एक ही स्वर्ग में रखेगा। चाहे वह किसी भी जाति का हो।)

ßी कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि;

● (१) मुझे अपने मन में रखकर मेरे आदेशों का पालन करने वाले बन जाओ, (२) मेरी प्रसन्नता के लिए भलाई वाले कर्म करो, (३) मुझे ही नमस्कार करो, नि:संदेह इस तरह (४) अपने आप को भक्ति में लगाकर, (५) मेरा सहारा लेकर, तुम मुझे पा लोगे। (९:३४)

● लेकिन जो लोग मुझे (१) अविनाशी ईश्वर ॐ, (२) अनुपम यानी बिना उदाहरण वाला, (३) न दिखाई देने वाला, (४) हर जगह प्राप्त होनेवाला, (५) कल्पना से परे मानकर पूर्णतया भक्ति करते हैं और (६) हृदय को एक ईश्वर में एकाग्र रखकर, (७) सारी वस्तुओं से इच्छाओं को निश्चित तौर पर वश में करके, (८) पर्वत की तरह एक ईश्वर पर अपने आपको स्थिर करके, (९) किसी और निर्मित वस्तु या देवता की ओर मन को न भटकाकर, (१०) सारी निर्मित वस्तुओं के कल्याण के कर्मों में सदैव लगे रहते हैं, ऐसे लोग नि:सन्देह मुझे पा लेते हैं। (१२:३-४)

● (जो लोग) तीनों वेदों में (बताए गए) (१) (स्वर्ग में मिलने) वाले सोम पान (जामे कौसर) को पीने के लिए और (२) स्वर्ग की मंजिल को पाने के लिए प्रार्थना करते हैं, वह लोग संसार में पापों से पवित्र होकर भलाई वाले कर्म करते हुए, केवल मेरी भक्ति करते हैं और फिर कर्मों के फल के तौर पर स्वर्ग में देवताओं के लोक में राजाओं की तरह, देवताओं के द्वारा दिए गए भोगों से, दिव्य आनन्द लेते हैं। (९:२०)

ßी कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि;

● जो मनुष्य, किसी और निर्मित वस्तु या देवता को न सोचते हुए मेरी एक ईश्वर की पूर्णतया: भक्ति करते हैं। उन धैर्य के साथ भक्ति में लगे हुए लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने की, और उनकी जान व धन की सुरक्षा की जिम्मेदारी मैं लेकर चलता हूँ। (९:२२)

● अनेक (ईश्वरों की) उपासनाओं को छोड़कर, मुझ एक ईश्वर की शरण में आ जाओ। (बहुत सारे ईश्वरों को छोड़ते समय) चिन्ता मत करो, क्योंकि मैं तुमको सारे पिछले पापों से मुक्त कर दूँगा। (१८:६६)

एक ईश्वर की उपासना करना ही मुक्ति का

15. efkeâme keâe efJeveeMe nesiee?

● *एवं सततयुक्ता ये भक्तारत्वां पर्युपासते।*
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमा:।।

● *एवम् सतत युक्ता: ये भक्ता: त्वाम् पर्युपासते।*
ये च अपि अक्षरम् अव्यक्तम् तेषाम् के योगवित्-
तमा: ।।१२-१।।

● *(एवंम्)* इस तरह, *(ये)* (efoKeeF& osves Jeeueer efveefce&le Jemleg ceevekeâj), जो *(भक्ता:)* Yeòeâ, *(सतत)* सदैव, *(पर्युपास्ते)* पूर्णतया, *(त्वाम्)* आपकी, *(युक्ता:)* भक्ति में लगा रहता है, *(च)* और, *(अपि)* efve:mebosn, *(ये)* जो (भक्त), *(अक्षरम्)* आपको अविनाशी ईश्वर यानी ॐ, *(अव्यक्तम)* न दिखाई देने वाला मानकर, *(तेषाम्)* (आप की भक्ति में लगा रहता है) इन (दोनों) में, *(के)* (हे ईश्वर) कौन सा, *(योगवित्)* भक्त, *(तमा:)* भटकाव व विनाश का शिकार होता है?

● (अर्जुन ने श्री कृष्ण द्वारा ईश्वर से पूछा, कि हे ईश्वर) इस तरह (दिखाई देने वाली निर्मित आकार या वस्तु मानकर) जो भक्त सदैव, पूर्णतया आपकी भक्ति में लगा रहता है, और नि:सन्देह जो भक्त आपको अविनाशी ईश्वर, यानी ॐ (और) न दिखाई देने वाला मानकर, (आपकी भक्ति में लगा रहता है,) इन दोनों में (हे ईश्वर!) कौन सा भक्त भटकाव, गुमराही और विनाश का शिकार होता है? (१२:१)

● *मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते।*
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मता:
।।१२-२।।

● *मयि आवेश्य मन: ये माम् नित्य युक्ता: उपासते। श्रद्धया परया उपेता: ते मे युक्त-तमा: मता: ।।२।।*

● *(ये)* जो लोग, *(मयि)* मुझे, *(परया)* निर्मित वस्तु *(मखलूक)* मानकर, *(श्रद्धया)* श्रद्धा रखते हुए, *(मन:)* मुझे मन में, *(आवेशय)* स्थित करके, *(नित्य)* सदैव, *(माम्)* मेरी, *(उपासते)* भक्ति में, *(युत्का)* लगे रहने वाले हैं, *(ते)* उन लोगों का, *(मैं)* इस तरह मुझे, *(उपेता)* निर्मित वस्तु मानकर, *(युत्क)* मेरी भक्ति में लगना, *(तमा)* भटकाव और विनाश है, *(मता)* यह मेरा निर्णय है।

● श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है कि;

"जो लोग मुझे निर्मित वस्तु (जैसे चित्र, मूर्ति इत्यादि मानकर) श्रद्धा रखते हुए मुझे मन में स्थित करके सदैव मेरी भक्ति में लगे रहने वाले हैं उन लोगों का इस तरह मुझे निर्मित वस्तु मानकर मेरी भक्ति में लगना भटकना और विनाश है, यह मेरा निर्णय है।" (१२:२)

● *अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुध्दय:।*
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम्।।

● *अव्यक्तम् व्यक्तिम् आपन्नम् मन्यन्ते माम् अबुद्धयः। परम् भावम् अजानन्तः मम अव्ययम् अनुत्तमम् ।।७-२४।।*

● *(मम)* मेरी, *(परम्)* सबसे श्रेष्ठ *(अव्ययम्)* परिवर्तित न होने वाली, *(अनुत्तमम्)* और अविनाशी, *(भावम्)* प्रकृति को, *(अजानन्तः)* न जानकर, *(अबुद्धयः)* मूर्ख लोग (अल्पज्ञानी), *(माम्)* मुझ, *(अव्यक्तम्)* ve efoKeeF& osves Jeeues keâes, *(व्यक्तिम्)* दिखाई देने वाला, *(आपन्नम्)* और दोषी वस्तु या मनुष्य, *(मन्यन्ते)* मानते हैं।

ßाी कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि;

● मेरी सबसे श्रेष्ठ परिवर्तित न होने वाली और अविनाशी प्रकृति को न जानकर मूर्ख लोग अल्पज्ञानी मुझ न दिखाई देने वाले को दिखाई देने वाला और दोषी वस्तु या मनुष्य मानते है। (७:२४)

● *नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः। मूढो ऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्।।*

● *न अहम् प्रकाशः सर्वस्य योग-माया समावृतः। मूढः अयम् न अभिजानाति लोकः माम् अजम् अव्ययम्।।७-२५।।*

● *(मूढः)* मूर्ख ueesie, *(अयम्)* यह, *(न)* नहीं *(अभिजानाति)* peeveles efkeâ, *(समावृत)* (मेरा) न दिखाई देना या छुपा हुआ होना, *(माया)* (मनुष्यों की) परीक्षा लेने से, *(योग)* सम्बन्ध रखता है, *(अहम्)* और मैं, *(सर्वस्य)* हर एक को, *(प्रकाशः)* अपना तेज भी, *(न)* नहीं (दिखाता), *(माम)* (और यह लोग) मुझ को, *(लोकः)* संसार में, *(अजम्)* न पैदा होने वाला, *(अव्ययम्)* और अविनाशी भी (नहीं मानते)।

● (ईश्वर कह रहा है)मूर्ख लोग यह नहीं जानते कि मेरा न दिखाई देना या छुपा होना (मनुष्यों की) परीक्षा लेने से सम्बन्ध रखता है। और मैं हर एक को अपना तेज भी नहीं दिखाता और यह लोग मुझको संसार में न पैदा होनेवाला और अविनाशी भी नहीं मानते। (७:२५)

● *अन्तवत्तु फलं तेषां तभ्द्वत्यल्पमेधसाम् देवान्देवयजो यान्ति मभ्द्क्त ा यान्ति मामपि ।।७-२३।।*

● *अन्त-वत् तु फलम् तेषाम् तत् भवति अल्पमेधसाम्। देवान् देव-यजः यान्ति मत् भक्ता यान्ति माम् अपि।।२३।।*

(तु) लेकिन, *(अपि)* यह भी सच है कि, *(देव-यजः)* देवताओं की प्रसन्नता के कर्म करके उनकी भक्ति करने वाले, *(देवान)* (मरने के बाद) देवताओं के पास, *(यान्ति)* जाएंगे और, *(तत्)* उन, *(अल्प)* कम, *(मेधसाम्)* बुद्धि वाले लोगों का, *(फलम)* फल, *(तेषाम्)* उनका, *(अन्त-वत्)* विनाश, *(भवति)* होगा, *(मत)* और मेरी, *(भक्ताः)* भक्ति करने वाले, *(माम)* (मरने के बाद) मेरे पास, *(अपि)* ही, *(यान्ति)* आएंगे।

ßाी कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि;

16. hegCÙe keâjves Jeeues vejkeâ ceW keäÙeeW peeSbies?

श्री कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि,

● मरने वाले प्राकृतिक गुणों के अनुसार नरक में इस तरह रखे जाते हैं। (श्रद्धा के बिना अच्छाई को स्थित करने वाले) पुण्य करने वाले, नरक में ऊपर की ओर रखे जाते हैं। बुराई के गुण रखने वाले मध्य में निवास करते हैं। और भटकाव के गुण रखने वाले अज्ञानी या मुनाफिक लोग बिल्कुल नीचे की ओर रखे जाते हैं। (१४:१८) (मुनाफिक अर्थात् धर्म में दोगली प्रवृत्ति वाले लोग।)

● इस श्लोक में कहा गया है कि पुण्य करने वाले भी नरक में जाएंगे। मगर पुण्य करके कोई नरक में क्यों जाएगा? नरक में तो केवल पाप करने वाले जाने चाहिए।

इस विषय को लिखने का उद्देश आप को इस बात को समझाना है कि पुण्य करने वाले भी नरक में जाएंगे। हां! वह सबसे ऊपर वाले नरक में होंगे। जहां सज़ा सबसे कम और हल्की होती है, और क्या आप जानते हैं कि यह सबसे हल्की सज़ा क्या है? उस व्यक्ति को आग के जूते पहनाए जाएंगे, जिससे उसका दिमाग ऐसे उबलेगा जैसे पानी हांडी में उबलता है।

पुण्य करने वाले नरक में क्यों जाएंगे?

आइए इसका उत्तर हम भगवद्‌गीता में ही ढूंढ़ते हैं।

श्री कृष्ण जी ने कहा कि;

● हे महान भुजाओं वाले (अर्जुन)!(ईश्वर कह रहा है) शरीर वाले मनुष्य के शरीर को पैदा करके, अविनाशी ईश्वर की प्रकृति ने जिन तीनों गुणों के द्वारा परीक्षा लेने के लिए मनुष्य को बाँध दिया है, वह इस तरह हैं! अच्छाई वाला गुण, बुराई वाला गुण, भटकाव वाला गुण। (१४:५)

● हे पापरहित (अर्जुन)! उसकी (ईश्वर की) ओर से प्रदान किये गए गुणों में जो अच्छाई वाला गुण है वह पवित्र करने वाला है, प्रकाश देने वाला है, मनुष्य को पाप के बिना रखने वाला है। क्योंकि यह धर्मज्ञान के साथ मनुष्य को बाँध कर सुख, तृप्ति, और शान्ति से जोड़ देता है। (१४:६)

● हे कुन्तीपुत्र (अर्जुन)! बुराई वाले गुण से शरीर रखने वाले (मनुष्य) का सम्बध लोभ से पैदा होता है, और वह कर्मों के फल से सम्बन्ध पैदा करके मनुष्य को निर्मित वस्तुओं से अपेक्षा के बन्धनों में बाँध देता है। और यह बात अच्छी तरह समझ लो कि जब अपेक्षाएं पूरी नहीं होतीं तो मनुष्य के मन में क्रोध, घृणा और हिंसा पैदा होती है। (१४:७)

● हे भारत (अर्जुन)! लेकिन भटकाव वाले गुण को सारे मनुष्यों के विनाश और परेशानी का कारण समझो, क्योंकि यह ज्ञान के न होने से पैदा होता है, और वह मनुष्य को आलस्य में, कल्पनाओं में और परिणामों की परवाह न करने में फंसा देता है। (१४:८)

● अब हम श्लोक नं १४:१८ का अध्ययन फिर से करते हैं। इस श्लोक में केवल पुण्य

करने वालों का उल्लेख है। अच्छाई वाले गुण के व्यक्ति का नरक में जाने का उल्लेख नहीं है। और यह वह पुण्य करने वाले हैं। जो गुमराही (भटकाव) के गुणों वाले हैं। जिन्होंने खुद अपने आप यह तय कर लिया है कि, क्या पाप है और क्या पुण्य है।

● पुण्य करके भी लोग क्यों नरक में जाएंगे इस बात को समझाने के लिए मैं आपको कुछ उदाहरण देता हूँ।

● किसी भी जानदार को खाना खिलाना एक पुण्य का काम है। और किसी जानदार की जान बचाना यह उससे भी बड़ा पुण्य का काम है। यह दोनों पुण्य के काम हैं क्या इनमें कोई संदेह है? नहीं!

सन २०११-१२ में मुंबई शहर में बी.एम.सी के रिकॉर्ड के अनुसार लगभग ७० हजार (७०,०००) लोगों को आवारा कुत्तों ने काटा और मालवणी, धारावी, गोवंडी और ऐसी ही झोपडपट्टी वाले इलाकों में लोग कुत्तों के कारण रात में सफर करने से डरते हैं। और गरीबों को जो यह कुत्तों से तकलीफ हो रही है यह उन NGO संस्थाओं के कारण से हो रहीं है जो सरकार को भी मजबूर कर रखा है कि आवारा कुत्तों को ठिकाने न लगाए।

● इस सृष्टि को ईश्वर ने मानवजाति की सेवा और आराम के लिए पैदा किया है। कुत्ते इन्सान के लिए ईश्वर का एक बड़ा वरदान या उपहार हैं। कुत्ते एक वॉचमैन से ज्यादा वफादार और मालिक के लिए अपनी जान निछावर करने वाले होते हैं। मगर जब उनसे लोगों को तकलीफ होने लगे तो उनकी संख्या को नियंत्रित करना जरुरी है। जो कुत्तों की संख्या को नियंत्रित करने नहीं देते हैं और पुण्य समझकर कुत्तों को खाना खिलाते हैं और उनकी जान बचाते हैं। उनका यह पुण्य भी पाप है। क्योंकि इस पुण्य से लोगों को तकलीफ होती है। तो इस तरह का पुण्य करने वाले जो इन्सानों के आराम और सुरक्षा के खिलाफ काम करते हैं। वह पुण्य करने के बावजूद नरक में जलेंगे।

● इसी तरह दो इन्सानों की शादी करा देना बहुत बड़े पुण्य का काम है। मगर कोई आदमी की आदमी से या औरत की औरत से शादी करा दे, या समलिंगी (Homosexual) के अधिकार के लिए लड़े तो ऐसा पुण्य करने वाला पुण्य करके भी नरक में जाएगा। क्योंकि ऐसे इन्सानों की जाती (व्यक्तिगत) आजादी (Personal Freedom) इन्सानी समाज को बर्बाद कर देगी।

● इसी तरह सभी धर्मों में ऐसे बहुत से लोग होते हैं, जिन्हें अपने धर्म के ज्ञान में कोई रुचि नहीं होती है। वह लोग जमाने से जो परंपरा या रिवाज चला आया है उसी के मुताबिक जिंदगी गुजारते हैं। और प्रार्थना करते हैं। ऐसे लोगों को भी चिंता करनी चाहिए। अगर जमाने से लोग गलत श्रद्धा के मुताबिक उपासना करते हैं तो लोग ऐसी उपासना और पुण्य करके भी नर्क में जलेंगे।

तो पुण्य वहीं है जो ईश्वर की आज्ञा के अनुसार हो वरना सिर्फ पुण्य करने से भी स्वर्ग नहीं मिलेगा। बल्कि नरक ही मिलेगा। हां सजा कुछ हल्की होगी।

● इसलिए ईश्वर की आज्ञा को जानना और सत्य धर्म का ज्ञान होना बहुत जरुरी है।

****

17. F&MJej keâer ØeeLe&vee kewâmes keâjW?

ßाी कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि,

● भक्त को चाहिए कि नियोजित समय अनुसार भक्ति, यानी एक ईश्वर में एकाग्रता के लिए (१) सदैव अपने आप को शान्त जगह पर ले जाए, और एकांतवाली जगह पर स्थिर होकर, (२) अपने आप को निर्माता व शासक और मालिक न मानकर किसी और निर्मित वस्तु की ओर आकर्षित हुए, बिना, (३) अपनी बुद्धि और सोच को ईश्वर की याद में लगाए। (६:१०)

● पवित्र भूमि जो न बहुत अधिक ऊंची हो और न बहुत अधिक नीची हो, उस पर घास अथवा पतला मुलायम वस्त्र अथवा मृगछाया बिछाकर, अपने आप को मज़बूती से स्थित करके बैठ जाए। (६:११)

● इस आसन पर बैठकर, मन, इच्छाओं और कर्मों को वश में करके, मन में केवल एक सबसे श्रेष्ठ ईश्वर को रखते हुए ईश्वर की प्रसन्नता और मन को बुरे कर्मों से पवित्र करने के लिए भक्ति करे। (६:१२)

● शरीर, सर और गर्दन को सीधा रखकर मन को किसी (निर्मित वस्तु की ओर) न भटकाकर, एक ईश्वर की याद को स्थिर करके, किसी भी दिशा में न देखते हुए, अपनी नाक के अगले छोर पर मन को केन्द्रित करते हुए। (६:१३)

● (ईश्वर कह रहा है)शान्त मन के द्वारा, भय के बिना, ईश्वर के आदेश अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले की तरह, मन में ईश्वर की श्रद्धा को स्थिर करके, अपने आप को वश में रखते हुए, मुझे ही सबसे श्रेष्ठ मान कर, मुझ में ही अपनी बुद्धि और सोच को लगाकर बैठे। (६:१४)

ßाी कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि;

● इस तरह भक्त, सदैव अपने मन को वश में रखकर, नियोजित समय अनुसार भक्ति करते हुए, सच्ची शान्ति और मरने के बाद मेरे धाम यानी स्वर्ग के सबसे श्रेष्ठ शान्ति वाले धाम को पाता है। (६:१५)

● हे अर्जुन! लेकिन सच तो यह है कि भक्ति (१) न बहुत अधिक भोजन खाने वाला कर सकता है और (२) न बिलकुल भूखा रहने वाला कर सकता है और (३) न बहुत अधिक सोने वाला कर सकता है और न ही हर समय जागने वाला कर सकता है। (६:१६)

● (१) ईश्वर के आदेशों व नियमों के अनुसार भोजन करने से, (२) जीवन में हर कदम ईश्वरी आदेशों के अनुसार रखने से, (३) जीवन के सारे प्रयत्न और कर्मों को ईश्वर के आदेशों व नियमों के साथ जोड़ने से, (४) सोने और जागने में ईश्वरी आदेशों के साथ जुड़ा हुआ होने से, सही मानों में

भक्ति पूरी होती है। और यही भक्ति सारी अशान्ति, बेचैनी, दु:ख और विनाश का उपाय है। (६:१७)

● ईश्वर कह रहा है कि नि:संदेह इस तरह (१) जब भक्त सारी इच्छा भक्ति पर आधारित कर्मों और उनके फल की अपेक्षा को छोड़कर, (२) ईश्वर की श्रद्धा पर अपनी सोच को स्थित करके, (३) ईश्वरी आदेशों व नियमों से जुड़ कर कर्म करने लगता है, तब वह सही मानों में भक्ति में लगा हुआ है। (६:१८)

● ईश्वर याद दिला रहा है कि, जिस तरह बिना वायु वाले जगह पर रखा हुआ दीपक टिमटिमाता नहीं है, उसी तुलना में भक्त, जिसका हृदय और बुद्धि वश में है, उसका मन नियोजित समय के अनुसार एक ईश्वर में एकाग्र होने के कारण ईश्वर के आदेशों के पालन से (डगमगाता नहीं है।) (६:१९)

● नि:संदेह इस एकाग्रता की अवस्था में मनुष्य ईश्वर के होने का अनुभव अपने आप करता है, तो वह बिल्कुल सन्तुष्ट और शान्त हो जाता है, और इस हालत में दिव्य शान्ति के कारण उसकी सोच का ईश्वर की याद से जुड़ना, इस बात का साधन बन जाता है कि वह अपने आप को सारे अश्लील और बुरे कर्मों से दूर रख सके। (६:२०)

● नि:संदेह वह भक्त जो समझ बूझकर इच्छाओं से दूर हो जाता है, और सबसे श्रेष्ठ सुख को जान जाता है, तो फिर वह एकाग्रता के द्वारा उस ईश्वर की याद को स्थित करने से और सच्चाई से कभी भी नहीं हटता। (६:२१)

● और फिर उस ईश्वर को प्राप्त करके उसकी तुलना में किसी दूसरी वस्तु को और अधिक लाभदायक नहीं मानता। वह ईश्वर, जिसकी याद को एकाग्रता के द्वारा स्थित करके, वह भक्त बड़े से बड़े दु:खों में भी भटकता नहीं है। (६:२२)

● इसलिए उस ईश्वर की याद के साथ जुड़कर भक्ति करने को, सारे सांसारिक दु:खों का शिकार होने से मुक्त जानो। (६:२३)

● नि:संदेह हर तरह से समझ बूझकर सारी इच्छाओं को वश में करके सर्वथा इच्छा भक्ति से पैदा होने वाली सारी (इच्छाओं को) छोड़ने का संकल्प कर लो। बुद्धि और सोच को (एक ईश्वर की ओर से) भटकाए बिना, दृढ़ विश्वास और श्रद्धा के साथ भक्ति करने में लग जाओ। (६:२४)

● बुद्धि को सांसारिक अनावश्यक कर्मों में न लगा कर, किसी और (निर्मित वस्तु के बारे में) कुछ भी न सोचते हुए, धीरे धीरे पूरे विश्वास व श्रद्धा के साथ मन में (भक्ति के द्वारा एक) ईश्वर की याद को स्थिर करो। (६:२५)

● नि:संदेह जब-जब भटकने वाला मन, (एक ईश्वर की याद को) स्थिर न करके निर्मित वस्तुओं की ओर भटकने लगे, तब इस मन को ईश्वरी आदेशों, सिद्धांतों व नियमों के पालन में लगा कर, ईश्वर के वश में कर देना चाहिए। (६:२६)

● क्योंकि एक ईश्वर की (भक्ति करने वाला) मनुष्य अपनी बुराई वाले गुण को दबा कर पापों से मुक्ति पा लेता है और फिर ऐसा भक्त संतुष्ट मन और सर्वोच्च (स्वर्ग के) सुख को प्राप्त करता है। (६:२७)

● इस तरह अपने आप को सदैव नियोजित समय के अनुसार, एक ईश्वर में एकाग्रता वाली भक्ति में लगाने वाला भक्त, ईश्वर के भय का एहसास पा लेता है, और फिर सारी उलझनों और पापों से मुक्ति पाकर, सुखी और संतुष्ट हो जाता है और (मौत के बाद स्वर्ग के) सर्वोच्च सलामती (शान्ति) व सुख (वाले धाम) को प्राप्त करता है। (६:२८)

ईश्वर की प्रार्थना कैसे करें?

१. आप ने भगवद्गीता के अध्ययन से ईश्वर की प्रार्थना कैसे करें इसका ज्ञान प्राप्त किया। अब मैं आप को प्रत्यक्ष रुप से और व्यक्तिगत स्तर पर प्रार्थना कैसे करें इसके बारे में बताता हूँ।

२. सुबह सूर्योदय से एक घंटा पहले उठ जाएं।

३. स्नान करें। शरीर पर पानी डालने से पहले गरारह (Gargle) यानी गला साफ करें। नाक को पानी से नरम हड्डी तक साफ करें। फिर पूरा शरीर अच्छी तरह से धोएं। शरीर का कोई अंग एक बाल के बराबर भी सूखा न रहे।

४. अगर स्नान करना आप के लिए आवश्यक नहीं है तो केवल पहले चेहरा धोएं, फिर कोहनी तक दोनों हाथों को धोएं। फिर हाथों को गीला करके बालों के ऊपर से फेर लें। हाथ बालों पर आगे से पीछे की तरफ ले जाएं। फिर दोनों पैरों को टखनों (Ankle) तक धोएं। हर प्रार्थना के पहले इतनी सफाई आवश्यक है। अगर और अच्छी तरह सफाई करना चाहते हैं तो तीन बार कुल्ली करें, तीन बार नाक साफ करें, और चेहरा, हाथों को कोहनी तक और पैरों को टखनों तक तीन तीन बार धोएं।

५. फिर साफ कपड़ा बिछा कर पश्चिम कि ओर मुंह करके बैठो। (इसका कारण अध्याय के अंत में बताऊंगा।)

६. जिस कक्ष या कमरे में आप प्रार्थना के लिए बैठो, उस कमरे में कोई चित्र और प्रतिमा न हो।

७. प्रार्थना से पहले प्रेतआत्माओं से बचने के लिए अथर्ववेद का निम्नलिखित श्लोक पढ़ें।

अग्निः प्रातः सवने पात्वस्मान् वैश्वानरो विश्वशंभुः। (अथर्ववेद ०६:४७:०१)

अर्थ:- हे सर्व मानवजाति के प्रिय ईश्वर। ब्रह्माण्ड के रचयिता। प्रत्येक प्राणियों का उद्धार करने वाले। प्रात:काल की प्रार्थना में हमारी रक्षा कर।

अगर संस्कृत में याद न हो तो अपनी मातृभाषा में ही ईश्वर की शरण इन शब्दों में ले लें, जो कि श्लोक का भावार्थ है।

गायत्री मंत्र इस तरह है।

ॐ भूर्भुव: स्व:
तत्सवितुर्वरेन्यं
भर्गो देवस्य धीमहि
धीयो यो न: प्रचोदयात् ।।
(ऋग्वेद ३:६२:१०)

८. फिर जैसे ओम कहने के लिए आप को सिखाया गया है वैसे ओम कहें। अर्थात् आहिस्ता आहिस्ता सांस बाहर निकालते हुए मध्यम स्वर में ओम कहें।

इल्लोपनिषद के अनुसार ओम का अर्थ ईश्वर है। ओम कहना यह "हे ईश्वर" कहने जैसा है।

९. फिर २० मिनिटों तक या ४० बार गायत्री मंत्र को मध्यम स्वर में पढ़ें। मंत्र को पढ़ने के पहले एक गहरी सांस (Deep Breath) लें। फिर मंत्र को पढ़ते हुए सांस को बाहर छोड़ें। अगर पूरा मंत्र खत्म होने के पहले सांस खत्म हो जाए तो रुक कर गहरी सांस लें, फिर मंत्र पढ़ते हुए सांस छोड़ें। (सांस को अंदर लेते हुए मंत्र को न पढ़ें)

१०. मंत्र को पढ़ते समय आंखें बंद रखें। और प्राणायाम में जैसे बैठते हैं वैसे बैठें। या मांडी डालकर बैठें। पीठ सीधी रखें। और अपनी नाक के छोर पर ध्यान केन्द्रित करें। अर्थ मेडीट्रेशन जैसी अवस्था में प्रार्थना करें।

११. २० मिनिट इस प्रकार पढ़ने के बाद ओम कहें और आंखें खोल दें। इसके बाद अपने लिए, अपने परिवार के लिए अपने देश और सारी मानवजाति के कल्याण के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें।

- प्रार्थना या दुआ के श्लोक भी इस अध्याय के अंत मे लिखे हैं। याद न रहता हो तो भावार्थ समझ कर याद कर लें और ईश्वर से दुआ अपनी मातृभाषा में ही मांगे।

- प्रार्थना का जो तरीका हमने सीखा है। उसके कारण निम्नलिखित है।

हम प्रार्थना क्यों करें?

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है कि,

इस तरह भक्त, सदैव अपने मन को वश में रखकर, नियोजित समय अनुसार भक्ति करते हुए, सच्ची शान्ति और मरने के बाद मेरे धाम यानी स्वर्ग के सबसे शान्ति वाले धाम को पाता है। (६:१५)

अर्थात् हम स्वयं अपने इस जीवन में और मृत्यु के बाद के जीवन में सफलता के लिए

प्रार्थना करते हैं।

मंत्र पढ़ते हुए सांस धीरे धीरे क्यों छोड़ा जाता है?

जैसे किसी बैटरी के दो पोल (Pole) होते है। एक पॉजिटिव (धनात्मक) और दूसरा निगेटिव (ऋणात्मक)। इस तरह इस ब्रह्माण्ड में भी दो प्रकार की शक्तियां हैं। पॉजिटिव और निगेटिव। जब पॉजिटिव उर्जा शरीर में अधिक होती है तो इन्सान की सोच पॉजिटिव होती है। उसमें उत्साह और बहादुरी की भावनाएं होती हैं। उसका मन शांत रहता है। स्वास्थ अच्छा रहता है और वह जीवन में दुसरो से अधिक उन्नति करता है।

जब शरीर में निगेटिव उर्जा हो तो सब कुछ इसके विपरीत होता है।

जैसे एक चुंबक को लोहे पर एक खास प्रकार से धीरे धीरे रगड़ा जाए तो लोहे में भी चुंबक की शक्ति पैदा हो जाती है। इस तरह ईश्वर का नाम एक खास तरीके से लिया जाए तो शरीर में Positive Energy पैदा होती है। प्रार्थना के तरीके में हमने आप को ऐसा ही अपने आप में Positive Energy पैदा करने का एक तरीका बताया है।

पश्चिम की तरफ मुंह करके प्रार्थना क्यों करें?

ऋग्वेद का एक श्लोक इस प्रकार है,

इलासास्तवा वयं नाभा प्रार्थव्या आधि।

(ऋग्वेद ३-२९-४)

इस श्लोक का भावार्थ है कि ईश्वर का स्थान धरती के नाभ पर है। या धरती के केंद्र पर है।

हमारे देश भारत से पश्चिम की ओर धरती का केन्द्र है। इसलिए हम पश्चिम की ओर मुंह करके प्रार्थना करते हैं।

धरती का नाभ या केन्द्र कहाँ है यह जानने के लिए मेरी पुस्तक ''पवित्र वेद और इस्लाम धर्म'' का अध्याय नंबर चार पढ़िए।

प्रार्थना के पहले स्नान करने या मुंह हाथ धोने का क्या कारण है?

इसका कारण अपने शरीर पर एक दैविक सुरक्षा कवच बनाना है। जिससे हमारे मन और शरीर की प्रेत आत्माओं से सुरक्षा होती है। ऐसी दैविक सुरक्षा हमें क्यों प्राप्त होती है यह जानने के लिए मेरी पुस्तक "Law of success for both the world" में अध्याय नम्बर ३२ पढ़िए।

(मेरी २० से अधिक पुस्तकें आप "www.freeeducation.co.in" से मुफ्त डाउनलोड कर सकते हैं, या पढ़ सकते हैं।)

दुआ के श्लोकः

- **अवनो वृजिना शिषी हि।**

(ऋग्वेद १०:१०५:८)

''हे परमेश्वर आप हमारे पापों को हमसे दूर कीजिए।''

- **अवशसा निःषसा यत् पराशसोपरिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः।** (अथर्ववेद ०६:४५:२)

''जो पाप विश्वासघात, घृणा, या अपवाद से और जो पाप जागते या सोते हुए हमने किए हैं। हे परमेश्वर उन सभी अप्रिय दुष्कर्मों को हमसे दूर कर दे।''

● **शनः कुरू प्रजाभ्यः** (यर्जुरवेद ७:८६:०३)

हे प्रभु! हमारी संतान का कल्याण करो।

● ***यत्रानन्दाश्च मोदाषच् मुदः प्रमुद आसते। कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कुधी।।***
(ऋग्वेद १०:१५१:०५)

हे प्रभु! आनन्द और स्नेह जहाँ वर्तमान रहते हैं, जहाँ सभी कामनाएं इच्छा होते ही पूर्ण हो जाती हैं उसी अमर लोक में मुझे निवास दो।

● ***स श्रुतेन गमेमहि*** (अथर्ववेद ०१:०१:४)

हे परमेश्वर! हम ब्रम्हज्ञान से युक्त हों!

● ***ऋत्वः समहदीनता प्रतीपं जगमा शुचे मृला सुक्षत्र मुलय।।*** (ऋग्वेद ७:८६:०३)

हे सर्व शक्तिमान परमेश्वर! हम अपनी अज्ञानता से पथभ्रष्ठ होते हैं। हम पर कृपा करें।

● (पवित्र कुरआन के पहले अध्याय (सूरह) (१:१-७) का भावार्थ गायत्री मंत्र के जैसा ही है। और मैं (लेखक) इस सूरह को रोज सुबह १०० बार पढ़ता हूँ। विद्वान कहते हैं और मैंने अनुभव भी किया कि इस से स्वास्थ (Health) अच्छा रहता है, धन प्राप्त होता है। और सभी समस्याएं अपने आप सुलझ (Solve) जाती हैं।) गायत्री मन्त्र पढ़ने से आप को यही लाभ हो सकते हैं।

संपूर्ण भक्ति कैसे करें?

● भगवद्गीता का श्लोक नं ६:१७ हमने पिछले अध्याय में पढ़ा। उसे एक बार फिर से पढ़ते हैं।

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है कि,

१. ईश्वर के आदेशों व नियमों के अनुसार भोजन करने से,

२. जीवन में हर कदम ईश्वरी आदेशों के अनुसार रखने से,

३. जीवन के सारे प्रयत्न और कर्मों को ईश्वर के आदेशों, नियमों के साथ जोड़ने से,

४. सोने और जागने में ईश्वरी आदेशों के साथ जुड़ा हुआ होने से, सही तरीके से भक्ति पूर्ण होती है। और यही भक्ति सारी अशान्ति, बेचैनी, दु:ख और विनाश का उपाय है। (६:१७)

● इस श्लोक को बार बार पढ़ो, और मन में बैठा लो। यही सफलता का सूत्र है।

● सुबह स्नान करके ४० बार गायत्री मन्त्र पढ़ने के बाद या कुछ देर किसी और प्रकार की प्रार्थना करने के बाद सारा दिन मनमानी तरीके से जिन्दगी गुजारने से न ईश्वर की संपूर्ण भक्ति होती है। और न मरने के बाद

मुक्ति मिलेगी।

ईश्वर की संपूर्ण भक्ति करने के लिए और मरने के बाद मुक्ति पाने के लिए हमारा २४ घंटे का जीवन भी ईश्वर के आदेशों के अनुसार ही हो। तभी तीनों लोक में सफलता मिलेगी।

ईश्वर के कुछ आदेश इस प्रकार हैं;

● सुबह जल्दी उठो और ईश्वर की प्रार्थना करो। (अथर्ववेद ०६-४७-०१)

● भोजन, खाने और सोने में मध्यम मार्ग (Middle Path) का अनुसरण करें। (भगवद्गीता ६:१६)

इस संसार को अपना परिवार समझो:-

● उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम

● यह मेरा है, यह तेरा है ऐसी सोच तुच्छ नीच लोग रखते हैं, यह दुनिया मेरा परिवार है ऐसी सोच केवल उच्च विचारों से प्रेरित लोग ही करते हैं। (पवित्र वेद)

जुआ मत खेलो :-

● "जुआ खेलनेवाले व्यक्ति की सास उससे घृणा करती है, और उसकी पत्नी भी उसे छोड़ देती है, जुआरी को कोई एक फूटी कौड़ी भी उधार नहीं देता।" (ऋग्वेद १०-३४-३)

● "हे जुआरी! जुआ खेलना छोड़कर खेती कर, उसमें जो लाभ हो उसी में सन्तुष्ट रहो।" (ऋग्वेद १०-३४-१३)

ब्याज का लेन-देन न करें :-

● "अधिक धन प्राप्त करने की आशा से धन उधार देने वालों के धन को (हे ईश्वर) तुम छीन लेते हो।" (ऋग्वेद ०३-५३-१४)

बड़ों का आदर करें :-

● (ऐ मनुष्यों!) तुम अपने से बड़ों का आदर करो और अपने मन में अच्छे विचार उत्पन्न करो। आपस में मतभेद मत करो, दोस्ती करो और एक साथ रहो। अच्छे कर्म करते हुए मेरे पास आओ, मैं तुममें समझ और अच्छे विचार पैदा करुंगा। (ऋग्वेद १०/१९१/३)

● बेटे को अपने पिता का सहयोगी होना चाहिए और माँ का आज्ञाकारी होना चाहिए। (अथर्ववेद ०३/३०/०२)

● ईश्वर मानवजाति को सुमधुर विचार, सहनशक्ति और द्वेषरहित भावना से पुरस्कृत करेंगे। जैसे गाय अपने बछड़े पर प्रेम करती है वैसा ही प्यार एक दूसरे पर करने की सूचना ईश्वर देता है। (अथर्ववेद ०३/३०/०१)

दान करो:-

● दान करनेवाले दानी लोग अमर हो जाते हैं। उन्हें न किसी चीज़ का डर होता है न दु:ख। विनाश से उनको संरक्षण मिल जाएगा। दान करने से ये दानी लोग सफल होते हैं और मृत्यु के पश्चात स्वर्ग प्राप्ति करते हैं। (अथर्ववेद १०/१९७/०८)

● जो अपनी मेहनत से कमाया हुआ खाना

अकेले ही खाते हैं (दूसरों को दान नहीं करते) तब वे गलत मार्ग से कमाया हुआ खाना खाने जैसा ही है। (अथर्ववेद १०/११७/०८)

● ईश्वर के उपदेशों के अनुसार भक्ति करने से नि:संदेह, देवता तुम्हें जीवन की आवश्यक सारी वस्तुएं देंगे। उनके द्वारा दी गई वस्तुओं को दूसरों को दिए बिना अथवा दूसरों के कल्याण में लगाए बिना, जो उनका उपभोग करता है, वह सच में चोर है। (३:१२)

महिलाओं के लिए आदेश :-

● चूंकि ब्रम्ह ने तुम्हें नारी बनाया है, इसलिए नज़रें नीची रखो, ऊपर नहीं, अपने पैरों को समेटे हुए रखो, ऐसा वस्त्र पहनो कि कोई तुम्हारा शरीर न देख सके। (ऋग्वेद ०८-३३-१९)

● पत्नी को हमेशा पति से मधुर वाणी में बात करनी चाहिए। (अथर्ववेद ३/३०/०२)

● ''वहां तुम सबसे कुशल गृहणी बनो और पति के घर में रहते हुए घर के नौकरों पर राज करो। हे नारी! पति के घर में मां बनकर सुख पाओ, पति से प्रेम के सम्बन्ध स्थापित करो और वृद्धावस्था तक अपने घर में राज करो।'' (ऋग्वेद १०-८५-२५,२६,२७)

● ईश्वर के और बहुत से आदेश हैं जो आप अन्य ग्रन्थों में पढ़ लीजिए।

****

पुनर्जन्म की चर्चा क्यों ?

भगवद्गीता के पवित्र ज्ञान के साथ हम पुनर्जन्म की चर्चा क्यों करने जा रहे हैं?

● पुनर्जन्म ही वह श्रद्धा या आस्था या विश्वास है जिस के कारण लोग धार्मिक शिक्षा को अधिक महत्त्व नहीं देते हैं।

● पुनर्जन्म में विश्वास रखने वाले ऐसा सोचते हैं कि वह जो पाप करते हैं उसका दण्ड उनको इसी धरती पर बार-बार फिर जन्म लेकर भोगना होगा। तो कोई बात नहीं। इस जन्म में तो ऐशोआराम की (मनमानी) जिंदगी जीने दो। दूसरे जन्म में पुण्य करके मुक्ति पा लेंगे।

● अगर लोगों को इस सत्य का ज्ञान हो जाए की मरने के बाद पुण्य करने का दूसरा अवसर नहीं मिलेगा। और मरने के बाद ईश्वर को अपने कर्मों का हिसाब देना है। और अगर पाप अधिक हुए तो हमेशा के लिए नरक में जलना पड़ सकता है। तो लोग अपनी जीवनशैली, अपनी श्रद्धा और अपने कर्मों के प्रति चिंतित रहेंगे। वह धर्म ज्ञान को जान कर उसका पालन करने का प्रयास करेंगे। इसलिए पुनर्जन्म के विषय में चर्चा करना मैंने आवश्यक समझा है।

18-hegvepe&vce keäÙee nw?

hegvepe&vce keäÙee nw?

● पुनर्जन्म दो शब्दों से बना है। पुन: और जन्म। पुन: का संस्कृत भाषा में अर्थ है दूसरी बार। और जन्म का अर्थ तो आप जानते ही हैं कि एक नया जीवन मिलना। तो पुनर्जन्म का अर्थ हुआ दूसरी बार नया जीवन मिलना।

तो पुनर्जन्म इस शब्द के अर्थ से ही हम समझ सकते हैं कि पुनर्जन्म यह शब्द धार्मिक ग्रंथों में मरने के बाद सिर्फ एक बार दूसरा जीवन मिलने के लिए प्रयोग हुआ है। न कि बार-बार जीवन और मृत्यु के लिए।

● पुनर्जन्म का अर्थ है कि मृतक को मरने के बाद केवल एक बार फिर से नया जीवन हमेशा के लिए मिलेगा। मगर ऐसा केवल एक बार होगा। बार बार नहीं। इसके बावजूद लोग पुनर्जन्म का अर्थ मरने के बाद इसी धरती पर फिर से बार बार जन्म लेने का ही लेते हैं, और इसे वह आवागमन कहते हैं।

● अब चूंकि लोग पुनर्जन्म का अर्थ आवागमन का ही लेते हैं, जो कि गलत है। मगर प्रसिद्ध यही गलत अर्थ है। इसलिए हम भी इस पुस्तक में जब भी पुनर्जन्म शब्द का प्रयोग करेंगे तो हम भी इसे आवागमन के अर्थ के लिए ही प्रयोग करेंगे। ताकि लोगों को मेरी बात समझने में आसानी हो।

hegvepe&vce keâer efJeÛeejOeeje (Concept) Fme lejn nw~

१) इन्सान मरने के बाद इसी धरती पर फिर से जन्म लेगा। परन्तु उसका दूसरा जन्म उसके पापों के अनुसार होगा। पहले जन्म में जितने अधिक पाप किए होंगे, दूसरे जन्म में उतनी अपमानजनक जीवनशैली उसे मिलेगी।

२) मृत्यु के समय अगर सूर्य दक्षिण की ओर होगा तो एक सज्जन और पवित्र मृतक को भी स्वर्ग का रास्ता नहीं मिलेगा। सूर्य जब उत्तर की ओर होगा तब ही एक सज्जन पुरुष को स्वर्ग का रास्ता मिलेगा।

३) बृहदारनायक उपनिषद में लिखा है कि जो लोक पंचाग्नी विद्या को जानते हैं और वन में रह कर ईश्वर की प्रार्थना करते हैं, केवल वही लोग स्वर्ग प्राप्त कर पाएंगे। बाकी सारे लोग मृत्यु के बाद आवागमन के चक्कर में फंसे रहेंगे।

पुनर्जन्म की और भी बहुत सारी विचारधाराएं हैं, मगर इस छोटी सी पुस्तक में उन सब का लिखना सम्भव नहीं है।

****

hegvepe&vce keâe Âef°keâesCe keäÙeeW ieuele nw?

- heefJe$e Jeso ner efnvot Oece& kesâ meyemes ØeceeefCekeâ (Authentic) «evLe nQ~ Deewj JesoeW ceW DeeJeeieceve keâer efyeukegâue efMe#ee Ùee JeCe&ve veneR nw~ Fmekesâ efJehejerle DeeJeeieceve keâe JesoeW ceW efJejesOe efkeâÙee ieÙee nw~

- hegvepe&vce keâe JeCe&ve efvecveefueefKele leerve hegmlekeâeW ceW efceuelee nw~

1) ceneYeejle

2) ÚeboesiÙe Gheefve<eo

3) बृहदारण्यक Gheefve<eo

- cenejepe efJekeâemeevevo yeÇcnÛeejer Ùen efnvot Oece& kesâ Skeâ %eeveer Deewj Øeefmeæ DeeÛeeÙe& nQ~ peye GvneWves leerveeW «evLeeW keâe DeOÙeÙeve efkeâÙee lees heeÙee keâer leerveeW «ebLeeW ceW oesveeW Øekeâej keâer efMe#eeSb nQ, Ùee hegvepe&vce keâe JeCe&ve nw~ DeLee&led Fve «evLeeW ceW heefJe$e JesoeW keâer lejn hegvepe&vce veneR nesves keâe GuuesKe Yeer nw~ Deewj hegvepe&vce kesâ nesves keâe Yeer GuuesKe nw~

Deewj hegvepe&vce nesves Jeeues MueeskeâeW ceW yengle celeYeso nw~ Ùee Deueie Deueie MueeskeâeW ceW Deueie Deueie yeele keâner ieF& nw~

cenejepe efJekeâemeevevo peer keânles nQ efkeâ melÙe efmLej Deewj Skeâ meceeve jnlee nw~ Deewj

19. metÙe& kesâ Gòej ceW nesves keâe keäÙee De

● महाभारत के युद्ध के समय सूर्य दक्षिण की ओर था। गम्भीर रुप से घायल होने के बावजूद भीष्म पितामह ने अपने मृत्यु को सूर्य के उत्तर कि ओर आने तक टाले रखा। तो इस अध्याय में हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि सूर्य के उत्तर में होने का क्या अर्थ है।

● हजारों वर्ष से उत्तरी भारत के लोगों को पृथ्वी के उत्तर भाग के ऋतुओं का पूरा ज्ञान था।

औरंगाबाद में पवनचक्की के पास एक रुस के वली का मजार (कबर) है। यानी प्राचीन काल में लोग रुस (Russia) से भारत भी आया करते थे। इसलिए भारतीय लोगों को इस बात का ज्ञान था कि जब सूर्य उत्तर की ओर होता है तो पृथ्वी के उत्तरी भाग में दिन बड़े और रातें बहुत छोटी होती हैं। नॉर्थ पोल (North pole) पर ३ महीने दिन २४ घंटे का होता है और रात नहीं होती है।

● हमारे देश में भी उत्तरी भारत के क्षेत्र में गर्मियों के मौसम में जब सूर्य उत्तर की ओर होता है तो दिन बड़े और रातें छोटी होती हैं।

● वर्ष के छ: महीने सूर्य उत्तर की ओर होता है और दिन बड़े और उज्वलित होते हैं। इसलिए समझाने के लिए वेद में यह उदाहरण दिया गया है कि स्वर्ग के रास्ते उज्वलित हैं और वह ऐसे उज्वलित हैं जैसे सूर्य उत्तर की ओर हो।

● तो सूर्य का उत्तर की ओर होना यह उज्वलित होने का केवल उदाहरण है। सूर्य के उत्तर या दक्षिण में होने से स्वर्ग के मार्गो का कोई सम्बन्ध नहीं है।

● ऐसे श्लोक जिनमें स्वर्ग के मार्ग का वर्णन है वह निम्नलिखित हैं।

● ''हम सब कौन से मार्ग से जायेंगे वह (मार्ग) यमदेव (अर्थात् परलोक का मालिक या ईश्वर) पहले ही दिखा देते हैं। वह मार्ग कभी नष्ट न होने वाला है। जिस मार्ग से पूर्व गण गये हैं, प्रत्येक प्राणी अपने-अपने कर्मों के अनुसार उसी मार्ग से जायेंगे।'' (ऋग्वेद १०-१४-२)

● ''जो लोग ज्ञान रखते हैं, वे दूसरों से पहले जीवन प्रदान करने वाली सांस लेकर इस शरीर से निकल कर आकाश में पहुंचकर अपने समस्त साथियों के साथ रहते हैं। जिन मार्गों से देवताओं ने यात्रा की थी, उनसे गुजरते हुए स्वर्ग पहुंच जाते हैं।''
(अथर्ववेद : २-३४-५)

● ''पवित्र करने वालों के द्वारा पवित्र होकर, ऐसे शरीर के साथ जिसमें अस्थियां न होंगी, वे प्रतापवान और प्रज्वलित होकर उजालों के संसार में पहुंचते हैं। उनके उल्लसित शरीरों को आग नहीं जलाती है।

स्वर्ग लोक में उनके लिये बड़ा आनन्द है। (अथर्ववेद : ४-३४-२)

● ईश्वर को जानने वाले और उसकी प्रार्थना करने वाले मनुष्य, मरने के बाद ईश्वर की ओर उज्वल मार्ग के द्वारा (इस तरह) जाएंगे कि वहाँ (ऐसा लगेगा जैसे) छह महीने सूर्य उत्तर की ओर चला गया है, (जिस के कारण) दिन है, उजाला है और प्रकाश फैला हुआ है। (भगवद्गीता ८:२४)

● मेरे द्वारा वेदों में भी मरने के बाद इस संसार से जाने के लिए दो मार्ग बताए गए हैं। इन दोनों मार्गों में नि:संदेह एक उज्जवल मार्ग है और दूसरा अंधकारमय मार्ग है। एक मार्ग जन्म और मौत की बार बार वापसी न होने वाले धाम (स्वर्ग) की ओर जाता है, और दूसरा अंधकारमय मार्ग है जो कि बार बार जन्म और मौत की वापसी वाले नरक के धाम की ओर जाता है। (भगवद्गीता ८:२६)

● ऊपर बताए गए श्लोकों से आप समझ सकते हैं कि,

१) यमदूत मृतक को स्वर्ग और नर्क का मार्ग पहले ही बता देता।

२) यह स्वर्ग और नर्क के मार्ग उस व्यक्ति के कर्मों के आधार पर होंगे।

३) स्वर्ग के मार्ग उसी तरह उज्वलित हैं जैसे जब सूर्य उत्तर की ओर होता है तो दिन बहुत अधिक उज्वलित रहते हैं।

४) सूर्य के उत्तर और दक्षिणायण में होने से स्वर्ग के मार्ग का कोई सम्बन्ध नहीं है।

● ''सूर्य का उत्तर या दक्षिण में होने का स्वर्ग के मार्ग से कोई सम्बन्ध नहीं,'' इस तथ्य (Fact) को बहुत सारे विद्वान भी मानते हैं। जैसे आचार्य शंकरजी ने अपनी पुस्तक ''वेदान्त दर्शन'' में लिखा है कि छान्दोग्य उपनिषद में लिखा है कि आत्मा सूर्य की किरणों की सहायता से ऊपर की ओर प्रवास करती है। किन्तु आप अगर कहो की रात को सूर्य कि किरणें नहीं होती हैं तो ऐसा कहना गलत है। क्योंकि सूर्य की किरणें मनुष्य के नाड़ी की गर्मी से उस समय तक हमेशा जुड़ी रहती हैं जब तक मनुष्य जीवित रहता है।

या मनुष्य जब तक जीवित रहता है उसकी नाड़ी से निकलने वाली ऊर्जा सूर्य की ऊर्जा से हमेशा सम्पर्क में रहती है। इसलिए किसी भी समय मृत्यु हो एक सज्जन मनुष्य को परलोक का उज्वलित मार्ग तलाश करने या पाने में कोई कठिनाई नहीं होती है। इसलिए ऐसा सोचना गलत है कि जब सूर्य उत्तर की ओर होगा तब ही मुक्ति मिलेगी।

(पुनर्जन्म एक रहस्य पेज नं-११)

****

20. ceneYeejle ceW hegvepe&vce keâê GuuesKe

● महाकाव्य महाभारत के लेखक श्री महर्षि वेद व्यासजी ने स्वयम इस महाकाव्य में पुनर्जन्म होता है ऐसा साफ तौर पर कहीं नहीं लिखा है। परन्तु इस महाकाव्य में भीष्म पितामह की मृत्यु पुनर्जन्म की तरफ इशारा करती है। इसलिए हम यह पता करने का प्रयास करते हैं कि भीष्म पितामह की मृत्यु के बारे में जो महाभारत में लिखा है उसमें कितना सत्य है।

● भीष्म पितामह की कहानी संक्षिप्त में इस तरह है।

महाभारत के युद्ध में आप कौरव के सेनापति थे। युद्ध के आरंभ के दस दिनों में आप बहुत वीरता से लड़े और पांडवों के लाखों सैनिकों का वध कर दिया। लेकिन जब भीष्म पितामह युद्ध में अर्जुन के तीरों से घायल होकर अपने रथ से गिरे तो उनके शरीर में इतने तीर आरपार धंसे हुए थे की उनका शरीर धरती को छुने के बदले तिरों के ऊपर ही रुका रहा था। ऐसा लगता था कि वह तीरों के चारपाई पर सो रहे हैं।

● महाभारत के युद्ध के समय सूर्य दक्षिण की ओर था। अर्थात् दक्षिणायण काल चल रहा था। कथानुसार भीष्म पितामह का ऐसा विश्वास था कि ऐसे समय एक सज्जन पुरुष की भी अगर मृत्यु होती है तो वह भी स्वर्ग का मार्ग नहीं प्राप्त कर सकता है। इस कल्पना के कारण भीष्म पितामह ने अपने पिता से अपने मृत्यु को सूर्य के उत्तर में आने तक अर्थात् उत्तरायण तक आगे बढ़ाने की आज्ञा चाही और आज्ञा मिलने पर वह बहुत दिनों तक शरशैय्या पर लेटे रहे फिर देहत्याग किया।

● महाराज विकासानन्द ब्रम्हचारी जी के शोध के अनुसार भीष्म पितामह के शरशैय्या पर मृत्यु के सम्बन्ध में जो महाभारत में श्लोक हैं वह प्रक्षिप्त हैं। अर्थात् बाद में जोड़े गए हैं। (पुनर्जन्म एक रहस्य पं.८)

● महाराज के शोध के अनुसार भीष्म पितामह जब गम्भीर रुप से घायल हो कर रथ से गिरे थे उसी समय उनकी मृत्यु हो गई थी।

● महाराज विकासानन्द ब्रम्हचारीजी के अनुसार यह विश्वास भी गलत है कि जब सूर्य दक्षिण में होता है उस समय मरने वाले को मुक्ति नहीं मिलती।

● महाराज जी ने इन दोनों के गलत होने के जो कारण वेदों और स्वयंम महाभारत जैसे महाकाव्य से बताए हैं वह निम्नलिखित हैं।

भीष्म पितामह की मृत्यु का वर्णनः-

● महाराज विकासानन्द ब्रम्हचारीजी के अनुसार भीष्म पितामह के पिता शंतनु को इच्छा मृत्यु का वरदान देने का अधिकार न था। क्योंकि शंतनु के दो पुत्र पहले ही मर चुके थे। अगर शंतनु को मृत्यु को आगे बढ़ाने का अधिकार होता तो उनके दोनों पुत्र क्यों मरते?

● महर्षि श्री वेद व्यास जी हिन्दू धर्म के सबसे बड़े विद्वान हैं। महाभारत महाकाव्य यह आप ने लिखी है। भगवद्गीता को पुस्तक के रुप में

आपने ही लिखा है। चारों वेदों में ऋचा और सुक्त की तरतीब आप ही ने दी है। आप ने १७ पुराण लिखे हैं। जिनमें भविष्य पुराण भी एक है।

● वेद व्यास जी ने केवल २४००० श्लोक महाभारत में लिखे थे। आज उनकी संख्या एक लाख से अधिक है। यह ७५००० से अधिक श्लोक बाद में जोड़े गए हैं।

(पुनर्जन्म एक रहस्य पं. १४)

● महाभारत के अट्ठारह पर्व में से एक पर्व का नाम भीष्म पर्व है। इस पर्व के चार उप-पर्व हैं। जिनके नाम निम्नलिखित हैं।

१) जम्बुखण्ड विनिर्माण पर्व
२) भूमि पर्व
३) श्रीमदभगवदगीता पर्व
४) भीष्म वध पर्व

● महाराज विकासानन्द ब्रम्हचारी जी कहते हैं कि गम्भीर रुप से घायल होकर जीवित रहना यह एक अद्‌भुत और महत्त्वपूर्ण घटना है। अगर वास्तविक रुप से ऐसा हुआ होता तो वेद व्यास जी कभी उसे नजर अन्दाज (Neglect) न करते। मगर ऐसा नहीं हुआ था। इसलिए उन्होंने भी उस पर्व का नाम शरशैय्या पर्व न रखा बल्कि भीष्म वध पर्व रखा।

● महाभारत के आरंभ के दो पर्व का नाम पर्व संग्रह है। इन दोनों में 'महाभारत' पुस्तक के अध्यायों और घटनाओं का वर्णन (Details of Topics) है।

● पर्व संग्रह के अनुसार भीष्म पर्व में कुल ११७ अध्याय और ५८८४ श्लोक होने चाहिए थे। मगर इस समय अध्याय की संख्या १२२ और श्लोकों की संख्या ६१०० है। महाराज विकासानन्द जी कहते हैं कि यह इस बात का प्रमाण है कि महाभारत में बाद में श्लोक और अध्याय जोड़े गए हैं।(पुनर्जन्म एक रहस्य पं.६)

● भीष्म पितामह के शरशैय्या पर लेटने की घटना यह बाद में जोड़ी गई है। इसके कुछ प्रमाण निम्नलिखित हैं;

● भीष्म पर्व के अध्याय १३ और १४ में संजय धृतराष्ट को भीष्म पितामह के वध की जानकारी दे रहे हैं। तो होना तो यह चाहिए था कि दोनों अध्याय में केवल भीष्म पितामह के बाणों के बिस्तर पर (शरशैय्या पर) लेटने का वर्णन होता। मगर अध्याय १३ में चार बार और अध्याय १४ में १३ बार भीष्म पितामह के मृत्यु की बात कही गई है। अध्याय १३ के वह चार श्लोक निम्नलिखित हैं।

1] *निहंत भीष्म भरतानां पितामह ११*(13/2)
2] *हतो भीष्मः शान्तनवो भरतानां पितामहः ११*(13/3)
3. *सशेते निहतो राजन संख्ये भीष्मः शिखण्डिना ११*(13/5)
4. *न हतो जाम दग्न्येन स हनोहृदय शिखण्डिना ११* (13/2)

● इसी तरह पहले पर्व संग्रह के श्लोक नं १८३ और १८४ में भी भीष्म पितामह के मृत्यु का वर्णन है, न कि शरशैय्या पर लेटने का। वह श्लोक निम्नलिखित हैं।

1) *स्वयं मृत्यु विहिंत घार्मिकेम।*
(cene:Deeefo heJe&-1/183)
2) *यथोश्रोवं भीष्ममत्यान्तशूरं हतं पार्थे नाह*

वेष्व प्रधृश्यम। (Deeefo-1/84)

● महाराज विकासनन्द जी लिखते हैं कि महाभारत के लेखक श्री वेद व्यास जी ने महाभारत महाकाव्य में बहुत सारे महापुरुषों के मृत्यु की घटना का वर्णन किया है। जैसे अभिमन्यु, द्रोणाचार्य, कर्ण इत्यादि। मगर श्री. वेद व्यास जी ने स्वर्ग रोहण पर्व, अध्याय ५ मंत्र नं २७-२६ में इन सभी को स्वर्ग प्राप्त हुआ ऐसा लिखा है। जब कि उस समय सूर्य दक्षिण में था। तो भीष्म पितामह को गम्भीर रुप से घायल होने के बाद भी बहुत दिनों तक शरशैय्या पर लेटे रहने का क्या कारण था? कोई कारण नहीं था।

● श्री वेद व्यास जी ने पूरे महाभारत में कहीं पर भी किसी के पुनर्जन्म का वर्णन नहीं किया है। इसलिए महाभारत में भीष्म पितामह के पुनर्जन्म के डर से शरशैय्या पर लेटने की घटना यह बाद में महाभारत में जोड़ी गई है। और यह सही नहीं है।

● ऊपर हमने जो कुछ कहा उसका सार यह है कि हिन्दू धर्म के सबसे महान विद्वान महर्षि श्री वेद व्यास जी पुर्नजन्म में विश्वास नहीं रखते थे। न उन्होंने किसी को इसकी शिक्षा दी और न इसे किसी ग्रंथ में लिखा।

● महाभारत में भीष्म पितामह का अपनी मृत्यु को पुनर्जन्म के डर से आगे बढ़ाने की जो घटना का वर्णन है, वह महाभारत में बाद में जोड़ा गया है। वह वेद व्यास जी की शिक्षा नहीं है।

****

(hespe 36 ßeer jece peer keâewve nw?)

नालन्दा विशाल शब्द सागर (डिक्शनरी) में राम नाम का अर्थ श्री रामचंद्र जी के नाम के साथ ईश्वर का नाम भी बताया गया है। इसलिए बहुत से श्लोक जिसमें राम नाम का अर्थ हम श्री रामचंद्र जी का लेते हैं वह राम नाम ईश्वर के लिए भी हो सकता है।

भगवद्गीता का एक श्लोक इस प्रकार है,

(संजय ने धृतराष्ट्र से कहा)जहाँ **ईश्वर से सम्पर्क रखने वाले कृष्ण** हैं और जहाँ धनुष रखने वाले पार्थ (अर्जुन) हैं, वहाँ पूर्णतया सुख और शान्ति, विजय, अच्छा भाग्य, सही नीति, और धैर्य यानी सब्र है, ऐसा मेरा मानना है। (१८:७८)

जो पद श्री कृष्ण जी का है वही पद श्री रामचन्द्र जी का भी है। जैसे श्री कृष्ण जी ईश्वर से सम्पर्क रखने वाले थे। वैसे ही श्री रामचन्द्र जी भी ईश्वर से सम्पर्क रखने वाले थे। आप ईश्वर के आदेशों को मानवजाति को बताने वाले थे। आप एक आदर्श पुरुष थे। इसलिए जो समाज भी आप के आदेशों और उपदेशों को मानेगा उस समाज में भी सुख, शान्ति और उन्नति होगी। या उस समाज में रामराज्य होगा।

****

21-ÚeboesiÙe Gheefve<eo ceW hegvepe&vce keâe C

● महर्षि वेद व्यास जी के एक शिष्य का नाम ऋषि वैश्यंम्पायन था। और ऋषि वैश्यंम्पायन के शिष्य का नाम ऋषि ताण्ड था। ताण्ड ने सामवेद के एक शाखा पर शोध किया, फिर उसकी व्याख्या की जिसे ताण्ड शाखा कहा जाता था।

● इस ताण्ड शाखा के एक भाग का नाम छांदोग्य उपनिषद है। इस छांदोग्य उपनिषद में दस भाग हैं। जिसमें के ८ भाग को एक पुस्तक का रुप दिया गया है जिसे छांदोग्य उपनिषद कहते हैं।

● छांदोग्य उपनिषद में ६ अध्याय १५२ खण्ड और ६२८ मन्त्र हैं। इस उपनिषद में दो जगह परलोक के रास्ते और पुनर्जन्म का विस्तारपूर्वक वर्णन है।

अध्याय ५ खण्ड १० के सभी १० मन्त्रों में परलोक के रास्तों की व्याख्या है। अध्याय ८ के खण्ड ६ के पांचवे मन्त्र में भी परलोक के रास्तों का वर्णन है।

● छांदोग्य उपनिषद के अध्याय ५ और खण्ड १० के आठ श्लोकों का वर्णन निम्नलिखित है;

cev$e veb-1 " *तद्य इत्थं विदुर्ये चेमेहरण्ये श्रद्धा तप इरयुपासते ते हर्चिषममि संमवन्चर्चिपोहरह आपूर्यमाण-पक्षमा पूर्यमाण पक्षा धान्श डु दङ् डेति मासांस्तान् ।।*"

अनुवाद:- जो पन्चाग्नि के ज्ञान को प्राप्त करते हैं और जंगल में रहते हुए सच्ची श्रद्धा से प्रार्थना करते हैं वह मरने के बाद तेज प्रकाश की किरणों पर सवारी करते हैं। किरणों से दिन, दिन से शुक्ल पक्ष, फिर शुक्ल पक्ष से उत्तरायण के छ: महीनों को पा लेते nQ~ (अध्याय ५, खंड १०, श्लोक १)

cev$e veb-2 " *मासेभ्य संवत्सर संवत्सरा दादित्य मादित्याच्चन्द्रमसं चन्द्रमसो विद्युतं तत्पुरुषों हमानवः स इनान्ब्रह्म गमयत्येश देवयानः पन्था इति ।।*"

अनुवाद:- उत्तरायण के छ: महीनों के बाद संवत्सर को पा लेते है। संवत्सर से आदित्य, फिर आदित्य से चंद्रमा। फिर चन्द्रमां से विद्युत को पा लेते हैं। वहाँ पर एक पवित्र आत्मा है जो मृतक को परब्रम्हा से मिला देती है। वहीं पर स्वर्ग का रास्ता यानी देवयान है। (श्लोक नं. २)

मन्त्र नं १ और २ का भावार्थ:- अर्थात् स्वर्ग का रास्ता उन्हीं को ही मिलता है जो जंगल में पंचाग्नि %eeve kesâ ceeOÙece mes ØeeLe&vee keâjles nQ~

cev$e veb-3 "*अथ य इमे भ्राम इष्टापूर्ते दन्तमिव्युपासते ते धूममभिसं भवन्ति धूमाद्रत्रिं रात्रेर पर पक्षम*

परपक्षाद्यान्ष इदक्षिणैति मासांस्तान्नैते संवत्सर गभि प्राप्नुवन्ति।।"

अनुवादः- और जो लोग शहरों और गांवों में रहते हैं और जो ईश्वर की प्रार्थना के द्वारा या समाज सेवा के माध्यम से, या दान पुण्य के माध्यम से प्रार्थना करते हैं, वह मरने के बाद धुएं पर सवारी करते हैं। धुएं से रात में, फिर रात से कृष्णपक्ष को पा लेते हैं। इन लोगों को सवंत्सर नहीं मिलता।

cev$e veb-4 *"मासेभ्यः पितृलोकं पितृलोकादाश माकाशाच्चन्द्रमसमेष सोमो राजा तददेवाना मङ्गं तं देवा भक्ष्यन्ति।।"*

D**ानुवादः-** कृष्णपक्ष से वह दक्षिणायण को ग्रहण करते हैं। (दक्षिणायण यानि जब सूर्य दक्षिण की ओर होता है।) फिर वह पितृलोक को हासिल करते हैं, फिर पितृलोक से आकाश, फिर आकाश से चंद्रमां को पा लेते हैं। यह चंद्रमां ही राजा सोम है। वह सभी का अन्न है। सभी देवगण उसका भक्षण करते हैं।

cev$e veb-5 *"तस्मिन्या वत्सं पात भुषित्वा थैत मेवाध्यानं पुनर्निबर्तन्ते यथेतमाकाशा द्वायुं वायुर्भूत्वा घूमो भवति घूमो भूत्वाभ्रं भवति।। "*

अनुवादः- जब तक अच्छे कर्म के बदले अच्छे दिन गुजारने का समय होता है, वह चंद्र मण्डल में रहते हैं। फिर उसके बाद बताए हुए रास्ते से लौट आते हैं। पहले वह आकाश पर आते हैं, फिर हवा पर सवार होते हैं। फिर धुँएं पर सवार होते हैं। फिर धुँएं से बादल बन जाते हैं।

cev$e veb-6 *"अभ्रं भूत्वा मेधो भवति मेधो भूत्वा प्रवर्षति त इह व्रीहियवा औषधि वनस्पत यस्ति लाभाषा इति जायन्ते हतो वै खलु दुर्निश्प्रपतरं यो द्यन्नभन्ति यो रेतः सिन्चति तध्दुय एवं भवति।।"*

अनुवादः- फिर बादलों से वर्षा के रुप में बरसते हैं। उस समय वह सभी आत्माएं इस दुनिया में चावल, जौ, दवाएं, पेड़, पौधे, उड़द की दाल और तिल वगैरह बनकर प्रकट होते हैं। फिर उन सब चीजों को जो जानदार खाते हैं और जब वह बच्चा देते हैं तो वह सब आत्माएं उन्हीं जानदारों के बच्चों के रुप में जन्म लेते हैं। ऐसे आवागमन से निकलना बहुत मुश्किल होता है।

cev$e veb-7 *''ताद्य इह रमणीयचरणा अभ्याशो ह यन्ते रमणीयां योनिमापघेरन्ब्रह्मणयोनिं वा क्षत्रिययोनि वा वेश्य यौनिं वाथ य इह कपूयचरणा अभ्याशो ह यत्ते कपूयां योनिमापद्येरन् श्रयोनिं वा सूकरयोनिं व चण्डालयानिं वा।।"*

अनुवादः- उन सभी आत्माओं में जो अच्छे कर्म वाले होते हैं वह फिर से अच्छा जन्म लेते हैं। जैसे ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य आदि। और जो कुकर्म करने वाले होते हैं वह और भी बुरे शक्ल में पैदा होते हैं जैसे सुअर, कुत्ता, चंडाल।

cev$e veb-8 *"अथतयोः पर्थानि कतारेण च न तानिमानि क्षुद्राण्यसकृदावर्तीनी भूतानि भवन्त"* (Úe:-5/10/8)

अनुवादः- जो आत्माएं इन दोनों मार्गों यानी (अंधेरे और उज्जवलित रास्तों) को नहीं पा पाती हैं। उनको तीसरा रास्ता मिलता है, जिसे तृतीय मार्ग कहते हैं। इस रास्ते को पाने वाले कीड़े मकोड़े की शक्ल में पैदा होते हैं। जिनकी जिंदगी में मरना और जीना यही दो काम होते हैं। इसलिए दुनियादारी से नफरत करना चाहिए, और जंगल की जिंदगी अपनाना चाहिए।

(श्लोक नं ८)

● ऊपर वर्णन किए गए श्लोक के अनुवाद को अगर हम फिर से पढ़ें तो तीन बातें समझ में आती हैं।

१. व्यक्ति पन्चाग्नि विद्या को जानने वाला होना चाहिए।

२. व्यक्ति पन्चाग्नि विद्या को जानकर जंगल में रहनेवाला हो।

३. व्यक्ति पन्चाग्नि विद्या को जानकर जंगल में रहकर विश्वास के साथ उपासना और भक्ति करने वाला हो। ऐसा व्यक्ति ही मरने के बाद देवयान यानी स्वर्ग के रास्ते को पाएगा।

● विकासानन्द ब्रम्हचारी जी कहते हैं कि, स्वर्ग का रास्ता प्राप्त करने की जो तीन शर्ते हैं वह क्या भीष्म पितामह में थीं? इसलिए या तो भीष्म पितामह को भी स्वर्ग का रास्ता न मिला, और अगर भीष्म पितामह को स्वर्ग का रास्ता मिल गया तो यह तीन शर्ते गलत हैं।

● महाराज जी कहते हैं जो लोग समाज में रहकर ईश्वर की उपासना करते हैं और मानवसेवा का कार्य करते हैं, और दान पुण्य का कार्य करते हैं। उन्होंने क्या गलत कार्य किया जो उन्हें स्वर्ग का रास्ता न मिले। समाज में रहकर पुण्य कार्य करना क्या पाप है?

अगर इस ब्रह्माण्ड के विधाता (ईश्वर) ने मुक्ति का रास्ता सिर्फ जंगल में रहकर उपासना करने के जरिए रखा होता तो आज मनुष्य पैदा न होते, न हम और आप होते।

● जंगल में रहना वेदों की शिक्षा नहीं है। इसलिए पुराने जमाने के विद्वान गांव और शहरों में रहते थे। और उनके जीवन में भी पत्नी और बच्चों का वर्णन मिलता है। (उदाहरण के तौर पर ऋग्वेद के दूसरे मण्डल के सभी मन्त्रों में इसी का वर्णन है।)

● इसी तरह ऋग्वेद के छठे मण्डल ६, ११,१२,१३,१४,१७,२४ तक सभी सुक्तों के आखिर में लिखा है कि "हम लोग अपने पुत्रों के साथ १०० साल तक सुख का जीवन व्यतीत करें"। यानी पत्नी और बच्चों के साथ सुखद् जीवन गुजारना यह ईश्वर का एक वरदान है जिसके लिए प्रार्थना की

जाती है।

तो वेद सत्य हैं। और जो कुछ वेदों के ज्ञान के विरुद्ध लिखा है वह सत्य नहीं हो सकता। इसलिए जंगल में रहकर उपासना करने पर ही स्वर्ग मिलेगा यह बात सत्य नहीं है।

● छांदोग्य उपनिषद (८:१०:०५) में हमने पढ़ा की देवयान और पितृयान इन दो रास्तों के अलावा एक तीसरा रास्ता है। यह बात भी इस उपनिषद में गलत है क्योंकि वेदों और भगवद्‌गीता में सिर्फ दो ही रास्तों का वर्णन है। उदाहरण के लिए भगवद्‌गीता में लिखा है,

''मेरे द्वारा वेदों में भी (मरने के बाद) इस संसार से (जाने के लिए दो) मार्ग (बताए गए हैं।) इन दोनों मार्गों में नि:संदेह एक उज्ज्वल (सफलता का) मार्ग है और दूसरा अंधेरा (असफलता का) मार्ग है। एक मार्ग (जन्म और मौत की बार बार) वापसी न होने वाले (स्वर्ग के) धाम की ओर जाता है, और दूसरा (अंधेरा मार्ग है जो कि) बार बार (जन्म और मौत की) वापसी वाले (नरक के) धाम की ओर जाता है। (८:२६)

जब तीसरे मार्ग का वर्णन किसी वेद में नहीं तो इस उपनिषद में कहां से आ गया।

छांदोग्य उपनिषद के वह श्लोक जो वेदों की शिक्षा के अनुसार हैं।

छांदोग्य उपनिषद में अब तक जो हमने पढ़ा उन सब में वेदों के ज्ञान के विरुद्ध वाली बातें थीं। अब हम उसी उपनिषद में परलोक की कुछ और बातें पढ़ते हैं जो वेदों के ज्ञान के अनुसार हैं वह बातें निम्नलिखित हैं;

● ''*अथ सत्र एरात् अस्मात भारीरम उत्कामति अथ एतैः एवं रश्मिभिः उर्ध्दम आकमते, सः ओम इति व द्रउत वा मीयते, स यावत क्षिप्यत, मनः तावत् आद्रिव्यम मच्छति। एतत् वै खलू लोक द्वारम विदुषाम प्रपदनम् निरोधः अविदृषाम।* (Úe]- 8/6/5)

● इसी छांदोग्य उपनिषद में अध्याय ८ मंण्डल ६ और मन्त्र पांच में लिखा है कि जब आत्मा शरीर से निकलती है तो प्रकाश के माध्यम से ऊपर की तरफ यात्रा करती है। अगर किसी इन्सान की मृत्यु ईश्वर को याद करते हुए होगी तो जरुर वह ऊपर की तरफ गमन करती है। वह आदित्य नाम के लोक में उतनी ही जल्द पहुंच जाती है जितनी देर में मन एक विचार से दूसरे विचार की तरफ जाता है। (यानी बहुत जल्द)। यह आदित्य लोक ही स्वर्ग का रास्ता है। जिसमें सिर्फ ज्ञानी और तपस्वी ही प्रवेश करेंगे। इसमें अज्ञानी प्रवेश नहीं कर सकते है। (पुनर्जन्म एक रहस्य पेज नं. २२)

● अब छांदोग्य के इस ज्ञान पर ध्यान दें।

बाकी पेज नं. ७७ पर

22. ye=noejCÙekeâ Gheefve<eo ceW hegvepe&vce k

बृहदारण्यक उपनिषद

● बृहदारण्यक उपनिषद को ऋषि याज्ञवल्कय ने लिखा था। ऋषि याज्ञवल्कय ऋषि वैशम्पायक के शिष्य थे। और ऋषि वैशम्पायक ऋषि महर्षि वेद व्यास जी के शिष्य हैं। बृहदारण्यक उपनिषद यजुर्वेद भाग के ब्राह्मण शतपथ के १४ अध्याय को लेकर बना है। इस उपनिषद के कुल ६ अध्याय हैं। इन अध्यायों में कुल ४७ ब्राह्मण हैं। और कुल ४३५ मन्त्र हैं।

● इस उपनिषद में कुल ३ जगहों पर परलोक का वर्णन है।

१. चौथे अध्याय के चौथे ब्राह्मण में

२. ५ वें अध्याय के १० वें ब्राह्मण में

३. छठे अध्याय के दूसरे ब्राह्मण में

चौथे अध्याय के चौथे ब्राह्मण में श्लोक नं. ३ इस प्रकार है;

● जैसे घास पर चलने वाला कीड़ा एक घास के तिनके से दूसरे तिनके पर जाने के लिए अपने शरीर को पहले सिकोड़ता है फिर दूसरे तिनके का सहारा लेने के बाद पहले तिनके को छोड़ देता है। इसी तरह आत्मा पहले शरीर का सहारा छोड़ कर अविद्या का परित्याग करके अपना उपसंहार करते हुए दूसरे नवीन शरीर का आश्रय ग्रहण कर लेती है। (४/४/३)

● चौथा श्लोक इस प्रकार है। जिस प्रकार स्वर्णाकार स्वर्ण लेकर उसे नवीन कल्याणकारी रुप प्रदान करता है, उसी प्रकार यह आत्मा वर्तमान शरीर को चेतना रहित करके, अविद्या से मुक्ति पाकर पितर, गन्धर्व, देव, प्रजापति, ब्रम्ह अथवा अन्य प्राणियों के नवीन स्वरुप को धारण करती है, अथवा नूतन रुपों का निर्माण करती है। (४/४/४)

● महाराज विकासानन्द जी कहते हैं कि बृहदारण्यक उपनिषद में वर्णन किए गए दोनों श्लोकों का ज्ञान वेदों के निम्नलिखित मन्त्रों के ज्ञान से अलग है। वेदों के दोनों मन्त्र इस तरह हैं।

● परलोक में आत्मा को नया शरीर मिलेगा, परलोक में सभी आत्माओं को देवताओं के वंश में रहना होगा। परलोक में आत्माएं स्वतंत्र नहीं होंगी और उन आत्माओं को अपने कर्म का फल भी वहीं भोगना होगा। (ऋग्वेद २:१६:१०)

● आत्माएं किस मार्ग से परलोक जाएंगी वह मार्ग यमदूत पहले ही दिखा देता है। वह मार्ग कभी नष्ट न होने वाले हैं। जिस मार्ग से पहले के लोग गए हैं अपने अपने कर्म के आधार पर प्रत्येक प्राणी इसी मार्ग से जाएंगे। (ऋग्वेद १०:१४:२ रमेशचन्द्र दत्त) (पुनर्जन्म का रहस्या पेज नं २४)

तो दोनों श्लोक से स्पष्ट होता है कि आत्माएं अपनी मर्जी से किसी भी रुप में फिर जन्म लेने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं। और इन दोनों श्लोक से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि;

१. पुनर्जन्म नहीं होगा बल्कि मरने वालों को परलोक में एक (देवताओं या फरिश्तों की तरह) नया शरीर मिलेगा।

२. मृतक को किस मार्ग से स्वर्ग या नरक में जाना है यह यमदूत बताएगा। और कर्म के अनुसार स्वर्ग या नरक का मार्ग मिलेगा।

३. परलोक में ही उसे अपने कर्म का फल भोगना होगा।

● इस उपनिषद के चौथे अध्याय के चौथे ब्राह्मण के छठे श्लोक का अध्याय यह है कि जिन लोगों का दिल इच्छाओं से भरा होता है वह अगर सत्कर्म भी करें तो वह अपने सत्कर्म के अनुसार कुछ दिन परलोक में आराम से रहते हैं, मगर वह आराम के कुछ समय खत्म होने के बाद फिर इसी दुनिया में बार बार जन्म लेने के लिए लौट आते हैं। और जो किसी चीज़ की इच्छा नहीं करते और जो हर कार्य सिर्फ ईश्वर से बदले की उम्मीद से करता है। उसका पुनर्जन्म नहीं होता है। वह तो ब्रम्हा में ही समा जाता है।

● ऊपर वर्णन किए श्लोक के अनुसार सभी इच्छाओं वाले मनुष्य को स्वर्ग नहीं मिलेगा। महाराज विकासानन्द जी कहते हैं कि ऐसा कौन सा मनुष्य है जिसके मन में कोई इच्छा न हो। सिर्फ इच्छा करने से अगर नरक मिलने लगे तो इस तरह कोई मनुष्य सफल हो ही नहीं सकता है।

तो जो कुछ बृहदारण्यक उपनिषद के तीन श्लोकों में है वह वेदों की शिक्षा के विरुद्ध है। अब हम बृहदारण्यक उपनिषद का एक श्लोक परलोक के बारे में पढ़ते हैं जो वेदों के अनुसार है।

● *यदा वै पुरुषो हस्माल्लोकात्प्रैति स वायुमागच्छति तस्मै स तत विजिहीते यथा रथचक्रस्य एरां तेन स उर्ध्व आक्रमते ख्र आदित्य मा गच्छति तस्मैं स तत विजिहते यथा लम्बरस्य ख्र तेन स उर्ध्व आक्रमते स चन्द्रमसमागच्छते तस्मै स तत विजिहते यथा दुन्दुभेः खं तेन स उर्ध्व आक्रमते स लोक मागच्छत्य भाकमहिम तस्मिनवसति भाश्वती समाः।।*

(ye=noejCÙekeâ Gheefve<eo 4/10/1 cev$e)

अनुवादः- जब मनुष्य मरने के बाद परलोक की तरफ यात्रा करता है तो वह सबसे पहले वायुलोक में प्रवेश करता है। वहाँ पर वायु अपनी चादर में छेद करके उसे रास्ता देती है। यह छेद रथ के पहिये के रुप का होता है। इस मार्ग से वह ऊपर की तरफ उठता है। वह सूर्य के लोक में प्रवेश करता है। उस लोक में भी लम्बर नाम के हथियार के रुप के छेद की तरह उसका मार्ग होता है। वहाँ से वह ऊपर की तरफ

उठता है। और चन्द्रलोक में पहुंच जाता है। वहाँ से उसके लिए दुन्दुभि की शक्ल की तरह छेद का रास्ता दिया जाता है। इस लोक से वह ऊपर उठता है और वह अहिम (जहाँ मानसिक तनाव नहीं) और हम (जहाँ शारीरिक पीड़ा नहीं) ऐसे लोक में पहुंच जाता है, वहाँ चिरकाल के लिए निवास करता है।

● जब एक ही उपनिषद में दो अलग अलग शिक्षा हो तो वह शिक्षा जो वेदों से मिलती जुलती है उसे ही अपनाया जाएगा। चूंकि ऊपर दिए गए श्लोक में मृतक के मार्ग का वर्णन वेद की शिक्षा के अनुसार है। इसलिए इसे अपनाकर पहले के सभी श्लोकों को जिसमें पुनर्जन्म का वर्णन है और मुक्ति मिलने की बहुत सारी कठिनाईयाँ हैं हम उन सबको छोड़ देते हैं।

● महाराज विकासानन्द ब्रम्हचारी जी कहते हैं, सत्य हमेशा एक जैसा और हमेशा कायम रहता है। और झूठ बार बार बदलता रहता है।

एक ही उपनिषद में इस तरह मरने के बाद और पुनर्जन्म का दो या तीन तरह का वर्णन इस बात का सबूत है कि यह पुनर्जन्म की शिक्षा उपनिषद में बाद में मिलाई गई है। और यह असल वेद के ज्ञान के अनुसार नहीं है और प्रक्षिप्त है।

● इस तरह यह सिद्ध हो गया कि महाभारत, छांदोग्य उपनिषद और बृहदारण्यक उपनिषद में जो पुनर्जन्म की शिक्षा है वह वेदों का ज्ञान नहीं है। बल्कि बाद में प्रक्षिप्त की गईं हैं या मिलाया गया है।

ऋग्वेद का निम्नलिखित श्लोक स्पष्ट रुप से यह बात कहता है कि पुनर्जन्म का दृष्टिकोण बिल्कुल गलत है।

● पुन: पुन: उत्पन्न होने का वर्णन ससान शुम्भ (शैतान) जैसा प्राचीन काल (के लोगों के द्वारा) किया जाता रहा है। तब पापियों के समान उस प्रकार मानने वालों को वर्जित करो। मरने वालों की देवी आयु को जलाती है (अर्थात् जल्दी करो, जीवन की अवधि समाप्त होती जा रही है।) (ऋग्वेद १-९२-१०)

ऊपर बयान किया अनुवाद पंडित दुर्गाशंकर सत्यार्थी का है। इस अनुवाद में साफ तौर पर कहा गया है कि वेद ने पुनर्जन्म के विश्वास को गलत बताया है। और ऐसे विश्वास को खत्म करने के लिए कहा है।

****

23-keäÙee YeieJeodieerlee ceW hegvepe&vce keâer

● भगवद्गीता के निम्नलिखित श्लोक का क्या अर्थ है?

हे अर्जुन! ईश्वर के धाम के आस पास जितने भी लोक हैं, वहाँ बार बार पैदा होने और मरने का चक्कर चलते रहता है, लेकिन हे कुन्तीपुत्र (अर्जुन)! (ईश्वर कह रहा है) मुझे पाने के बाद (स्वर्ग में) किसी का बार बार जन्म नहीं होता। (८:१६)

● ऐसे श्लोक की व्याख्या साधारण प्रकार से ऐसे की जाती है कि, जो लोग जीवन में पाप करते हैं, वह मृत्यु के बाद अपने पापों का दण्ड पाने के लिए इस धरती पर फिर जन्म लेते हैं। वह जीवन में फिर पाप करते रहते हैं और मरने के बाद फिर जन्म लेते रहते हैं। इस तरह उनके जीने मरने का सिलसिला उस समय तक चलता रहता है जब तक वह पुण्य करके अपनी आत्मा को पवित्र न कर लें। जब वह सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं तो मुक्ति पाकर ईश्वर में समा जाते हैं।

● ईश्वर में समा जाने की श्रद्धा या विश्वास रखने वाले अपने विश्वास को निम्नलिखित उदाहरण से समझाते हैं।

ईश्वर एक महान सागर कि तरह है। धरती पर जो कुछ पानी है वह सागर से बादल की तरह निकल कर बरसा हुआ पानी है। और धरती का पानी एक दिन फिर चक्र (Water Cycle) पूरी करके सागर में समा जाता है। इसी प्रकार हमारी आत्मा भी महान ईश्वर से निकली है और एक दिन पवित्र होकर और मुक्ति पाकर उसमें समा जाएगी।

● ऊपर लिखे गए पुनर्जन्म और ईश्वर में समाने के दो विश्वास या श्रद्धा कितने सच हैं, आइए हम इनका शोध करते हैं।

● भगवद्गीता के तीन श्लोक इस प्रकार हैं।

● मेरी न दिखाई देने वाली मूर्ति, शरीर या रुप के द्वारा, इस सारे संसार का फैलाव है। सारी निर्मित वस्तुएं मुझसे स्थित हैं और मैं इनसे स्थित नहीं हूँ। (९:४)

(नोट :- निर्मित वस्तुएं वह सारी चीज़े हैं जिसे ईश्वर ने निर्माण किया है। जैसे धरती आकाश, पशु, पक्षी, मानवजाति इत्यादि।)

● और मैं निर्मित वस्तुओं में स्थित नहीं हूँ और निर्मित वस्तुएँ मुझमें स्थित नहीं हैं। सुबूत के तौर पर मेरी प्रकृति से जुड़ी हुई (निर्मित वस्तुओं) को देखो तो जानोगे कि मैं स्वयं सारी निर्मित वस्तुओं का अकेला निर्माता और सारी निर्मित वस्तुओं को पालने वाला हूँ। (९:५)

● हे कुन्ती के पुत्र अर्जुन! (ईश्वर कह रहा है) मेरी निर्माण करने वाली प्रकृति के

आदेश से ही जानदार और बेजान वस्तुएं पैदा हो रही हैं। इसी कारण इस संसार या भूमि का परिवर्तन करना भी मेरी प्रकृति के वश में है। (९:१०)

● इन तीन श्लोकों से हमें जो शिक्षा मिलती है वह इस तरह है कि,

१) ईश्वर ने सबका निर्माण किया।

२) ईश्वर की आज्ञा और महिमा से ही सब मृत्यु और जीवन पाते हैं।

३) ईश्वर किसी में नहीं समाता है और न कोई ईश्वर में समाता है।

● तो यह विश्वास या श्रद्धा कि लोग अपनी आत्मा को पवित्र करके मुक्ति और मोक्ष पाकर ईश्वर में समा जाते हैं, यह भगवद्‌गीता की शिक्षा के अनुसार नहीं है।

● अब हम बार बार जीने और मरने के विश्वास या श्रद्धा पर शोध करते हैं। श्लोक नं.८:१६ में लिखा है कि ईश्वर के धाम के आसपास जितने भी लोक हैं वहाँ बार बार पैदा होने और मरने का चक्कर चलता रहता है।

ईश्वर का धाम कहाँ है?
ईश्वर का धाम स्वर्ग है।
स्वर्ग के आस पास क्या है?
हमारी धरती?
नहीं!
८४ लाख नरक! (गरुड़ पुराण-अध्याय ३ मन्त्र-६०)

स्वर्ग के चारो तरफ ८४ लाख नरक हैं। और स्वर्ग उनके बीच में एक ऊंची और फैली हुई जगह है।

● ऋग्वेद में स्वर्ग के बारे में यह श्लोक है।

"तुम वहाँ अपनी सच्चाई की सहायता से उस जगह को देखना जो अत्यन्त विस्तृत दृश्यों वाली है।" (ऋग्वेद १-२१-६)

आचार्य सयान ने अपने वेदों की व्याख्या में इस विस्तृत स्थान को स्वर्ग कहा है।

● जैसे किसी मज़बूत दुर्ग के चारों तरफ गहरी खाई होती है इसी तरह स्वर्ग के चारों तरफ नरक की गहरी खाई है।

नरक की गहरी खाई के बारे में ऋग्वेद में यह वर्णन है।

"जो पापी हैं, उनके लिये यह अथाह गहराई वाला स्थान अस्तित्व में आया है। (ऋग्वेद ४-५-५)

आचार्य सयान ने अपने वेदों की व्याख्या में इस अथाह गहराई वाले स्थान को नरक कहा है।

(नोट:- गरुड़ पुराण अध्याय नं. ४ मन्त्र २ के अनुसार पापी एक नरक से दूसरे नरक में जाते हैं और कुल ८४ लाख नरक हैं। इसी को पुनर्जन्म में विश्वास रखने वाले ८४ लाख बार जन्म लेना कहते हैं।)

● गरुड़ पुराण में जो नरक में यातना और

दण्ड का वर्णन है वह हम इस पुस्तक के अंत में पढ़ेंगे।

गरुड़ पुराण के अनुसार नरक में पापी के शरीर को सांप निगल लेते हैं। या देवदूत पापी को ऊँचे पहाड़ से गिराते हैं। जिससे पापी का शरीर टुकड़े टुकड़े हो जाता है। या यमदूत उसे शस्त्र से काट काट कर टुकड़े टुकड़े कर देते हैं। तो जब एक बार शरीर यातना और दण्ड के लायक नहीं रहता है तो ईश्वर उस पापी को नया शरीर प्रदान करता है। ताकि यातनाएं और दण्ड देने का सिलसिला चलता रहे।

● श्लोक नं ८:१६ का यही उचित अर्थ है कि ईश्वर धाम के आसपास जो ८४ लाख नरक हैं वहाँ जीवन और मृत्यु का चक्कर चलता रहता है। और जो ईश्वर के धाम (स्वर्ग) को पा लेता है फिर उसे मृत्यु नहीं आती। क्योंकि स्वर्ग का जीवन अमर जीवन है। स्वर्ग में किसी की मृत्यु नहीं होगी।

● तो भगवद्गीता में जहाँ जहाँ इस तरह बार बार जीवन मृत्यु के बारे में लिखा है वह धरती पर नहीं बल्कि नरक के लिए लिखा है। तो भगवद्गीता में भी पुनर्जन्म की शिक्षा नहीं है।

● भगवद्गीता के श्लोक नं १५:४ से भी पुर्नजन्म के न होने की शिक्षा मिलती है। वह श्लोक इस प्रकार है

● फिर उस (अन्य धाम अर्थात् मृत्यु के बाद वाले) धाम को खोजना चाहिए, जहाँ जाकर कोई भी पुन: इस संसार में वापस नहीं आता और जहाँ जाकर नि:सन्देह उसे उस सबसे पहले पुरुष (ईश्वर) की शरण मिल जाती है। (यह अन्य धाम वह है) जिसके कारण इस प्राचीन संसार का आरम्भ और फैलाव है।

● महाराज विकासानन्द ब्रम्हचारी जी कहते हैं कि, पुनर्जन्म के बारे में सारे लेख पढ़ने के बाद और शोध करने के बाद जो बात समझ में आती है वह इस तरह है, कि महर्षि वेद व्यास जी हिन्दू धर्म के सबसे बड़े आचार्य हैं। आपने महाभारत और १७ पुराण लिखे। भगवद्गीता को भी पुस्तक का रुप आपने ही दिया था। पुर्नजन्म यह एक महत्त्वपूर्ण विश्वास या श्रद्धा है। अगर इसमें कुछ भी सच्चाई और वास्तविकता होती तो आप भी इस पर कुछ न कुछ जरुर लिखते। मगर आपने इस बारे में कुछ नहीं लिखा।

● छान्दोग्य उपनिषद और बृहदारण्यक उपनिषद के लेखक ऋषि ताण्ड और ऋषि याज्ञवल्कय यह महर्षि वेद व्यास जी के शिष्य थे। तो जो शिक्षा और विचार गुरु के होते हैं वही उसके शिष्यों के होते हैं। तो ऋषि ताण्ड और ऋषि याज्ञवल्कय भी पुनर्जन्म पर विश्वास रखने वाले न थे। उनके उपनिषदों में दोनों प्रकार के विचार हैं, और श्लोक हैं। अर्थात् उन के उपनिषदों में वेदों की शिक्षा के अनुसार पुनर्जन्म नहीं होने के भी श्लोक हैं। और वेदों की शिक्षा के विरुद्ध में पुर्नजन्म होने के भी श्लोक हैं। तो जो श्लोक वेदों के अनुसार पुनर्जन्म नहीं होने के श्लोक हैं वही लेखक के विचार हैं। और जो श्लोक पुर्नजन्म होने की शिक्षा देते हैं, वह लेखक के विचार नहीं हैं और वह बाद में उपनिषद में लिखे गए या मिलाए गए हैं। वह प्रक्षिप्त (Fabricated) हैं।

****

24-ceneYeejle Deewj Gheefve<eoeW ceW nmle#eshe ef

● महाराज विकासनन्द ब्रम्हचारी जी अपनी पुस्तक पुनर्जन्म एक रहस्य में पेज नं. ३० पर लिखते हैं कि वेदों के युग के बाद लोग दो विचारधाराओं में बट गए। पहली कर्मवादी विचारधारा और दूसरी ज्ञानवादी विचारधारा।

● कर्मवादी विचारधारा के लोग कर्मो को अधिक महत्त्व देते थे। और ज्ञानवादी विचारधारा के लोग ज्ञान को।

● कर्मवाद के लोगों का समूह देववाद अर्थात् देवताओं की पूजा करने को महत्त्व देते थे। यज्ञवाद अर्थात् यज्ञ द्वारा पूजा करते थे। भोगवाद अर्थात् समाजी जीवन और सांसारिक और पारिवारिक जीवन को महत्त्व देते थे, और वेदवाद अर्थात् वेदों की शिक्षा को महत्त्व देते थे।

● ज्ञानवाद के लोग त्यागवाद अर्थात् सांसारिक और सुखी जीवन को त्यागने को महत्त्व देते थे। सन्यासवाद अर्थात् सामाजिक जीवन से सन्यास लेकर वन में रहकर ध्यान और आराधना और तपस्या को अधिक महत्त्व देते थे और मुक्ति का मार्ग समझते थे।

● यह दोनों एक दूसरे का विरोध करते। मगर बाद में दोनों समुदाय में समझौता हो गया, और बीच का तीसरा मार्ग निकाला गया। जैसे ब्रम्हचर्य इत्यादि। जिसमें समाज में रहते हुए भी सुख को त्याग कर उपासना की जाती है। इस तीसरी विचारधारा में पहले वाले दोनों समुदायों की गरिमा और भावनाओं का ख्याल रखा गया।

● ज्ञानवाद वालों की सत्ता ज्ञान पर अधिक थी। इसलिए कर्मवाद वालों के साथ सन्धि होने के बावजूद यह लोग ग्रंथों में ही ऐसी शिक्षा की मिलावट कर देते थे कि ग्रंथों के अनुसार ही उनकी विचारधारा का समर्थन हो जाए। और लोग उनके विचारधारा को ही सही समझने लगे। यह इन्हीं लोगों की शिक्षा है कि जो पन्चाग्नि विद्या के साथ वन जाकर तपस्या करेगा वही मुक्ति पाएगा। और यह इन्हीं लोगों की शिक्षा है कि पापी निरन्तर जन्म और मृत्यु के चक्कर में फंसा रहेगा।

पुनर्जन्म के विश्वास को ग्रंन्थों में हस्तक्षेप (मिलावट) करने से ज्ञानवाद वालों को क्या लाभ हुआ?

● अगर पापी को यह कह कर डराया जाए कि उसे ईश्वर पापों का दण्ड नरक में जलाकर देगा, तो पापी ईश्वर से डरता है। उससे क्षमा मांगता है और ईश्वर को खुश करने के लिए दान देता है। यज्ञ करता है। और समाज के कल्याण के काम करता है।

● मगर उसी व्यक्ति को कहा जाए कि अगर तूने पाप किए तो अब उसका बदला तो तुझे मिलना ही मिलना है। इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में। और जब तक तू अपने पापों का दण्ड इस धरती पर नहीं भोग लेगा तब तक तुझे इस जन्म और मृत्यु के चक्कर से निकलना सम्भव ही नहीं है। तो ऐसा व्यक्ति पाप करने के बाद पुण्य करके, उनको दान-धर्म, यज्ञ और ईश्वर की प्रार्थना से मिटाने की कोशिश नहीं करेगा, बल्कि पाप ही न करने की कोशिश करेगा। और जो समाज से जितना दूर और त्यागवादी और सन्यासवादी लोगों से जितना नज़दीक होगा उतना उससे पाप नहीं होंगे। इसलिए अगर पुनर्जन्म का विश्वास लोगों के दिल में बिठा दिये जाएं तो वह अपने आप त्यागवाद और सन्यासवाद को अपना लेंगे।

● इस तरह अपनी विचारधारा को महत्त्वता देने के लिए ज्ञानवाद के लोगों ने ग्रन्थों में पुनर्जन्म की शिक्षा की मिलावट की है।

****

hespe veb. 69 mes Deeies-

यह ज्ञान वेदों से मिलता जुलता है। एक ही उपनिषद में दो तरह की शिक्षा कैसे हो सकती है। अभी हमने इस उपनिषद में पढ़ा कि पंचाग्नि के ज्ञान और जंगल में रहकर उपासना के बगैर स्वर्ग नहीं मिलेगा। और मृत्यु के समय अगर सूर्य उत्तर दिशा की तरफ न हुआ तो धरती पर फिर जन्म लेना पड़ेगा। और अब हम पढ़ रहे हैं कि सज्जन मनुष्य अगर ईश्वर का नाम लेते हुए प्राण त्याग दे तो स्वर्ग के द्वार तक पहुंच जाता है। क्या एक ही उपनिषद में दो तरह की शिक्षा से आपको आश्चर्य नहीं होता है। जी हां यह बड़ी आश्चर्यजनक बात है। और यह इसलिए है कि इसमें एक सही और एक गलत है। सही ज्ञान वह है जो वेदों से मिलता जुलता है। यानी मनुष्य की आत्मा मरने के बाद ऊपर की तरफ यात्रा करती है और बहुत जल्द परलोक में पहुंच जाती है। जबकि पुनर्जन्म वाला और सूर्य से सम्बन्ध रखनेवाला स्वर्ग के मार्ग की शिक्षा वेद की शिक्षा नहीं है। इसलिए वह सब शिक्षा इस उपनिषद में बाद में शामिल की गई हैं या

25. Ssmes ØeMve efpevekeâe hegvepe&vce ceW efJeÕeeme jKeves Jee

● पुनर्जन्म में विश्वास रखने वाले कहते हैं कि जो बच्चा भी जन्म लेता है वह अपने गुनाहों की सज़ा भुगतने के लिए जन्म लेता है। जब मनुष्य के सारे पाप खत्म हो जाएंगे और कोई सज़ा बाकी नहीं होगी तो उसे मोक्ष या मुक्ति मिल जाएगी। और बार बार जन्म लेने से छुटकारा मिल जाएगा।

इस मानवजाति के समाज को ईश्वर ने एक पुरुष और एक स्त्री से फैलाया है। हमारा पुनर्जन्म में विश्वास रखनेवालों से सवाल है कि जब उस जोड़े का पहला बच्चा पैदा हुआ था तो वह किसका पुनर्जन्म था? (यानी किस पापी ने मरने के बाद बच्चे के रुप में अपने पापों का दण्ड भोगने के लिए फिर से जन्म लिया था?)

● पुनर्जन्म वालों का दृष्टिकोण यह है कि गुनाहगार मरने के बाद पेड़ पौधे और जानवरों की शक्ल में पैदा होते हैं।

● यह कलयुग है और इस युग में २५ ^{3} पुण्य और ७५^3 पाप है। इस तरह मरने वालों की भारी संख्या गुनाहगारों की है। तो होना यह चाहिए था कि दिन-प्रतिदिन जानवरों और पेड़ पौधों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो क्योंकि मरने वालों में पापियों की संख्या सत्कर्मियों से अधिक है। मगर इसके विरुद्ध हो रहा है। इस जमाने में जानवर और पेड़ पौधे धरती से कम होते जा रहे हैं। ऐसा क्यों?

● पुनर्जन्म वाले कहते हैं कि कई बच्चों को बचपन में पहले वाली जिंदगी की बातें भी याद रहती हैं।

● इसकी वजह ऐसी है कि जिन्नात और प्रेतआत्माएँ इन नासमझ बच्चों पर या ५ साल से कम उम्र बच्चों पर प्रभाव डालती हैं। इस कारण बच्चे ऐसी बातें कहते हैं जो अद्‌भुत होती हैं। मगर वही बच्चा जब ६ साल का हो जाए या समझदार हो जाए तो अपने पिछले जन्म की कोई बात नहीं करता।

अगर पुनर्जन्म की वजह से बच्चे कुछ बातें ५ साल की उम्र में याद रख सकते हैं, तो फिर उसे जिंदगीभर याद रहना चाहिए। क्योंकि बड़े होने पर तो बुद्धि और भी विकसित हो जाती है। मगर ऐसा नहीं होता है। वह बच्चा सब कुछ भूलकर साधारण व्यक्ति की तरह हो जाता है। जबकि बचपन में जो बातें याद रहती हैं वह जीवनभर याद रहती हैं। इसकी वजह पुनर्जन्म पर विश्वास रखने वाले नहीं बता सकते।

● पुनर्जन्म के मानने वालों का ऐसा मानना है कि मनुष्य का अंतिम लक्ष्य तो ईश्वर में विलीन होना है। स्वर्ग और नरक तो कुछ दिनों के लिए इनाम या सजा देने के लिए है। इसके बाद फिर जन्म लेकर कर्म करके

मुक्ति पाकर ईश्वर में विलीन हो जाना है। अगर किसी बच्चे को पहले जन्म की बातें याद रहती हैं तो क्या किसी बच्चे को अपने नरक की सजा भी याद आयी है? अगर किसी को नरक की सज़ा याद आ जाए तो क्या वह इस दुनिया में एक साधारण मनुष्य की जिंदगी गुजारेगा? क्या कोई ऐसी भी घटना घटी है कि किसी ने अपने नरक की सजा जन्म होने के बाद लोगों को सुनाई है?

मैंने तो कोई ऐसी घटना नहीं सुनी!

● इस जमाने में अगर अदालत किसी अपराधी को सजा सुना दे। और अगर आप किसी तरह उस अपराधी की मदद करना चाहोगे। जैसे उसे जेल से भगाकर आजाद करना चाहो तो आप के इस कार्य को अपराध माना जाएगा।

एक मनुष्य विकलांग या गरीब है, अगर उसकी इस हालत को पिछले जन्म के अपराध की वजह से माना जाए तो इस जन्म में वह अपराधी है। और किसी भी अपराधी की मदद करना कानून के अनुसार अपराध है। इसलिए धार्मिक तरीके से तो ऐसे लोगों की मदद करने से दूर रहने का आदेश होना चाहिए। मगर हर धर्म की धार्मिक किताबों में विकलांग और गरीबों की मदद को पुण्य कहा गया है। ऐसा क्यों?

● ऐतरेय उपनिषद का एक दृष्टिकोण पुनर्जन्म से भी एक कदम आगे है। इस दृष्टिकोण के अनुसार पिता की आत्मा वीर्य के द्वारा मां के गर्भाशय में प्रवेश करती है और इस तरह वीर्य का गर्भाशय में प्रवेश करना मनुष्य का पहला जन्म है। जब वह पैदा होता है तो उसका दूसरा जन्म है। और जब वह मरता है तो उसका तीसरा जन्म होता है।

● अगर इस दृष्टिकोण को सच माना जाए तो जिसके यहाँ लड़की जन्म लेती है उसमें किस की आत्मा है? जिसके यहाँ औलाद नहीं होती उसकी वजह क्या है? और सबसे महत्त्वपूर्ण कि जब बाप की आत्मा बेटे में होती है तो हर बाप के एक बेटा होना चाहिए। मगर ऐसा नहीं होता, किसी के यहां एक से ज्यादा बेटे होते हैं, किसी के यहाँ एक भी नहीं ऐसा क्यों?

पुनर्जन्म के दृष्टिकोण वाले हमारे किसी सवाल का जबाब नहीं दे सकते क्योंकि जो दृष्टिकोण मूल रुप से गलत है उसे आप किस तरह सच साबित करेंगे?

****

26. ieerlee meej

(१) ईश्वर कौन है?

श्री कृष्ण जी कहते हैं कि,

लेकिन तुम उस (ईश्वर) को अविनाशी समझो, जिसके द्वारा इस सारे (संसार) का फैलाव है। उस अविनाशी (ईश्वर का) विनाश करने की शक्ति किसी में भी नहीं है। (२:१७)

(२) हम क्यों इस संसार में हैं?

श्री कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि,

नि:संदेह मेरे द्वारा निर्माण किये गए इन तीनों दैवी गुणों पर आधारित मेरी परीक्षा को पार करना बहुत कठिन है। (लेकिन) जो लोग मेरी भक्ति करते हुए मेरी शरण में आ जाते हैं, अथवा मेरे सहारे जीते हैं, वह इस परीक्षण या परीक्षा को नि:संदेह पार कर जाते हैं। (७:१४)

यानी हम इस संसार में अपने कर्मों के द्वारा परीक्षा देने के लिए आए हैं।

(३) क्या कभी मनुष्य का विनाश होगा?

श्री कृष्ण जी ने कहा;
(ईश्वर यह कह रहा है) कि, शरीर रखने वाले (मनुष्य) का शरीर नाशवान है। इस शरीर में अविनाशी (आत्मा), नित्य रहने वाली और मापी न जानेवाली है।, इसीलिए हे भारत (अर्जुन)! युद्ध करने के लिए खड़े हो जाओ। (२:१८)

(यानी जो पैदा हुआ उसका मरना अटल है। मगर आत्मा नष्ट नहीं होगी बल्कि बाकी रहेगी। इस सीमित जीवन के बाद एक अनन्त जीवन और है, जिसे आखिरत (अन्य लोक) कहते हैं। जिसमें सफलता के लिए हमें चिन्ता करना चाहिए।)

(४) क्या प्रलय (कयामत) होगा?

श्री कृष्ण जी ने कहा,

हे पार्थ!(अर्जुन)! वह ईश्वर मनुष्य होने से परे है, लेकिन किसी और (निर्मित वस्तु या देवता) की भक्ति के बिना, उसकी भक्ति करने से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। (यह वह ईश्वर है) जिसके द्वारा सारी (निर्मित वस्तुओं का) यह फैलाव है, और जिसके द्वारा निर्मित वस्तुओं के अंत यानी प्रलय का स्थित होना है। (८:२२)

(यानी ईश्वर जिसने इस ब्रह्माण्ड का निर्माण किया है वह इसे एक दिन नष्ट भी कर देगा और वह दिन कयामत या प्रलय का दिन होगा।)

(५) प्रलय के बाद क्या होगा?

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है कि,

जो (ईश्वर) निर्मित वस्तुओं से पूरे तौर पर अलग है, वह किसी के अच्छे कर्मों और बुरे कर्मों का हिसाब लेने) का जिम्मेदार नहीं है। अज्ञानता के कारण (मनुष्य ऐसा कहता है) क्योंकि उसके ज्ञान पर (पर्दा डाल कर उस को) छुपा दिया है। (५:१५)

(यानी जो लोग ऐसा कहते हैं कि हमको ईश्वर के सामने अपने कर्मों का हिसाब नहीं देना है व अज्ञानता की वजह से ऐसा कहते हैं। प्रलय के दिन ईश्वर हर मनुष्य से उसके कर्मों का हिसाब अवश्य लेगा।)

(६) ईश्वर निर्णय कैसे करेगा?

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है कि,
मरने वाले प्राकृतिक गुणों के अनुसार नरक में (इस तरह रखे जाते हैं।) (१) (श्रद्धा के बिना) अच्छाई को स्थित करने वाले, (नरक में) ऊपर की ओर रखे जाते हैं। (२) बुराई के गुण पर स्थित रहने वाले मध्य में निवास करते हैं (३) और भटकाव के गुण रखने वाले (अज्ञानी या मुनाफिक लोग) बिल्कुल नीचे की ओर रखे जाते हैं। (१४:१८)

(इस तरह) मुझे प्राप्त करके, महान पुरुष सदैव स्थित न रहने वाले, कष्ट दु:खों से भरे हुए (नरक के) धाम में बार बार पैदा नहीं होते, बल्कि पूर्णतया मेरी भक्ति में लगकर, (स्वर्ग की) सबसे बड़ी मन्जिल को प्राप्त करते हैं। (८:१५)

(यानी ईश्वर के आदेश के विरुद्ध अपने बनाए हुए श्रद्धा के अनुसार जो कोई पुण्य के कार्य करेगा वह नरक में ऊपर यानी हल्की दंड वाली जगह होगा। और जो पाप और भटकाववाली (Miss guided) जिंदगी गुजारेगा वह सब मध्य और नरक के नीचे की तरफ होंगे। एक ईश्वर में श्रद्धा रखकर उसकी प्रार्थना करने वाला स्वर्ग में जाएगा।)

(७) ईश्वर की प्रसन्नता कैसे प्राप्त करें?

श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है कि,
(१) मुझे अपने मन में रखकर मेरे आदेशों का पालन करने वाले बन जाओ, (२) मेरी प्रसन्नता के लिए भलाई वाले कर्म करो, (३) मुझे ही नमस्कार करो, नि:संदेह इस तरह (४) अपने आप को भक्ति में लगाकर, (५) मेरा सहारा लेकर, (तुम) मुझे पा लोगे। (९:३४)

लेकिन जो लोग मुझे (१) अविनाशी ईश्वर ओम (२) अनुपम यानी बिना उदाहरण वाला, (३) न दिखाई देने वाला, (४) हर जगह प्राप्त होनेवाला, (५) कल्पना से परे मानकर पूर्णतया: भक्ति करते हैं और (६) हृदय को एक ईश्वर में एकाग्र रखकर, (७) सारी वस्तुओं से इच्छाओं को निश्चित तौर पर वश में करके, (८) पर्वत की तरह एक ईश्वर पर अपने आपको स्थिर करके, (९) किसी और निर्मित वस्तु या देवता की ओर मन को न भटकाकर, (१०) सारी निर्मित वस्तुओं (संसार के सभी प्राणियों) के कल्याण के कर्मों में सदैव लगे रहते हैं, ऐसे लोग नि:सन्देह मुझे पा लेते हैं। (१२:३-४)

****

27-ie®ì[hegjeCe

● गरुड़ पुराण के ज्ञान का महत्त्वः-

प्राचीन काल में लोग सुबह उठकर ईश्वर की प्रार्थना करते थे। आज हम सुबह उठकर सबसे पहले अखबार या टी.व्ही. पर न्यूज देखते हैं। और जब भी समय मिलता है हम टी.व्ही. के सामने ही होते हैं। न अखबार धर्म के ज्ञानी छापते हैं और न टी.व्ही चैनल स्वर्ग से प्रसारित होता है। यह दोनों उन लोगों के हाथ में हैं जो धन कमाने के लिए ही जीते-मरते हैं। इसलिए वह इन दोनों माध्यमों में वही दिखाते हैं जो बिकता है।

और क्या आप जानते हैं कि सबसे ज्यादा लोगों की रुचि किसमें है?

व्यभिचार (Sex) और हिंसा (Violence)!

तो यही दो विषय अखबार और टी.व्ही. पर दिनभर छाया रहता है। टी.व्ही. की हर सुंदर युवती सबसे आकर्षित (Hot) नज़र आना चाहती है। और अखबार की हेड लाईन ऐसे भड़काऊ और साम्प्रदायिक शब्दों से सजायी रहती है कि नौजवान पीढ़ी और Vote-bank का रक्त उबलने लगे।

और सुबह शाम इन दोनों को देखते देखते अब लोगों को यह एहसास भी न रहा कि इनके करने से भी कुछ पाप होता है।

इसलिए आज महिलाओं के प्रति हिंसा बढ़ती जा रही है और साम्प्रदायिक दंगे आम हो गए हैं।

● भगवद्गीता के बाद वह ग्रन्थ जो सब से अधिक मन को प्रभावित करता है वह गरुड़ पुराण है। यह पुराण धन का नशा उतार देता है। संसार में मग्न और सोए हुए मन को जगा देता है।

जब तक आप को इसका ज्ञान न हो कि नरक की यातनाएँ कितनी भयानक हैं आप उससे कदापि नहीं डरेंगे।

और जब तक आप को ज्ञान ही न हो कि पाप क्या है? तो आप उससे कैसे बचेंगे?

इसलिए इस अध्याय में मैं पहले कुछ नरक का वर्णन करता हूँ (जो गरुड़ पुराण में सम्मिलित है।) फिर वह दो पाप जिन्हें आज 'पाप' समझा नहीं जाता उनका वर्णन करता हूँ। ताकि हम उनसे बच सकें। और जो भगवद्गीता का ज्ञान हमने सीखा उस का गंभीरता से पालन कर सकें।

नरक का वर्णनः-

गरुड पुराण के अध्याय नं. १ से ३ का सारांश-

● उस मार्ग में गिरता और थके हुए मृतक को वहाँ पहुँचाया जाता है, और दूत उसको अति घोर नरक की ओर ले जाते हैं। इनके

आगे यम का पुर है। बारहों सूर्य ऐसे तपते हैं जैसे प्रलय के अन्त में तपते हैं। हे परलोक के पथिक। तू यमराज के बल को नहीं जानता है। और यम के मार्ग में तुम जैसे प्राणियों के साथ जाने वाले यम दूतों के बल को भी नहीं जानता है। यमराज यातना न दे, इसके लिये तुमने यत्न भी नहीं किये। तुम्हारा उस मार्ग से चलना निश्चित है। जिस मार्ग में क्रय विक्रय नहीं है। इस मार्ग को तो बालक भी जानते हैं, हे मनुष्य क्या तूने नहीं सुना था?

● धर्मराज के वे दूत मनुष्यों के शुभ अशुभ मन वाणी तथा शरीर से उत्पन्न कर्म को पूरी तरह से जानते हैं। व्रत, दान और सत्य बोलने से जो मनुष्य ईश्वर को प्रसन्न करता है, वे उस मनुष्य को स्वर्ग को देने वाले होते हैं। पापियों के पापकर्मों को जानकर सत्यवादी वे धर्मराज के सामने कहे जाने से दु:खदायी होते हैं। चित्र-गुप्त से कर्मों के लेख में न कोई गलती होती है, और न वे किसी की तरफदारी (पक्षपात)करते हैं।

● जो मनुष्य शुभकर्मों को छोड़ कर अशुभ कर्मों ही में सदा लगे रहते हैं, वे एक नरक से दूसरे नरक में जाते हैं। तीनों द्वारों से होकर धर्मात्मा यम पुर को जाते हैं। और पापी दक्षिण द्वार ही के मार्ग से होकर यमपुर में जाते हैं। इसी महा दु:ख देने वाले मार्ग में वैतरणी नदी है, उसमें जो पापी जाते हैं, उनका सदा उसी में वास रहता है।

● उस नरक लोक में ईश्वर के सेवक उस की आज्ञा से अपने दूतों द्वारा वहाँ लाए हुए मृत प्राणियों को उनके दुष्कर्मों के अनुसार पाप का फल दण्ड देते हैं।

● **तामिस्त्र नरक** में- उसे अन्न-जल न देना, डन्डे लगाना और भय दिखलाना आदि अनेक प्रकार के उपायों से पीड़ित किया जाता है। इससे अत्यन्त दु:खी होकर वह एकाएक मूर्च्छित हो जाता है।

● **अन्धतमिस्त्र नरक** में- वहाँ की यातनाओं में पड़कर वह जड़ से कटे वृक्ष के समान वेदना (दर्द) के मारे सारी सुध-बुध खो बैठता है। और उसे कुछ भी नहीं सूझ पड़ता।

● **रौख नरक** में 'रुरु', सर्प से भी अधिक क्रूर स्वभाव वाले एक जीव का नाम है। वहाँ कच्चा मांस खाने वाले रुरु इसे मांस के लोभ से कांटते हैं।

● **कुम्भीपाक नरक** में यमदूत मृतक को ले जाकर खौलते हुए तेल में उबालते हैं।

● **कालसूत्र नरक**- इसका घेरा दस हजार योजन है। इसकी भूमि ताँबे की है। इसमें जो तपा हुआ मैदान है, वह ऊपर से सूर्य और नीचे से अग्नि के दाह से जलता रहता है। वहाँ पहुँचाया हुआ पापी जीव भूख-प्यास से व्याकुल हो जाता है। और उसका शरीर बाहर-भीतर से जलने लगता है। उसकी बेचैनी यहां तक बढ़ती है कि वह कभी

बैठता है, कभी लेटता है, कभी छटपटाने लगता है, कभी खड़ा होता है और कभी इधर-उधर दौड़ने लगता है। इस प्रकार नर पशु के शरीर में जितने रोम होते हैं, उतने ही हजार वर्ष तक उसकी (पापी की) यह दुर्गति होती रहती है।

● **असिपत्रवन नरक** में जब मार से बचने के लिए पापी इदार उदार दौड़ने-भागने लगता है, तब उसके सारे अंग तालवन के समान पैने पत्तों से, जिन में दोनों ओर धारें होतीं हैं, टुकड़े टुकड़े होने लगते हैं। तब वह अत्यन्त वेदना (दर्द) से "हाय मैं मरा!" इस प्रकार चिल्लाता हुआ कदम कदम पर मूर्छित (बेहोश) होकर गिरने लगता है। ईश्वर द्वारा भेजे गये धर्म को छोड़कर पाखण्ड मार्ग में चलने से उसे इस प्रकार अपने कुकर्म का फल भोगना पड़ता है।

● **सुकरमुख नरक** में- जब महाबली यमदूत पापी के अंगों को कुचलते हैं तब वह कोल्हू में पेरे जाते हुए गन्नों के समान पीड़ित होकर जिस प्रकार इस लोक (संसार) में उसके सताये हुए निरपराध प्राणी रोते-चिल्लाते थे, उसी प्रकार कभी आर्त स्वर से चिल्लाता और कभी मुर्च्छित हो जाता है।

● **अन्धकूप नरक** - वहाँ के पशु, मृग, पक्षी साँप आदि रेंगने वाले जन्तु, मच्छर, जूँ, खटमल पापी को सब ओर से कांटते हैं इससे उसकी निद्रा और शांति भंग हो जाती है और स्थान न मिलने पर भी वह बेचैनी के कारण उस घोर अन्धकार में इस प्रकार भटकता रहता है जैसे रोगग्रस्त शरीर में जीव छटपटाया करता है।

● **कृमि भोजन** नामक नरक में- एक लाख योजन लंबा-चौड़ा एक कीड़ों का कुण्ड है। उसी में उसे भी कीड़ा (समान) बन कर रहना पड़ता है। और वहाँ कीड़े उसे नोचते हैं और वह कीड़ों को खाता है।

● **सन्देश** नामक नरक में-तपाये हुए लोहे के गोलों से पापी को दागते हैं, और सँडासी (बड़े चिमटे) से उसकी खाल नोचते हैं।

● **तप्तसूर्मि** नामक नरक में पापी को कोड़ों से पीटते हैं तथा पुरुष को तपाये हुए लोहे की स्त्री-मूर्ति से और स्त्री को तपायी हुई पुरुष प्रतिमा से अलिंगन कराते हैं।

● **वज्रकण्टकशात्मली नरक** में- वज्र के समान कठोर काँटों वाले सेमर के वृक्ष पर पापी को चढ़ा कर फिर नीचे की ओर खींचते हैं।

● **वैतरणी नदी में**- यह नदी नरकों की खाई के समान है। उसमें मल, मूत्र, पीप, रक्त, केश, नख, हड्डी, चर्बी माँस और मज्जा आदि गंदी चीज़ें भरी हुई हैं। वहाँ गिरने पर पापी को उस जल के जीव नोचते हैं। किन्तु इससे उनका शरीर नहीं छूटता, पाप के कारण प्राण उसे वहन किये रहते हैं और वह उस दुर्गति को अपनी करनी का फल समझ कर मन ही मन सन्तप्त होते

रहते हैं। मरने के बाद पापी विष्ठा, मूत्र, कफ और मल से भरे हुए पूयोद नामक समुद्र में गिर कर उन अत्यन्त घृणित वस्तुओं को ही खातें हैं।

• **प्राणरोध नरक** में- यमदूत उन्हें लक्ष्य बनाकर बाणों से छेदते हैं।

• **वैशस (विशसन) नरक** में डाल कर वहाँ के अधिकारी बहुत पीड़ा देकर काटते हैं। वीर्य की नदी में डाल कर वीर्य पिलाते हैं।

• **सरमेयादन** नामक नरक में वज्र की सी दातों वाले सात सौ बीस यमदूत कुत्ते बन कर बड़े वेग (तेजी)से पापी को काटने लगते हैं।

• **अवीचिमान नरक** - सौ योजन ऊंचे पहाड़ के शिखर से नीचे को सिर करके पापी को गिराया जाता है। उस नरक की पत्थर की भूमि जल के समान जान पड़ती है। वहाँ गिराए जाने से उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाने पर भी प्राण नहीं निकलते, इसलिए उसे बार बार ऊपर ले जाकर पटका जाता है।

• **अय:पान** नाम के नरक में- पापी की छाती पर पैर रखकर उनके मुँह में आग से गलाया हुआ लोहा डालते हैं।

• **क्षार कर्दम** नाम की नरक में, नीचे को सिर करके गिराया जाता है और वहाँ उसे अनन्त पीड़ाएं भोगना पड़ती हैं।

• **रक्षोगणभोजन** नामक नरक में- कसाइयों के समान कुल्हाड़ी से काट-काट कर उसका लहू पीते हैं।

• **शूलप्रोत** नामक नरक में-शूलों से छेदा जाता है। उस समय जब उन्हें भूख प्यास सताती है और कड़क, बटेर आदि तीखी चोंचों वाले नरक के भयानक पक्षी नोचने लगते हैं तब अपने किये हुए सारे पाप याद आ जाते हैं।

• **दन्द शुक नरक -** वहाँ पाँच पाँच सात-सात मुँह वाले सर्प पापी के समीप आकर उन्हें चूहों की तरह निगल जाते हैं।

• **अवटनिरोधन नरक-** परलोक में यमदूत पापी को विषैली आग के धुँए में घोटते हैं इसलिए इस नरक को अवटनिरोधन कहते हैं।

• **पर्यावर्तन नरक-** जो पापी इस नरक में जाता है, तब उस पापदृष्टि के नेत्रों को गिध, कड़क, काक और बटेर आदि वज्र की सी कठोर चोंचों वाले पक्षी बलपूर्वक निगल लेते हैं।

• **सूची मुख नरक** में- उस अर्थपिशाच पाप आत्मा के सारे अंगों को यमराज के दूत दर्जियों के समान सुंई धागे से सीते हैं। इस तरह हजारों नरक हैं। उनमें कुछ का यहाँ उल्लेख हुआ है। (गरुड़ पुराण अध्याय नं. ३ का सारांश)

कलयुग के दो पाप :-

१) महिलाओं के प्रति हिंसा

२) साम्प्रदायिक दंगे

इन दोनों प्रकार के पाप करने वालों के बारे में गरुड़ पुराण में क्या लिखा है इसका हम अध्ययन करते हैं।

गरुड़ पुराण के अध्याय ४ में इन पापों का वर्णन है। इस अध्याय के कुछ श्लोकों के भावार्थ इस प्रकार हैं।

महिलाओं के प्रति हिंसा के पाप :-

मन्त्र नं. ५ :- ब्राह्मणों का वध करने वाले, शराब पीने वाले, कर्ज दारों का वध करने वाले, महिलाओं का वध करने वाले, माँ के गर्भ में शिशु को मारने वाले (Destroyer of the embryo), और गोपनीय तरीके से पाप करने वाले नरक में जाएंगे।

मन्त्र नं. ६ :- जो गुरु, मंदिरों, महिलाओं और बच्चों का धन चुराते हैं, नरक में जाएंगे।

मन्त्र नं. १४ :- जो माता-पिता, गुरु, शुभचिन्तक और धार्मिक शिक्षा देने वालों को धोखा देते हैं वह नरक में जाएंगे।

मन्त्र नं. १५ :- जो अपनी पवित्र, साथ निभानेवाली, अच्छे वंश और आचरण की पत्नी को गलत तरीके और कारणों से त्यागता है वह नरक में जाएगा।

मन्त्र नं. २२ :- जो सरदार की पत्नी को गलत तरीके से पाना चाहता है। जो दूसरों की पत्नी का अपहरण करता है। जिनके विचार और व्यवहार कुंवारी कन्याओं के प्रति कामातुर (Lustful) हैं। और जो पवित्र महिलाओं पर व्यभिचार का आरोप लगाते हैं, वह नरक में जाएंगे।

मन्त्र नं ३४ :- जो स्वयं तो अपना पेट भरता है, मगर पत्नी, बच्चों, नौकरों और गुरु के प्रति लापरवाही करता है। (उनको पेटभर खाना नहीं देता है) जो पुरखों के लिए दान नहीं करता है वह नरक में जाएगा।

मन्त्र नं. ३०:- जो महिला अपने पति का अपमान करती है (उसके प्रति कृतज्ञ नहीं) और दूसरे पुरुषों की तरफ आकर्षित होती है वह नरक में जाएगी।

साम्प्रदायिक दंगों में होने वाले पापः-

मन्त्र नं. १२:- जिन्हें पाप करना अच्छा लगता है और जो पुण्य के काम से दूर भागते हैं, वह एक यातना से दूर यातना में एक भय से दूसरे भय और एक नरक से दूसरे नरक में जाते रहते हैं।

मन्त्र नं. ९ :- जो धार्मिक स्थल का, अच्छे कर्म वाले पवित्र लोगों का, शिक्षा देने वालों का आदर नहीं करते और धार्मिक ग्रन्थों का अपमान करते हैं, वह नरक में जाएंगे।

मन्त्र नं. १० :- जो लोगों के जीवन में कठिनाई

पैदा करते हैं। जो पीड़ितों को कठिनाई सहन करते देख प्रसन्न होते हैं। जो विनाश के बारे में बोलते और सोचते हैं वह नरक में जाएंगे।

मन्त्र नं. ११ :- जो लोगों की अहिंसा और सत्कर्मों की बातों को नहीं सुनते और न ग्रन्थों के उपदेशों को मानते हैं। जो खुद को सही समझते हैं और अपनी जिद पर अटल रहते हैं। जो मूर्ख हैं मगर खुद को विद्वान समझते हैं। ऐसे लोग नरक में जाएंगे।

मन्त्र नं १६ :- जो अच्छों को बुरा कहते हैं, और उनका अपमान करते हैं वह नरक में जाएंगे।

मन्त्र नं. २८ :- जो झूठी गवाही देते हैं, जो अपना कर्तव्य नहीं निभाते, जो धोखा देकर धन कमाते हैं, जो चोरी करके रोजी रोटी कमाते हैं वह नरक में जाएंगे।

मन्त्र नं. २९ :- जो बड़े पेड़ों को काटते हैं, जो वन और वृक्षों को बर्बाद करते हैं, जो अपना वचन नहीं निभाते और न पवित्र धामों की यात्रा करते हैं, और जो विधवाओं से लैंगिक सम्बन्ध रखते हैं वह नरक में जाएंगे।

मन्त्र नं. ३३ :- जो कूओं और तालाबों को बरबाद करते हैं, धार्मिक स्थानों को बरबाद करते हैं। लोगों के घरों को बरबाद करते हैं वह निश्चित ही नरक में जाएंगे।

मन्त्र नं. ४३ :- जो तलवार और तीर कमान बनाते और अत्याचारियों को बेचते हैं वह नरक में जाएंगे।

मन्त्र नं. ४४ :- जो असहाय को दिलासा नहीं देता। जो सत्य से नफरत करता है। जो निर्दोष को दण्ड देता है, निश्चित ही वह नरक में जाएगा।

मन्त्र नं. ४७ :- जो हर व्यक्ति पर सन्देह करता है। जो उनके लिए निर्दय है। जो हर एक को गुमराह करता है, वह निश्चित ही नरक में जाएगा।

मन्त्र नं. ५० :- जो मित्रों को धोखा देता है, जो मित्रता को तोड़ देता है। जो आशाओं को खत्म कर देता है वह नरक में जाएगा।

मन्त्र नं. ५२ :- जो घरों को जलाते हैं, गांव को जलाते हैं और जंगल को आग लगाते हैं, उन्हें यमदूत पकड़ कर नरक की आग में भून देते हैं।

मन्त्र नं. ५५ :- ऐसे पापी जब प्यासे होकर पानी मांगते हैं तो यमदूत उन्हें पीने का गर्म उबलता तेल देता है।

मन्त्र नं. ५६ :- जब ऐसे पापी उसे पीते हैं तो गिर पढ़ते हैं उनके अन्दर जलते हुए तेल के कारण।

मन्त्र नं. ५७ :- वह किसी तरह फिर खड़े होते हैं, और पीड़ा से दहाढ़ते हैं। फिर उनकी ऐसी दुर्दशा होती है कि न शरीर में शक्ति रहती है न सांस ले पाते हैं और न बोल पाते हैं।

गरुड़ पुराण में और बहुत कुछ लिखा है मगर इस छोटी पुस्तक में वह सब लिखना सम्भव नहीं है।

क्या नरक से निकलना सम्भव है? :-

भगवद्गीता के श्लोक नं १५:४ के अनुसार

नरक से निकलना असम्भव है।

● अथर्ववेद का एक श्लोक इस प्रकार है,

ईश्वर के नियम कोई नहीं बदल सकता।
(अथर्ववेद १८-१-०५)

● ईश्वर ने जिस पाप के लिए जिस नरक का दण्ड निर्धारित किया है तो उस पाप पर उस नरक में उसका दण्ड अवश्य मिलेगा।

● भगवद्गीता के श्लोक नं. ३:११ के अनुसार देवता भी एक ईश्वर की प्रार्थना करते हैं और ईश्वर के आदेश को ही मानते हैं इसलिए उनको प्रसन्न करके भी नरक से मुक्ति नहीं मिलेगी। क्योंकि देवता भी ईश्वर के आदेश के विरुद्ध कुछ नहीं करेंगे।

● गरुड़ पुराण का श्लोक नं. ३:४५ इस प्रकार है;

● यमदूत ने कहा, ''जैसे ईश्वर हमें आदेश देता है वैसे हम पापी को दण्ड देते हैं। पापों को क्षमा केवल ईश्वर करता है। (हम नहीं) (गरुड़ पुराण अध्याय नं. ३, मन्त्र ४५)

● तो यमदूत को प्रसन्न करके भी नरक से मुक्ति नहीं मिलेगी। तो नरक से बचने का एक ही मार्ग है। और वह है कि हम ऐसा काम न करें जिससे ईश्वर हमसे क्रोधित होकर हमको नरक में डाल दे।

● ईश्वर हम सबको सद्बुद्धि दे कि हमेशा सत्कर्म करते रहें।

****

(hespe veb 29 mes keäÙee F&MJej pevce ueslee nw?)

वह सारे विश्व में केवल अपने प्रतिनिधि ही भेजता है। जिन्हें हम अवतार (ईश्वर द्वारा भेजा हुआ) भी कहते हैं।

● और यही मत विद्वान और ज्ञानियों का है pewmes, mJeeceer efJeJeskeâevebo, ieg®veevekeâpeer Deewj efnvot Oece& kesâ ceneve efJeÉeve hebef[le megvojueeue, ßeer] yeuejece efmebie heefjnej, [e@] Jeso ØekeâeMe GheeOÙeeÙe, [e@] heer] SÛe] Ûeewyes, [e@] jcesMe Øemeeo ieie&, hebef[le ogiee& Mebkeâj melÙeeLeea, ßeer. kesâMejer ueeue Yeiele FlÙeeefo~

● गौतम बुद्ध ने सही कहा था कि मैं अकेला बुद्ध नहीं हूँ, मेरे पहले भी बुद्ध आए और मेरे बाद भी आएंगे। यह धर्म की स्थापना करने वाले ईश्वर के प्रतिनीधि ही होते हैं। जिन्हें हम अवतार, बुद्ध, मनु, नबी, रसूल या प्रोफेट कहते हैं और ईश्वर मानवजाति से अपने प्रतिनिधि द्वारा या अवतरित ग्रन्थों द्वारा ही वार्तालाप करता है। इस समय जो हम भगवद्गीता पढ़ रहे हैं यह भी ईश्वर का भेजा हुआ वार्तालाप (Communication) है। बाईबल और कुरआन यह भी अलग अलग समुदाय और अलग अलग युग में भेजा हुआ ईश्वर का आदेश

Price list of Books

(written by Mr. Q.S. Khan)

	Price our Books
1. Law of Success for both the worlds (English)	150/-
2. Safare Hajj (Urdu)	50/-
3. Safare Hajj (Hindi)	50/-
4. Doulatmand Kaise Bane? (Urdu)	100/-
5. Doulatmand Kaise Bane? (Hindi)	100/-
6. How To Prosper the Islamic Way (English)	100/-
7. Teachings of Vedas and Quran (English)	40/-
8. Pavitra Ved Aur Islam Dharm (Hindi)	40/-
9. Pavitra Ved Ani Islam Dharm (Marathi)	40/-
10. Hazrat Muhammed (S) Ka Parichay (Hindi)	40/-
11. Is the moon viewing necessary every month.	50/-
12. Yashachi Gurukilli (Marathi)	150/-
13. Safalta ke Sutra (Hindi)	150/-
14. Pavitra ved Ane Islam Dharm (Gujrati)	40/-
15. Pavitra ved Aur Islam Dharm (Kanada)	40/-
16. Pavitra ved Aur Islam Dharm (Bangali)	40/-
17. Hazrat Mohammed (S) No Parichay (Gujrati)	40/-
18. Hazrat Mohammed Ka (S) Parichay (Bangali)	40/-
19. Hazrat Mohammed Yancha (S) Parichay (Marathi)	40/-
20. Bhagvad Geeta Aur Islami Talimat (Urdu)	40/-
21. Bhagvad Geeta main Ishwar ke Aadesh (Hindi)	40/-
22. Hazrat Muhammed Mustafa ke Noor ki haquiqat	50/-
23. Design and Manufacturing of Hydraulic Presses	2500/-

- **50% discount on price for Bulk purchase and for book dealers.**
- **We can send single book also from our publication office by courier or post. For this you have to sms your address and book required on our mobile no. 9892064026, and deposit book cost and courier and post charges in our bank account.**
- **Our Bank detail is as follow:-**

Tanveer Publication
Account No-: 60191948538
Bank of Maharashtra, Nahur branch. Mumbai
IFSC Code :- MAHB0001503

Books Written By Mr. Q.S. Khan

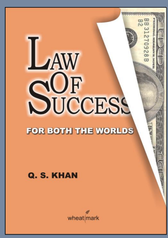

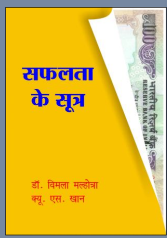

Hindi Translation of
"Law of success for both the worlds"
By Dr. Vimla Malhotra

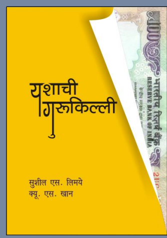

Marathi Translation of
"Law of success for both the worlds"
By Mr. Sushil S. Limye

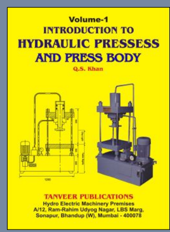

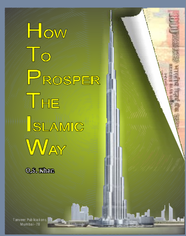

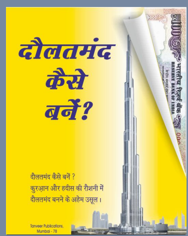

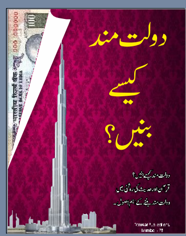

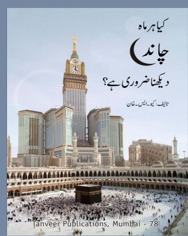

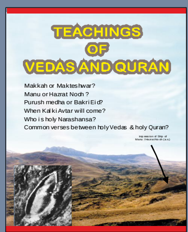

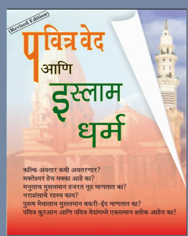

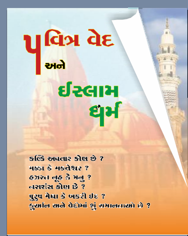

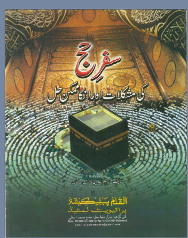

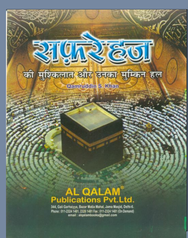

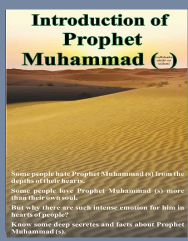

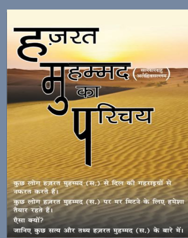

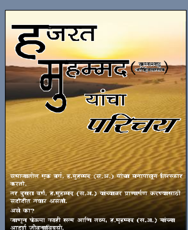

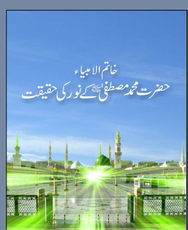

TANVEER PUBLICATION
Hydro Electric Machinery Premises, A/13, Ram-Rahim Udyog Nagar, Bus stop Lane,
L.B.S. Road,Sonapur, Bhandup (w) Mumbai - 400078.
Email: hydelect@vsnl.com / hydelect@mtnl.net.in
Website: www.tanveerpublication.com, www.freeeducation.co.in